स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

अक्टूबर 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

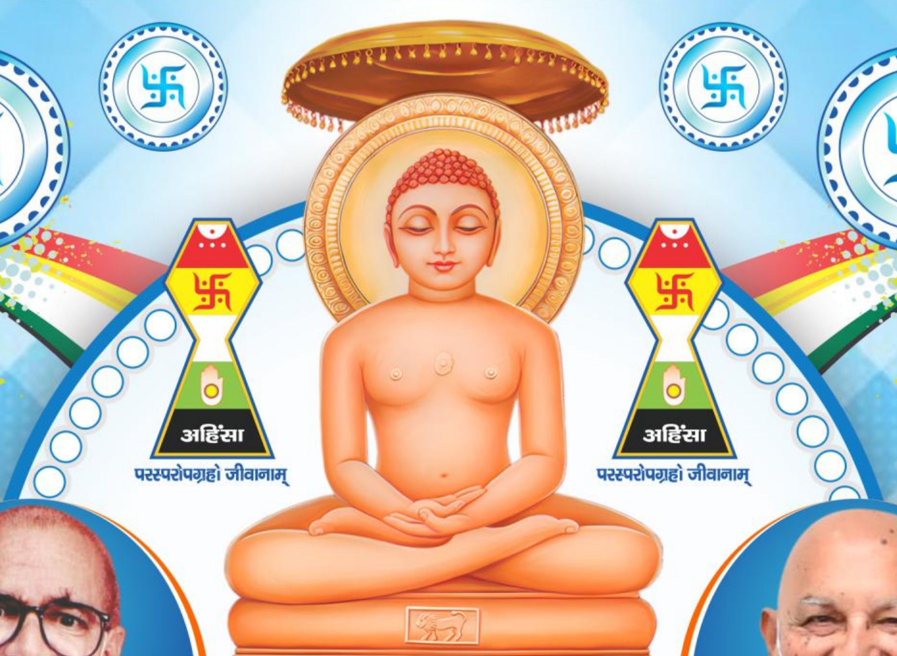

अहिंसा एवं करूणा के अवतार
24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के

2550वें निर्वाण वर्ष सम्पूर्ति

अमृत पुरुष, साहित्य मनीषी, श्रमण संघ के तृतीय आचार्य सम्राट

पूज्य गुरुदेव श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज सा.

94वाँ जन्मोत्सव - कार्तिक कृष्णा तेरस, वि.सं. 1988, 8 नवम्बर 1931

तथा आनन्दकुल कमल दिवाकर, महाश्रमण, महाराष्ट्र प्रवर्तक

पूज्य गुरुदेव श्री कुन्दनऋषि जी महाराज सा.

90वाँ जन्मोत्सव - 11 नवम्बर 1935 पर हृदय की आस्था के साथ

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से

कोटि - कोटि वंदन नमन

सूरत : श्रमण संघीय आचार्य भंगवत पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा. के जन्मोत्सव पर दर्शन प्राप्त कर मार्गदर्शन लेते जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मंडल चेयरमैन श्री रमणलालजी लुकंड, कार्याध्यक्ष श्री अशोकजी मेहता, महामंत्री श्री अतुलजी जैन श्री हुकमीचंदजी कोठारी, श्री प्यारचंदजी कोठारी, श्री सुनीलजी बाफना, श्री जयंतीजी कुकड़ा, श्री जसवंतजी जैन श्री नेमीचंदजी धाकड़, श्री वीरसा जी सिंघवी आदि।

चेन्नई : युवाचार्य भंगवत के 58वें जन्मोत्सव के शुभ प्रसंग पर चतुर्विध संघ की उपस्थिति में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति ।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 10 | अक्टूबर - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S.S.JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10
भगवान महावीर की...	- आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	11-12
आचारांग सूत्र	- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	13
संपूर्ण सफलता का आधार...	- उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा.	14-16
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	17-18
प्रवर्तक श्री मोहनलालजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	19-20
तत्त्वार्थ सूत्र	- प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	21-22
मेरे आराध्य गुरुदेव ...	- पू. श्री आलोकऋषिजी म.सा.	23
श्री वर्धमान भक्तामर स्तोत्र	- आचार्य श्री घासीलालजी म.सा.	24-25
प्रवर्तक श्री अमरमुनिजी म.सा. का जीवन परिचय एवं प्राप्त संदेश		28-32
समय को जानो ...	- साध्वी युगल निधि-कृपा श्री जी म.सा.	33-34
धर्मवीर लोकाशाह ...	- डॉ. श्री दिलीप धींग, चेन्नई	35-37
माँ! मुझे महावीर बना दे	- श्री अंकुर जैन, दिल्ली	38-39
निर्ग्रन्थ साधु ...	- डॉ. श्री बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर	40-41
सबके लिए हो दीपावली...	- श्री अरुण कुमार जैन, इन्दौर	41
अक्टूबर माह में वैय्यावच्च योजना द्वारा किये गये कार्यों की रिपोर्ट		
समाचार प्रकाश		43-50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108
07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर 99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे 88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद 93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर 98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर 98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर 98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर 98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

E-mail: ajvk1973@gmail.com

– अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री – जैन कॉन्फ्रेंस

जैन कॉन्फ्रेंस के आदरणीय,

सम्माननीय बंधुओं एवं बहनों, सादर जय जिनेन्द्र !

विगत् दो वर्षों के कार्यकाल की पूर्णाहूति होने जा रही है। जैन कॉन्फ्रेंस अपने नये नेतृत्व के लिए तैयार हो चुकी है। अनेक बाधाओं को पार करते हुए आगामी 05 जनवरी 2025 को चुनाव होना तय हुआ है। मैं विनम्रतापूर्वक आपको अपनी चर्चा में आमंत्रित करते हुए कहना चाहता हूँ कि जैन कॉन्फ्रेंस एक परिवार की तरह सारे भारतवर्ष में अपनी उपस्थिति से सेवा, संवाद और सहमति का वातावरण बनाने में आज तक सफल रही है।

हमारी यह ऐतिहासिक संस्था 118 वर्षों से सामाजिक संगठन, परस्पर बातचीत और हमारे त्यागी, तपस्वी महान आत्माओं की सेवा में रत रही है। इस प्रकार जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्विध संघ का प्रतिनिधित्व करती है। हमारी संस्था का लक्ष्य ही श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा और जैन धर्म दर्शन को लगातार जन-जन तक पहुंचाना है।

वर्तमान में भी हमारा यही लक्ष्य है और भविष्य में भी हमारा यही लक्ष्य रहेगा। इस कार्य में हम सब समान रूप से सहभागी है। हमारा सबका कर्त्तव्य है कि जैन कॉन्फ्रेंस को मजबूती प्रदान करें। **हम यथाशक्ति जहाँ भी, जो भी सहयोग जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण संघ के हित में हो सकता है, उसे अपना कर्त्तव्य मानकर अवश्य पूर्ण करें।**

क्योंकि हम यह भी देखते है कि अनेक गैर जवाबदार लोग श्रमण संघ और पूज्य साधु-साध्वियों के संदर्भ में ऐसी टिप्पणियाँ कर देते हैं, जिससे हमारा मानस ही उत्तेजित हो जाता है, लेकिन यदि हम भी उन्हीं की तरह, उन्हीं की भाषा में आलोचना का उत्तर आलोचना से देंगे, निन्दा का उत्तर निन्दा से देंगे तो हममें और उनमें क्या फर्क रह जाएगा। अतः संयमपूर्वक बात करें, तर्क से बात करें।

आने वाली दीपावली आपके जीवन में उल्लास और उत्साह भरें !

कुछ ही दिनों बाद भारतवर्ष का महान पर्व दीपावली एवं भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण कल्याणक का पर्व हमारे समक्ष आ रहा है। मैं इस आलेख के माध्यम से सभी को इस महापर्व की अग्रिम बधाई देते हुए सभी के जीवन में हर्षोल्लास और वैभव की कामना करता हूँ। **यहाँ यह भी कहना चाहूंगा कि यदि हम समाज के अभावग्रस्त लोगों को इस अवसर पर यथाशक्ति सहायता कर सकें, उन्हें सबल बनाने में कोई कदम उठा सकें तो अवश्य उठाएं,** क्योंकि दीपक हमारे घर में ही जले और हमारे आस-पास के ही लोगों के घरों में अंधेरा बना रहे तो पर्व का स्वाद, पर्व की रंगत, पर्व की चमक फीकी पड़ सकती है। इसीलिए मैं कहना चाहता हूँ कि हम अभावग्रस्त लोगों को सहयोग करने में आगे बढ़कर योगदान देने का संकल्प लें।

साथ ही यह भी कहना चाहूंगा कि श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली का आगामी नेतृत्व के लिए चुनाव या चयन जो भी होना तय हुआ है, इस चुनाव में आप सब जिसे पसंद करें उसके पक्ष में अपनी राय रखते हुए अगर मतदान होता है तो योग्य व्यक्ति को चुने। घर से निकलकर निर्धारित केन्द्रों पर जाकर अपना मतदान अवश्य करें

वहीं मतदान में हर प्रकार से शांति, सद्भाव और मैत्री का वातावरण बनाए रखकर हम अपनी संस्था का और अपने जैन होने का गौरव अवश्य बनाएं रखें। चुनाव हो या चयन यह केवल व्यवस्था का अंग है। इस व्यवस्था को यदि हम शालीन ढ़ंग से संपन्न करने में सफल रहे तो हमारे लिए हार्दिक संतोष का विषय रहेगा। मैं आशा करता हूँ कि आपके जीवन में दीपावली का दीप आशा बनकर, उत्साह बनकर जगमगाएं और आपके जीवन को चारों ओर से लब्धि, उपलब्धि से संपन्न करें।

❖❖

अध्यक्षीय उद्गार

हम लाएं है तूफान से कश्ती निकाल के !

E-mail : rjachallani@gmail.com

- आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

सर्वप्रथम भारत सरकार और हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी जी को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सकल जैन समाज की मांग को पूर्ण करते हुए, जैन धर्म दर्शन की आधारभूत भाषा प्राकृत को **'शास्त्रीय भाषा'** का दर्जा प्रदान किया है।

ये एक प्राकृतिक चाहत थी, हमारे जैनों की क्योंकि हमारे शास्त्र, हमारे दर्शन की प्रस्तुति प्राकृत एवं अर्ध माग्धी, शौर सेनी भाषाओं में है, अतः भारत सरकार का यह कदम स्वागतेय है, अभिनंदनीय है।

अब आता हूँ हमारी एकमात्र अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन परंपरा की संस्था एवं श्रमण संघ की मातृ संस्था जैन कॉन्फ्रेंस का चुनाव कार्यकाल 2025-27 आगामी 5 जनवरी 2025 को होना निश्चित हो गया है। इस व्यवस्थागत कार्य में कतिपय बंधुओं ने बेशक कुछ नकारात्मक भूमिका अदा की, लेकिन सम्पूर्ण समाज के भारी बहुमत की भावना को विजय प्राप्त हुई। यह विजय असाधारण है, लेकिन विनम्रता से कहूँगा कि यह सत्य की जीत है, ये जीत उस सामाजिक मंगल भाव की जीत भी है जो समाज को प्रगतिशील, विकासशील और आगे बढ़ता हुआ देखना चाहती है।

मुझे खुशी इस बात की है कि भले ही हमारे कदमों में कोर्ट कचहरी ही नहीं और भी कई प्रकार की बाधाएं खड़ी की गई, हमारी टीम पर अनेक अप्रमाणित आरोप भी लगाए गए और बदनाम करने की भी पूरी कोशिश की गई। ये कोशिश इस हद तक की गई कि संवैधानिक संकट तक खड़ा किया गया। मगर जैसा कि कहा जाता है, सत्य को झुठलाने की कोशिश की जा सकती है मगर सत्य को पराजित कर पाना असंभव ही होता है। अतः आईये, एक मोर्चा तो फतह हुआ अब हम प्रयास करें कि सभी लोग लोकतंत्र की जन भावना और स्पष्ट संवैधानिक व्यवस्था को बनाएं रखने में एकजुट हों ! याद रहे भाईयों में कार्यविधि को लेकर मतभेद हो सकता है, मगर जैन कॉन्फ्रेंस जैसे विशाल अखिल भारतीय संस्थान में समन्वय, संवाद और एकता को बनाए रखना, हम सबका कर्त्तव्य है। हम जहाँ अहिंसा, मैत्री और समभाव की बात करते हैं तो हमें हमारे व्यवहार और आचरण से भी तो इसे सिद्ध करना होगा।

मेरी विनम्र प्रार्थना है कि जैन कॉन्फ्रेंस एक धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक संस्था है, इसकी छवि को सुन्दर बनाना, बनाए रखना हम सबका नैतिक दायित्व है। इस दायित्व को पूर्ण करना हम सबका प्रथम कर्त्तव्य है।

सत्र संचालन के समय हमारे जो भी मतभेद रहे हों, आलोचना, समालोचना की गई हो, उसे अब दोहराने का समय नहीं रहा। हम परस्पर एक है, हमारे लक्ष्य एक है, तो हम सामुहिक रूप से कार्य करें और हमारे समाज और आराध्य संगठन श्रमण संघ को यशस्वी बनाने का कार्य करें।

हम यह न भूले कि कितने जप-तप, त्याग, परिश्रम और परस्पर सहयोग से जैन कॉन्फ्रेंस का निर्माण हुआ है। ये ऐतिहासिक घटनाक्रम हमारे इतिहास का गौरवशाली पृष्ठ है। इसके गौरव को बनाएं रखने में हम सभी मिलकर सहयोग करें। आने वाली 5 जनवरी 2025 को हम एक नई सुबह में प्रवेश करें और गुगुनाएं कि - **हम लाएं हैं तूफान से कश्ती निकाल के !**

यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि समाज में विचारधारा और कार्यशैली का अंतर हो सकता है, **लेकिन हमारी संस्था के हित और हमारे समाज के हित को लेकर किसी प्रकार का मतभेद न तो होना चाहिए न ही होने का प्रयास कोई करें। यहाँ व्यक्तिगत रूप से अपनी महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने की कोई गुंजाईश नहीं है, क्योंकि यह संस्था हमारे समाज की प्रतिनिधि संस्था है और इसका सम्मान हमसे कहीं ज्यादा बढ़कर है। इन्हीं भावनाओं के साथ आप सभी को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!**

भगवान महावीर की निर्वाण यात्रा

- आचार्य सम्राट्, पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

भगवान महावीर का 2600वाँ निर्वाण कल्याणक वर्ष मनाया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति दीपावली पर्व पर होगी। अनादिकाल से जीव ने चार गति की यात्रा की। संसार यात्रा से वीतराग यात्रा कब बनती है, जब जीव की दृष्टि बदलती है। जीव के पास अनन्त गुण सम्पदा है, परन्तु दृष्टि भ्रम के कारण वह पर द्रव्य को अपना मान लेता है इसे ही जैन दर्शन में मिथ्या दर्शन कहा है। जीव ने अठारह पापों में मात्र एक पाप किया, जिसके कारण जीव कोई क्रिया करे या न करे, मिथ्या मान्यता के कारण उसे चौबीस घंटे कर्म बंधन लगते हैं। उन्हीं कर्म बंधनों के कारण जीव चार गति चौरासी लाख जीव योनि में यात्रा कर रहा है।

प्रभु महावीर के जीव की ये मिथ्या मान्यता नयसार के भव में टूटी, जब उन्हें संतों का सत्संग मिला, संतों को आहार बहराना निमित्त बना, परन्तु जीव का उपादान तैयार था, सन्तों ने उन्हें जड़ और जीव का भेद विज्ञान करवाया। जीव और अजीव का ज्ञान करवाया इससे उन्हें स्वरूप का बोध हुआ। इस सत्य को जानकर उन्होंने इस ज्ञान में परिपक्वता लाने का पुरुषार्थ किया।

भगवान महावीर की 27 भवों की यात्रा श्री कल्पसूत्र में वर्णित है। अनादि काल की यात्रा मिटाने में सर्वप्रथम मिथ्या धारणा व मिथ्यात्व को क्षय कर सत्य का बोध पाना आवश्यक है।

जो जीव स्वरूप का बोध प्राप्त कर, स्वरूप का ध्यान करता है, पर पुद्गल का ध्यान छोड़ देता है, उसकी यात्रा संसार से वीतरागता की ओर प्रारंभ होती है।

सम्यक्त्व की साधना मोक्ष महल की नींव है। स्वरूप के ध्यान से पुद्गल का ध्यान छूटता है। अर्थात् आर्त्त-रौद्र ध्यान छूटता है और जीव धर्म व शुक्ल ध्यान की ओर बढ़ता है। जीव का चिंतन मनन व स्वभाव की साधना का अभ्यास, जीव के लिए किए हुए सभी धार्मिक अनुष्ठान, धर्म की क्रियाएं-धर्म ध्यान है, परन्तु आवश्यक है उसमें जीव केन्द्र बिन्दू रहे और जीव जब मन के पार जाता है तो वह शुक्ल-ध्यान से निर्विचार-निर्विकल्प अवस्था प्राप्त करता है।

भगवान महावीर के जीव ने 27 भवों की यात्रा में जीव को केन्द्र बिन्दू बनाया, अनादि के संसार को सीमित किया, राग से वैराग्य की ओर बढ़े, भोग से योग की ओर बढ़े। पुद्गलों में सुख है इस मिथ्या मान्यता का त्याग कर, सुख निज आत्मा में है इसका शोध किया। साता व सुख के अन्तर को समझा, साता पुण्य से प्राप्त होती है। सुख जीव में स्थित रहने से प्राप्त होता है इस सत्य को जीवन में आत्मसात कर उन्होंने पुण्य से प्राप्त सभी अनुकूलताओं का त्याग कर एकान्त व एकत्व की साधना हेतु वे जंगल में चले गए, अनादि के मिथ्यात्व को वे क्षय कर चुके थे। अक्षय सम्यक्त्व के वे धारक थे, उन्होंने मोह कर्म को क्षय करने का पुरुषार्थ किया। मोह का प्रथम स्थान अपनी देह है।

साधक को आत्मार्थी बन वीतरागी बनना है, उसे प्रभु महावीर की साधना का अनुकरण करना होगा। प्रभु महावीर ने नयसार के भव में सम्यक्त्व को प्राप्त कर उसमें परिपक्वता प्राप्त की और मोह कर्म को क्षय करते हुए, यात्रा में आगे बढ़े। अंतिम भव में, वर्धमान से महावीर की यात्रा में, गर्भ से लेकर दीक्षा तक का उनका जीवन हमें प्रेरणा देता है कि मिथ्यात्व व मोह से भरे संसार में कैसे निर्लेप रहना चाहिए। उनके 30 वर्ष का गृहस्थवास प्रेरक है। राज्य वैभव सत्ता के मध्य कैसे निर्लेप रहें, अर्थात् उन्होंने अनुकूलताओं व राज्य वैभव में रस न लेकर त्याग, वैराग्यपूर्ण जीवन जीया। उन्होंने अरिहंत वाणी के इस वाक्य को चरितार्थ किया कि **"मैं जीव अकेला हूँ, समृद्ध हूँ, सम्पन्न हूँ, मुझे इस जग से कुछ नहीं चाहिए, एक पुद्गल पर भी मुझ जीव तत्व का अधिकार नहीं हैं, मेरा कोई नहीं है अर्थात् अनंत जीवों में से कोई जीव मेरा नहीं हैं।"** इस एकत्व व अन्यत्व भाव को गृहस्थवास में जीने का उन्होंने पुरुषार्थ किया व पूर्ण रूप से वैराग्यमय जीवन जीया। हम सभी साधकों को उनके गृहस्थ जीवन में वैराग्य व निर्लेपता की प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने पुण्य से मिली हुई, सभी सुख-सुविधाओं व अनुकूलताओं का त्याग किया।

जे य कंते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठिकुव्वइ ।

साहीणे चयइ भोए, से हू चाइ त्तिवुच्चइ।।

- श्री दशवैकालिक सूत्र २/३

जे मनोहर और प्रिय भोगों के उपलब्ध होने पर भी स्वाधीनतापूर्वक उन्हें पीठ दिखा देता है, त्याग देता है वस्तुतः वही सच्चा त्यागी है। प्रभु महावीर ने जो कान्त प्रिय भोग उपलब्ध थे उनका त्याग कर दिया और वे सच्चे त्यागी बने। मोह के प्रथम स्थान शरीर को पराया मानकर उसके मोह को क्षय कर, देव, मनुष्य व तिर्यंच के उपसर्गो को स्वभाव में रहकर उन्होंने सहन किया। विभाव में बंधे अनंतकाल के घाती कर्मों को क्षय कर केवल ज्ञान प्रकट कर लिया।

केवल ज्ञान के पश्चात् 30 वर्ष तक आयुष्य कर्म के अधीन तीर्थ की स्थापना कर **"तिन्नाणं तारयाणं"** की भूमिका में रहे। वे आयुष्य कर्म पूर्ण होने पर कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन निर्वाण को प्राप्त हुए।

प्रभु महावीर के 2600वें निर्वाण कल्याणक वर्ष पर प्रत्येक साधक उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करें। अपनी चार गति की यात्रा समाप्त करने के लिए, मिथ्यात्व को क्षय कर क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थरत हो जाएं। सम्यक्त्व के बल पर मोह कर्म को क्षय कर केवल ज्ञान व निर्वाण को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें। णमो सिद्धाणं में जो स्थित है वे सभी सिद्ध भगवंत जैसा हमें बनना है। सभी आत्म ध्यान साधकों को अरिहंत परमात्मा की कृपा से आत्म-ध्यान द्वारा शुक्ल ध्यान की विधि प्राप्त हुई है, उसका प्रयोग कर अपनी यात्रा त्याग, वैराग्य व वीतरागता की ओर बढ़ायें व निर्वाण को प्राप्त करने का पुरुषार्थ करें तो प्रभु महावीर का निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक होगा। आप सबके जीवन में प्रभु की भांति मिथ्यात्व का अनंत अंधकार क्षय होकर सम्यक्त्व का दीप प्रज्ज्वलित हो यही भगवान महावीर के 2600वें निर्वाण कल्याणक वर्ष एवं दीपावली पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं। ❖❖

प्राकृत सरीखी भाषाई धरोहरों के संवर्धन के लिए केन्द्र कटिबद्ध

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान बोले, प्राकृत सरीखी भाषाई धरोहरों के संवर्धन के लिए केन्द्र सरकार कटिबद्ध है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में हुई यूनियन कैबिनेट की बैठक में प्राकृत, पाली, मराठी, बंगला और असमिया सरीखी भाषा को हाल ही में शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा दिया गया है। केन्द्र सरकार के इस फैसले से गदगद पाँचों भाषाओं के प्रकांड विद्वानों ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान से शिष्टाचार भेट करके आभार व्यक्त किया है। शिक्षा मंत्री से मिलने वालों में प्राकृत भाषा के मूर्धन्य विद्वान और तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के जैन स्टडीज के प्रोफेसर चेयर प्रो. धर्मचंद जैन भी शामिल रहे हैं। इनके अलावा भारतीय भाषा समिति के चेयरमैन पदमश्री चमू कृष्ण शास्त्री, यूजीसी चेयरमैन एम. जगदीश कुमार, प्राकृत भाषा के विद्वान-वाराणसी के प्रो. फूलचंद जैन, दिल्ली के प्रो. विजय कुमार जैन, बैंगलूरू से डॉ. तृप्ति जैन, अहमदाबाद से डॉ. शोभना शाह की भी उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

विजिट के दौरान प्राकृत और पाली भाषा के उत्थान, आगामी योजनाओं के कार्यों पर शिक्षा मंत्री प्रधान के साथ विस्तृत वार्ता हुई। टीएमयू के प्रो. धर्मचंद जैन सहित विद्वानों ने प्राकृत और पाली भाषा का साहित्य भी शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान को भेंट किया। उल्लेखनीय है कि शिक्षा मंत्री से सार्थ संवाद करने वालों में पांचों भाषाओं से पांच-पांच भाषाविद् शामिल रहे। इस मौके पर शिक्षामंत्री ने कहा कि सरकार एनईपी-२०२० के उद्देश्यों के अनुरूप देश की भाषाई धरोहर को मनाने, सम्मानित करने और संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने मातृ भाषाओं में सीखने की प्रतिबद्धता और सभी भारतीय भाषाओं पर समान ध्यान देने के संग-संग बहुभाषावाद को बढ़ावा देने पर जोर दिया। ❖❖

(गतांक से आगे ...) *साभार :- !! आचारांग सूत्र - 1 !!*

'सत्थपरिण्णा' पढमं अज्झयणं' : पढमो उद्देसओ

'शस्त्रपरिज्ञा' प्रथम अध्ययन : प्रथम उद्देशक

- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.

मैंने क्रिया की थी, इस पद में अतीतकाल के नो भेदों का संकलन किया है- जैसे, क्रिया की थी, कारवाई थी, करते हुए का अनुमोदन किया था, मन से, वचन से, कर्म से। 3 x 3 = 9।

इसी प्रकार वर्तमानपद 'करवाता हूँ' में करता हूँ, करते हुए का अनुमोदन करता हूँ, तथा भविष्यपद क्रिया करूँगा, करवाऊँगा, करते हुए अनुमोदन करूँगा, मन से, वचन से, कर्म से, ये नव-नव भंग बनाये जा सकते हैं। इस प्रकार तीन काल के, क्रिया के 27 विकल्प हो जाते हैं। ये 27 विकल्प ही कर्म-समारंभ/हिंसा के निमित्त हैं, इन्हें सम्यक् प्रकार से जान लेने पर क्रिया का स्वरूप जान लिया जाता है।[1]

क्रिया का स्वरूप जान लेने पर ही उसका त्याग किया जा सकता है। क्रिया संसार का कारण है, और अक्रिया मोक्ष का। **अकिरिया सिद्धी** [2] - आगम वचन का भाव यही है कि क्रिया/आश्रव का निरोध होने पर ही मोक्ष होता है।

6. अपरिण्णायकम्मे खलु अयं पुरिसे जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणु-संचरति, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति, अणेगरूवाओ जोणीओ संधेति, विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेयति।

7. तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेदिता।

इमसस चेव जीवियस्य परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए [3] दुक्खपडिघातहेतुं।

6. यह पुरुष, जो अपरिज्ञातकर्मा है (क्रिया के स्वरूप से अनभिज्ञ है, इसलिए उसका अत्यागी है) वह इन दिशाओं व अनुदिशाओं में अनुसंचरण/परिभ्रमण करता है। अपने कृत-कर्मों के साथ सब दिशाओं/अनुदिशाओं में जाता है। अनेक प्रकार की जीव-योनियों को प्राप्त होता है। वहाँ विविध प्रकार के स्पर्शों [4] (सुख-दुख के आघातों) का अनुभव करता है।

7. इस सम्बन्ध में (कर्म-बन्धन के कारणों के विषय में) भगवान् ने परिज्ञा [1] विवेक का उपदेश किया है।

(अनेक मनुष्य इन आठ हेतुओं से कर्मसंमारभ-हिंसा करते हैं)

1. अपने इस जीवन के लिए,
2. प्रशंसा व यश के लिए,
3. सम्मान की प्राप्ति के लिए,
4. पूजा आदि पाने के लिए,
5. जन्म-सन्तान आदि के जन्म पर, अथवा स्वयं के जन्म निमित्त से,
6. मरण-मृत्यु सम्बन्धी कारणों व प्रसंगों पर,
7. मुक्ति के प्रेरणा या लालस से, (अथवा जन्म-मरण से मुक्ति पाने की इच्छा से)
8. दुःख के प्रतिकार हेतु-रोग, आतंक, उपद्रव आदि मिटाने के लिए।

8. एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा परिजाणियव्वा भवंति।

9. जस्सेते लोगंसि कम्मसमारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णायकम्मे त्ति बेमि।

।। पढमो उद्देसओ समत्तो ।।

8. लोक में (उक्त हेतुओ से होने वाले) ये सब कर्मसमारंभ/हिंसा के हेतु जानने योग्य और त्यागने योग्य होते हैं।

9. लोक में ये जो कर्मसमारंभ/हिंसा के हेतु हैं, इन्हें जो जान लेता है (और त्याग देता है) वही परिज्ञात कर्मा [1] मुनि होता है।

- ऐसा मैं कहता हूँ

।। प्रथम उद्देशक समाप्त ।।

अगर तुम सूरज की तरह
चमकना चाहते हो तो,
सूरज की तरह जलना सीखो ।

संपूर्ण सफलता का आधार : पुरुषार्थ

- उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'

महानुभावो,

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मुझे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त हो। यहाँ पर ध्यान देनें की आवश्यकता है कि केवल चाहने से या सोचने मात्र से सफलता प्राप्त नहीं होती। श्रमण भगवान महावीर ने इसी दृष्टिकोण से कहा है कि 'यदि आप सफल होना चाहते हैं तो पुरुषार्थ करते रहो। पवित्र प्रवृत्तियों में थोड़ा सा भी प्रमाद मत करो। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो, निरंतर सक्रिय रहो, क्योंकि निष्क्रियता अभिशाप है जबकि सक्रियता वरदान है।

आज अधिकांश व्यक्तियों के जीवन में जो असफलता दिखाई देती है, इसके मूल में निराशा और निष्क्रियता ही प्रमुख कारण है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर क्षमताएं विद्यमान हैं, आवश्यकता इस बात की है कि क्षमताओं का समुचित दिशाओं में प्रयोग हो। आत्मशक्तियां असीम हैं। आत्मशक्तियों की साधना से जुड़कर उनका उपयोग करनें वाला साधक क्षण मात्र के कर्मों के बंधन को तोड़कर मुक्त बन जाता है। निगोद से निकलकर क्षण मात्र में पुरुषार्थी आत्मा तेरहवें गुणस्थान तक का स्पर्श कर लेता है। पुरुषार्थ से रहित होकर जो जन बढ़ जाते हैं वे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों में पिछड़ जाते हैं। मैं एक प्रसंग को अक्सर सुनाया करता हूँ। हम लोग सरवाड़ से विहार करके केकड़ी की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक गाँव है अजगरा वहाँ एक वृक्ष की छांव में कुछ देर के लिए हम विश्राम की दृष्टि से बैठ गए। वहाँ पर रास्ते चलते हुए कुछ राहगीर भी इधर-उधर से आकर उस वृक्ष की छाया में सुस्तानें की दृष्टि से बैठ गए।

मैंने देखा कि वे लोग आपस में कुछ बातें कर रहे थे। उनमें से किसी एक ने किसी एक से पूछा- 'कहो कैसा चल रहा है? उसने कहा- 'करना क्या है, बस जो घट रहा है, उसे पूरा कर रहे हैं।' मैंने सुना तो मुझे विचार आए बिना नहीं रहा। अरे! यह भी कैसा जीवन है? जो पुण्योदय से प्राप्त हुआ है, ऐसे जीवन को यूं ही निराश और निष्क्रिय होकर पूरा करने का क्या अर्थ है? मैं सोचता हूँ यह उस अकेले भाई की बात नहीं है ऐसे अनेकों जन हैं। जो जीवन को यूं ही बिता रहे हैं। पर यह महत्वपूर्ण जीवन के साथ अन्याय है। प्रस्तुत चर्चा में पुराने एक कवि की लिखी एक पंक्ति का स्मरण हो आया है -

तुम पुरुष हो अतः पुरुषार्थ करो उठो !

सचमुच पुरुष होने का गौरव इसी में सन्निहित है कि 'पुरुष समुचित पुरुषार्थ करते हुए जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़े।' पुरुष शब्द बहुत ही प्रेरणास्पद शब्द है। पुरुष **पुर** - आगे **उष** - तेज अर्थात् आगे तेज फैलाना अभिप्राय स्पष्ट है निराशा के अंधकार में निष्क्रिय होकर समय को नष्ट मत करो पुरुषार्थी बनकर कदम-कदम पर प्रकाश फैलाते हुए चलो तभी सफलता पुरुषार्थी व्यक्ति के चरणों को चूमती है।

रामायण का एक प्रसंग है। एक बार रावण पंचवटी से सीता का अपहरण करके लंका में ले गया। इस दुर्घटना से राम सहित उनके सभी भक्त चिंतित थे। भक्तजनों ने सक्रियतापूर्वक प्रयास करके पता लगा लिया कि सीता लंका में है। निर्णय लिया गया कि बिना किसी विलम्ब के हमें अब लंका की ओर प्रस्थान करना चाहिए। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सहज रूप से सुग्रीव से पूछ लिया। सुग्रीव लंका तो चलना ही है पर मुझे यह बताओ कि - 'लंका की दूरी कितनी है।' सुग्रीव ने मुस्कराते हुए कहा - प्रभु! लंका आलसी व्यक्तियों के लिए दूर हो सकती है पर जो पुरुषार्थी उद्यमी है उनके लिए थोड़ी सी भी दूर नहीं है। इस संबंध में राजस्थानी भाषा का एक दोहा प्रसिद्ध है-

राम कहे सुग्रीव से, लंका कितनी दूर ।
आलसिया अलगी घणी, उदमिया हजूर ।।

कुल मिलाकर तथ्य यह है कि पुरुषार्थीजनों के लिए संसार में कुछ भी कठिन नहीं है। भौतिक दृष्टि से तो आप पुरुषार्थ करते ही हैं, आवश्यकता यह है कि आध्यात्मिक दृष्टि से पुरुषार्थ करके जीवन को जन्म जरा और मृत्यु दुःख से बचाया जाए। इसी दृष्टि से शासनपति महाश्रमण भगवान महावीर ने प्रमाद दशा में सुषुप्त चेतनाओं को जागृति को

संदेश प्रदान करते हुए बार-बार कहा -

"उट्ठिए! नो पमायए।"

उठो, जागो! प्रमाद मत करो। प्रमाद दशा में ग्रसित व्यक्ति के पास जीवन की दशा नहीं होती। वह दिशाहीन व्यक्ति संसार में सबसे बड़ा दीन होता है।

प्रमाद मत करो, इस छोटे से सूत्र में जो भाव छिपा है वह संकेत करता है कि "जीवनोत्कर्ष में सहायक श्रेष्ठ प्रवृत्तियों से सक्रियतापूर्वक जुड़े रहो। श्रेष्ठ प्रवृत्तियों से संलग्नता में किया गया एक पल का प्रमाद भी अनन्त संसार अर्थात् अनन्त दुःखों की अभिवृद्धि करता है।" निरन्तर श्रेष्ठताओं की समुपासना यह भगवान महावीर के चिन्तन में सम्यक् पुरुषार्थ है। यह सम्यक् सफलता का मूलभूत आधार है। शास्त्र वचन है-

"अपमत्तस्स भयं नत्थि।"

अर्थात् अप्रमत को किसी भी प्रकार का भय नहीं है। भय मुक्त सफल जीवन के लिए श्रमण भगवान महावीर ने बार-बार प्रेरणाएँ प्रदान की है - गणधर गौतम भगवान महावीर के प्रधान शिष्य थे और पूर्ण सजगता के साथ जीवन पथ पर गतिशील रहने वाले सत्पुरुष थे पर प्रभु जानते थे कि जीवन में कई ऐसे अवसर आते हैं कि व्यक्ति मोह मूढ़ता के कारण उनसे प्रेरित संचालित होकर भटक जाता है। व्यक्ति के जीवन में प्रमाद के कारण किसी तरह का भटकाव, किसी तरह की उलझन नहीं आए इस दृष्टि से, अनित्य जीवन का स्वरूप स्पष्ट करते हुए गौतम गणधर को माध्यम बनाकर जन-जन को सजग रहने का संदेश प्रभु महावीर देते रहे। जो इस आह्वान को सम्मान देकर श्रेष्ठता के क्षेत्र में चल पड़ते है, उनका जीवन ज्योतिर्मान बन जाता है।

बाइबिल ने इस सम्बन्ध में अत्यन्त प्रेरक तथ्य प्रकट किया है - 'तूं माँग, वह तुझे जरूर मिलेगा। खोज, तूं जरूर पाएगा। खटखटा, तेरे लिए दरवाजा जरूर खुलेगा। विचारक थोरो ने पुरुषार्थ के द्वारा प्राप्त होने वाली सफलताओं की सुनिश्चिता के बारे में विशेष जोर देकर कहा है- "क्या तुमने कभी ऐसे आदमी का नाम सुना है, जिसने निष्ठापूर्वक जन्मभर प्रयास कर प्रबल पुरुषार्थ किया हो और किसी हद तक भी सफल नहीं हुआ तो इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि असफलताओं से घबराकर लगातार प्रयत्न करने वाले लोगों की गोद में सफलता स्वयं आकर बैठ जाती है।

निश्चित रूप में पुरुषार्थ समग्र सिद्धियों का मूल एवं व्यक्ति के भाग्य का विधाता एवं त्राता है पर प्रमाद दशा में ग्रस्त चेतनाएँ अपनी हानि अपने ही द्वारा करने लगती है। कारण उनकी सक्रियता विपरीत दिशा में रहती है। आठ प्रकार के मद, विषयों की गुलामी, कषाय से सम्बन्ध, आलस्य और विकथा में अभिरूचि सम्यक् पुरुषार्थ नहीं है। मद, विषय कषाय, निद्रा और विकथा ये प्रमाद के अंग है, इनका संग अशुभ एवं अमंगल को पुष्ट करता है। विकृति, विसर्जन और परमात्म स्वरूप होने का प्रयत्न ही सच्चा और एकमात्र पुरुषार्थ है।

अपना पेट, पेटी और परिवार के लिए प्रत्येक व्यक्ति सक्रिय रहता है पर इस सक्रियता को सम्यक् पुरुषार्थ नहीं कहा जा सकता। सम्यक् पुरुषार्थ आत्म तत्व की प्रतीति, आत्मोपासना एवं परमार्थ प्रधान उपक्रमों से हार्दिक रूप से संलग्न है। यह संलग्नता कितनी है यह समझने के लिए स्वयं की ओर झांकने की आवश्यकता है। खाना, कमाना, घर बसाना, मौज शौक, ऐश, आराम ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य नहीं है। इससे अलग कुछ और विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण कार्य है। उसे प्राप्त करने के लिए आत्मा को जगाना चाहिए। आत्मा का जागरण ही सच्चा जागरण है। इसे ही समुचित पुरुषार्थ कहा गया है। आत्मा अनादि, अविनाशी, विकारहीन, शाश्वत और अनन्त क्षमता सम्पन्न है। आत्मा न उन्पन्न होती है और न मरती है। वह अजन्मा है। उसे न कोई शास्त्र काट सकता है और न आत्मा को जलानें में अग्नि समर्थ है। मृत्यु शरीर की होती है, आत्मा की कभी मृत्यु नहीं होती है। अनन्त ज्ञान दर्शन चारित्र और उपयोग आत्मा अर्थात् चैतन्य का मूल लक्षण है। मूलतः आत्मा से कोई भी विकृति नहीं है जिनती भी विकृतियाँ परिलक्षित होती है, वे सभी बाहर से आई हुई हैं, वैभाविक है। प्रमाद मोह कषाय और अशुभ योग से जुड़ाव दुःखों का आधि व्याधि और उपाधि का कारण है, इनसे मुक्ति के लिए पूर्ण प्रखरता के साथ जो प्रयास किया जाए वह सम्यक् पुरुषार्थ है। यही उन्नति की नींव है। उन्नति की आकांक्षा रखनें वाले व्यक्ति को निद्रा तन्द्रा भय क्रोध

आलस्य दीर्घसूत्रता आदि अवगुण त्याग देने चाहिए।

तीर्थंकर चरित्र को पढ़ने सुनने वाले अच्छी तरह से जानते हैं कि तीर्थंकर चरित्र में चौबीस तीर्थंकरों के पवित्र जीवनवृत का समावेश है। तेईस तीर्थंकरों के जीवन में कर्म बंधन की जितनी प्रगाढ़ता नहीं थी उतनी अंतिम तीर्थंकर शासनेश महावीर के जीवन में थी इसीलिए आज तक प्रायः यही कहा जाता है कि तेईस तीर्थंकरों के कर्म एक तरफ और भगवान महावीर के कर्म एक तरफ। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भगवान महावीर की चेतना कर्मों से कितनी आवृत थी परन्तु भगवान महावीर का यह सुदृढ़ संकल्प एवं सुदृढ़ धारणा थी कि 'आत्म स्वरूप से परमात्म स्वरूप तक पहुँचने के लिए, या सच्चे उत्कर्ष के लिए मुझे सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा ही कर्मों को तोड़ना होगा। "यह सोचकर के साधना के क्षेत्र में चल पड़े। कई उपसर्ग, कई चुनौतियाँ एवं कई तूफान आए पर वे लक्ष्य को प्राप्त करके ही रहे, यह सब सम्यक् पुरुषार्थ के अभाव में क्या संभव था?

ऋग्वेद का सूत्र है- 'देवता पुरुषार्थी से ही प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं। लक्ष्य को पूरा करनें के लिए पुरुषार्थ अनिवार्य है। फिर स्पष्ट करता हूँ कि 'भौतिक लक्ष्य के लिए सक्रिय होना वह सम्यक् पुरुषार्थ नहीं है। इस दृष्टिकोण में परिष्कार अपेक्षित है अन्यथा जीवन तो संसार में हर एक जी लेता है, परन्तु जीवन मे कुछ विशिष्टता का समावेश होने पर ही जीवन खिलता है।

विचारक रूजवेल्ट को जिन्होंने पढ़ा है वे जानते है कि उन्होंने जीवन विकास के लिए जो कुछ कहा और लिखा है वह अद्भुत है। एक बार मैंने पाया- मैं अत्यन्त सरलता से जीवनयापन की शिक्षा देना नहीं चाहता अपितु मैं एक कठिन श्रमशील जीवन की शिक्षा देना चाहता हूँ। सममुच पेट, पेटी और परिवार वाली धारणा बहुत सामान्य धारणा है। अपना पेट तो पशु भी भर लेता है। अपनी क्षमता और जितनी उनकी सोच का विकास है उस आधार पर मोहोदय से पशु पक्षी जगत भी उनके घेरे को पुष्ट करने के लिए सक्रिय दिखाई देते हैं। मनुष्य भी केवल इतने तक ही अपने आपको सीमित बना दे और आत्मबोध, कर्म निर्जरा का लक्ष्य यदि उसका नहीं बन पाए तो एकदम स्पष्ट है सिर्फ खाने और सोने का नाम ही जीवन नहीं है। जीवन नाम तो सदैव आगे बढ़ने की निष्ठा का नाम है।

सम्यक् पुरुषार्थ की आराधना के बिना जीवन अपूर्ण है। आत्म-साधना जीवन का सार है। सम्यक् पुरुषार्थ, धर्माराधना से, पवित्र प्रवृत्तियों से रहित जीवन इस संसार में पतवार रहित उस नौका के समान है जो कभी भी डूब सकती है। डूबना नहीं अपितु पार होना जीवन का दृष्टिकोण होना चाहिए। शरीर नौका है, जीव नाविक है और संसार सागर है।

जो जागरूक महर्षिजन हैं वे सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा दुःखों के सागर को पार कर बैठते हैं। साधना की चर्चा मात्र से सफलता आज तक कौन प्राप्त कर पाया है? सफलता का वरण, अनवरत सक्रियता मांगता है। हिमालय की ऊचाईयों को जबान के फीते से मापनें में कहां कठिनाई आती है? श्रम तो चढ़ाई में हुआ करता है। समुचित गति जहां है, वहां प्रगति निर्विवाद है। प्रगति के लिए सतत् गतिशील रहना चाहिए। आप सभी समुचित पुरुषार्थ करते हुए कर्म बंधन को दुर्बल एवं निर्मूल बनाने में सफल हो जाएं, मेरी यही शुभ भावना है। ❖❖

गांधी जी का पहनावा

एक बार कस्तूरबा स्त्रियों की सभा में सफाई पर भाषण देने गई। सभा की एक गरीब स्त्री उनका हाथ पकड़कर अपने घर ले गई और बोली - 'बा मैं भी सफाई से रहना चाहती हूं लेकिन कैसे रहूं? मेरे पास एक ही धोती है। जब नहाना होता है तो आधी धोती पहन लेती हूं और आधी भिगो लेती हूं। जब वह सूख जाती हे तो उसे पहन लेती हूं और शेष आधी को भिगोती हूं। घर के लोगों से दूसरी धोती इसलिए नहीं मांगती क्योंकि वे पहले ही कर्जे में दबे हैं।' उन्होंने यह घटना गांधी जी को सुनाई तो वे भी बड़े दुःखी हुए। उसीदिन से गांधी जी पूरी धोती के बदले आधी धोती बांधने लगे। उन्होंने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक देश के सभी लोगों को तन ढ़कने के लिए उचित वस्त्र नहीं मिलते, मैं आधी धोती ही बांधूगा। ❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर : समन्वय का शुभारम्भ

पूज्य संतों ने सामाजिक भावनाओं को सफलीभूत बनाने का निश्चय कर लिया था। यही कारण है कि विलक्षण कार्य कविमना श्री नानकचंद्रजी म. के मंगलाचरण **"किंकर्पूरमयं"** स्तोत्र की गूंज के पश्चात् शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म. के इस श्लोक पाठ में साकार हो गया कि -

लक्ष्यं मेरूगिरिः समुन्नतरं, गंभीरमब्धेर्मनो।
वाणी प्रेम सुधाझरी हितकारी, दुष्टिर्दिगन्तं गता।।
येषां कष्ट सहं शरीरमनधं, श्रेयाविधो तत्परा-स्ते
संतो हि विभूषयन्तु समितिं, गत्वाजमेरंपुरम्।।

भावार्थ यह कि - "लक्ष्य सुमेरू पर्वत से भी उच्च एवं उन्नत है। मन समुद्र से भी अधिक गंभीर है। वाणी प्रेम निर्झर के समान माधुर्यवाली है। हितकारी दृष्टि जो दिगूदिगन्त को छू रही है। परिषह में तपकर काया कुंदन सी पवित्र हो गई है। अपना या पराये का भेद समाप्त हो गया है। ऐसे कल्याणकारी वातावरण में सत्पुरुषों का ये आगमन अजमेर नगरी की शोभा बढ़ा रहा है।" स्वस्तिवाचन के पश्चात् ऋषि सम्प्रदाय के शीर्षमणि पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म. के अनमोल उद्गार श्रवणित हुए। जिनका अपूर्व प्रभाव प्रत्यक्ष देखा गया।

पू. रत्नचन्द्रजी म. ने सम्मेलन की विषय वस्तु और लक्ष्य पर उपस्थित महापुरुषो का ध्यान खींचा।

जैन कॉन्फ्रेंस के ध्रुव समान समाजसेवी श्री दुर्लभजी भाई ने अपने सम्बोधन ने निवेदित किया कि- **"आज हमारे जीवन का महान अवसर हमारे सामने है, सौभाग्यवश हमें इतनी बड़ी संख्या में उच्च कोटि के महात्माओं महासतियों और आचार्यों का पावन दर्शन, मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। अतः हमें इन महापुरुषों के चर्चा क्रम में व्यवधान नही बनना है। त्यागी वर्ग स्वयं सबके हिताहित का विचार करके निर्णय ले लेंगे। हमारी ओर से कोई व्यवधान न हो ऐसा, अनुशासन बनाए रखकर हम सिर्फ सहयोगी बनें।"**

क्षणिक व्यवधान : इसी बीच एक एकल विहारी संत के लिए सम्मेलन में प्रवेश की मांग करते हुए दबंग व्यक्ति ने बड़ा व्यवधान उपस्थित किया। जिसको शांत करने के बाद मंगल पाठ हुआ एवं सभा विसर्जित हो गई, मुनिगण भी यथा स्थान पहुंच गए।

दूसरे दिन उस समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित आचार्य श्री जवारहलालजी म.सा. सम्मेलन में अत्यंत सादगी से बिना किसी समारंभ के कुछ लोगों के साथ पधार गए। आचार्यश्रीजी का यह आचरण आपश्रीजी की गरिमा के अनुकूल था, अतः सर्वत्र आपकी महानता की चर्चा भूरी-भूरी प्रशंसा के साथ चलती रही।

"प्रणमु वासुपूज्य जिन नायक सदा सहायक तू मेरो" इस स्तुति के साथ आपश्रीजी ने मंगल पाठ प्रदान किया, तथा लाखन कोटडी में आपश्रीजी ने सम्मेलन के निकट ही स्थान ग्रहण किया। मध्यान्ह में ही शेष प्रतिनिधियों का भी सादर आगमन हो गया। दोपहर 1:30 बजे से 4 बजे तक का समय कार्यवाही हेतु उचित मानकर दरवाजा बंद कर दिया गया।

इस समय विशेष में किसी भी श्रावक का प्रवेश प्रतिबंधित था। श्रमण अत्यावश्यक होने पर भी बाहर भीतर आ जा सकते थे। इस नियमानुसार अनुशासित श्रावक बाहर ही खड़े रह गए। मगर संत उतावले हो रहे थे। सभी जल्दी से जल्दी अपनी बात कहने हेतु आतुर होने लगे। कोई पूज्य श्री जवाहराचार्य श्री जी से अपनी बात कहना चाहते थे तो कोई ऊपर विराजित श्री दयालचंद्रजी म. के शिष्यों के पास अपनी अपनी दलील देने लगे, इस पर कुछ देर तक व्यवधान होता रहा। बात सिर्फ इतनी सी थी कि कई कठोर क्रियापात्री मुनिराज पेड़ के नीचे बैठकर निर्णय करने पर आपत्ति कर रहे थे। **इस आपत्ति को निरस्त करते हुए वरिष्ठ संतों ने एक स्पष्ट निर्णय दिया कि- "ऐसे ही बोधिवृक्ष के**

आश्रय में वही कार्य किया जाए, जैसा 1500 वर्ष पूर्व देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने संघ और संसार के कल्याण के लिए किया गया था।"

इस उदारमना ऐतिहासिक समझ से काया पलट हो गई, त्यागी वर्ग में संसार के कल्याण की भावना व्याप्त होते ही साम्य भाव का जागरण हो गया। प्रेम के गीत गाए जाने लगे, सिंह और बकरी साथ-साथ हो गए और एकता के निर्मल जल से प्यास बुझाने लगे।

सब एक मंडलाकार में बैठ गए तब शांति रक्षक शतावधानी मुनि श्री रत्नचंद्रजी म. एवं कविवर्य श्री नानकचंद्रजी म. ने संयुक्त रूप से मंगलाचरण पढ़ा।

मंगलाचरण के पश्चात् बम्बई में 25/12/32 के प्रस्तावों को लिखित विवरण वितरित किया गया। जो प्रस्ताव अत्यंत महत्व के थे वे निम्नानुसार थे, यथा-

प्रस्ताव नं 2 : साधु-सम्मेलन में केवल भविष्य की उन्नति के संबंध में विचार किया जावे, भूतकाल संबंधी विवादों की कोई चर्चा न हो।

प्रस्ताव नं 3 : सम्मेलन में समय-समय पर प्रत्येक मुनिराज परस्पर सम्मान करें। इसमें किसी पर कोई दबाव नहीं होगा।

प्रस्ताव नं 6 : सम्मेलन की मंडलाकार बैठक में अगली लाइन में हर एक सम्प्रदाय के एक-एक मुख्य मुनिराज विराजे। बाकि मुनिराज मुख्य मुनिश्री के पीछे बैठने की कृपा करें।

प्रस्ताव नं 8 : सम्मेलन में होने वाले निर्णय जब तक ठोस रूप न ले लें तब तक प्रतिनिधियों में चर्चा का विषय न बनाया जाए। (प्रस्तावों का वितरण/मूलतः व्यवस्था की सूचना देने तक सीमित रहा, अतः पालन का अत्याग्रह नहीं था।)

इसके बाद कार्यवाही आगे बढ़ाने के पहले ही पूज्य श्री जवाहराचार्य श्री जी ने अपनी साफगोई से सम्मेलन को हैरत में डाल दिया। आपश्रीजी ने फरमाया कि- **"मैं प्रतिनिधि नहीं हूँ"**, लेकिन जो कुछ स्वीकार करने योग्य होगा, उसे स्वीकार करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं उसे ही मानूंगा।

इस स्पष्टीकरण पर युवाचार्य श्री काशीरामजी म. ने कहा कि- "दिन भर में जो प्रस्ताव रखे जाने है, उनका निश्चय करने के लिए एक विषय विचरणी कमेटी बना ली जाए और उसी की आज्ञा से कार्य प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाएं।

इस पर सबकी सम्मति हो चुकने पर, पूज्य श्री जवाहर लालजी म. ने कहा कि - **"आज्ञा"** शब्द न मानकर मुझे सब कुछ मान्य हो सकता है।"

जैसे ही यह विलक्षण राय प्रकट हुई सभी लोग इसके निहितार्थ पर हंसने लगे। इसके पश्चात् युवाचार्य श्री कांशीरामजी म. ने सम्मेलन का ध्यान पत्री प्रकरण पर खींचते हुए कहा कि-प्रधानाचार्य पूज्य श्री सोहनलाल जी म. ने मुनि सम्मेलन को इसी विषय में समाधान करने का दायित्व सौंपा है, अतः इस प्रस्ताव को पहले लिया जाए व निर्णय किया जाए।

चर्चा में भाग लेते हुए पूज्य श्री अमोलकऋषि जी म. ने कहा-यदि वर्ष में एक से दो मास हो तो एक मास गिना जावे क्योंकि सूत्र में "समासं'' पाठ आता है। दिन गणना का कोई पाठ नहीं है। **अतः श्रावण दो हो तो श्रावण एक गिना जाए, इसी प्रकार भादों-भादों तक गिनकर पचासवें दिन संवत्सरी मान ली जाए।** परन्तु यह युक्ति भी बहस में उलझकर रह गई, क्योंकि सबका आग्रह जैन ज्योतिष के अनुसार निर्णय करने का था तो पुनः पू. श्री जवाहरलालजी म. बोले कि - **"ज्योतिष विषय को जैन परिभाषा की दृष्टि से सिद्ध करना असंभव सा है। अतः परम्परागत मान्यताओं के सहारे ही निर्णय लिया जा सकता है। जैन सूत्रों में यह विषय सांगोपांग नहीं है।"**

हमें तो ऐसा मार्ग खोजना चाहिये जिससे हमारी पक्खी संवत्सरी सभी को मान्य हो जाए। **"जो इस विषय को निर्विवाद कर दें, मैं उसके पैर पड़ने को भी तैयार हूँ।"** इन विचारों को सुनकर सब मौन हो गए। एक सन्नाटा सा छा गए। किसी ने कोई तर्क देना उचित नहीं समझा।

इसके बाद शास्त्रों पर तथा पत्री को सही न मानने पर दबे स्वर में चर्चा चल पड़ी। ये व्यवहार युवाचार्य श्री काशीराम जी म. को अखर गया। वे ऊँचे स्वर में हुंकार भर कर कहने लगे कि - **"इस तरह काना फूंसी मत करो। कोई माई का लाल इसको झूठा बताने वाला सामने आवे तो मैं शास्त्रार्थ करने को तैयार हूँ।"**

(... क्रमशः)

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

आगम-मर्मज्ञ, मेवाड़ केसरी, प्रवर्तक श्री मोहनलालजी म.

भादवा कृष्णा दशमी का दिन आते ही मानस-पटल पर एक दिव्यात्मा की छवि उभर आती है, वह दिव्यात्मा है- मेवाड़ केसरी सरलमना पूज्य प्रवर्तक श्री मोहनलालजी म.।

समता, सरलता, सहजता की त्रिवेणी श्री मोहनलालजी म. का जन्म शाहपुरा के निकट 'आंटोली' गाँव को प्राप्त हुआ। आपका जन्म वि. सं. 1976, आषाढ़ शुक्ला 7 को हुआ। आपके पिता श्री कालूरामजी शर्मा एवं माता श्रीमती बरजूबाई थी। ब्राह्मण कुल में वह दीपक प्रगटा। शाहपुरा (राजस्थान) में ही शुभ-संस्कारों, सद्शिक्षा का धनार्जन किया। आपका लालन-पालन एवं शिक्षा शाहपुरा में सम्पन्न हुई।

यौवन की दहलीज पर कदम रखने से पूर्व ही भाग्यद्वार पर शुभ कर्मों ने दस्तक दी और मेवाड़ संघ शिरोमणी पूज्य गुरुदेव श्री छोगालालजी म.सा. जैसे पारस पुरुष का सान्निध्य सम्प्राप्त हुआ। बालक मोहन मोह+न मोह का अन्त करने के दृढ़ संकल्पित हुआ। पारस-पुरुष गुरुदेव का संस्पर्श पाकर लोह जीवन को सुवर्णमय बनाने के लिए आतुर हो उठा।

अंतराय कर्म के बादल बिखर गये और पारसोली की पुण्य भूमि पर वह वीर बालक साधना के कंटकाकीर्ण पथ पर चढ़ गया, मात्र 17 वर्ष की उम्र में, वि. सं. 1992, पौष वदी 2 के शुभ दीन में। दीक्षा-शिक्षा प्रदाता थे-गुप्त तपस्वी पूज्य श्री भूरालालजी म. तथा गुरुवर्य थे। मेवाड़ शिरोमणि पूज्य श्री छोगालालजी म.। वीर पुरुष ही इस महापथ पर चल पाते हैं। बालक मोहन भी वीर बालक था, वह भी गुरु चरणों में दीक्षित हो गया। केवल वेशभूषा बदलना ही दीक्षा नहीं है, दीक्षा का अर्थ है-जीवन का रूपान्तरण करना, जीवन को संवेग-निर्वेद की ओर मोड़ना। इन्द्रियों का दमन, विषयों का वमन तथा कषायों का शमन करना दीक्षा है।

नवदीक्षित मुनि श्री मोहनलालजी के मन में यही शुभकामना थी, मैं सच्चा श्रमण बन, आत्म-साधना कर जीवन को समुज्ज्वल बनाऊं। समता, सरलता, सहजता, सेवा, विनम्रता, दयालुता - ये दिव्य गुण जीवन में प्रकट हो।

आज हम आपके जीवन पर दृष्टिपात करते हैं। तो उनके जीवन में इन दिव्य गुणों के सुमनों की सौरभ-महक पाते हैं। आप साधुता, विनम्रता के प्राण थे। जिनशासन की शान थे, उनके जीवन का कण-कण समता के दीप से प्रकाशमान था। सरलता एवं सहजता के दर्शन तो कदम-कदम पर होते थे। सेवा-उनके जीवन का ध्येय था। सेवा करना महान् दुष्कर कार्य है, सेवा धर्म परम गहन है। अम्लान भाव तथा समर्पण भाव से सेवा करना गुरुदेव की त्याग निष्ठा थी।

एक बार भजनानंदी श्री गोकुलचंदजी म.सा. अस्वस्थ हो गये थे। उस समय आपने जो अग्लान भाव से सेवा की उसे देखकर सभी के स्वर मुखरित होते थे कि श्री मोहनमुनिजी जैसी उत्कृष्ट सेवा हमने नहीं देखी। धन्य है इनको इतनी अग्लान भाव से सेवा करने पर भी हर पल चेहरे पर मधुर मुस्कान, कहीं कोई शिकन नहीं। आप इतने सरल एवं सहज थे कि जो भी एक बार आपके श्री चरणों में आता वह हमेशा के लिए आपका ही हो जाता था। वाणी में ओज तथा माधुर्य था। आपकी सुमधुर ओजस्वी प्रवचन धारा जब प्रवाहित होती थी तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। छोटे गांवों में रात्रिकालीन प्रवचन में सुमधुर गीत रसधारा जब बहती थी तो कहा जाता है कि एक किमी. तक वह आवाज गूंजती थी।

मेवाड़ केसरी जी म. जैनागमों के साथ अन्य दर्शनों के भी ज्ञाता थे। आप एक अच्छे कवि, गायक एवं ओजस्वी-यशस्वी प्रवचनकार थे। इसके अतिरिक्त जीवन की यह विशिष्टता थी कि आप बहुत ही सरल मन के थे। एक छोटे से बच्चे में भी कपट हो सकता है, किन्तु आपको छल-कपट छू तक नहीं पाया। सेवा और समभाव से आप ओतप्रोत थे। आपने अपने गुरुजनों की तो भरपूर सेवाएँ की है, किन्तु छोटे सन्तों की सेवा में भी कभी पीछे नहीं रहे। सेवा उनका निजानन्द था।

'समता' साधु का स्वभाव है, संत-जीवन के इस स्वर्णिम पक्ष को वे जीवन भर जीये। प्रशंसा हो अथवा निंदा, लाभ हो अथवा अलाभ, वे सदैव समत्व से जुड़ कर चले। कभी भी पर निंदा में उन्होंने रूचि नहीं ली। किसी को पर निंदा से लगा देखते तो-वे कहते थे- "भाई ! क्यों किसी की निंदा करके कर्म-बधं कर रहे हो?" उनके उपदेशों से अनेकों क्षेत्रों में वर्षों से चले आ रहे विघटन-विग्रह का अंत हुआ। सरलता, सादगी और सेवा उनका स्वभाव था। संघ समाज में संगठन के लिए वे सदैव सचेष्ट रहे। निंदा, आलोचना में कभी भी उन्होंने रूचि नहीं ली। सदैव वे गुण ग्रहण करने की प्रेरणा देते थे। जोगनिया माता पशु बलिदान बंद करवाने में उनकी अद्भुत सक्रियता रही।

मोहन महिमा भू-लोक समाना : सागर के गर्भ से समग्र रत्न राशि को निकाल पाना अत्यन्त ही लघु कार्य है, मगर गुरु महिमा का विस्तार ब्रह्माजी के चार मुख भी नहीं

कर सकते हैं। मेवाड़ केसरी प्रवर्तक श्री मोहनलालजी म. का आंतरिक व्यक्तित्व भू-लोक के समान अत्यंत ही विराट् था। सरलता तो उनके रोम-रोम से अपना परिचय प्रस्तुत किया करती थी। सागर की अनगिनत लहरों से भी ज्यादा उनके हृदय में करूणा की लहरें हिलोरें लिया करती थी। जैन-जैनेतर के हृदय में उनके प्रति अगाध श्रद्धा होते हुए भी उन्होंने कभी आडम्बर-प्रदर्शन का सहारा नहीं लिया। जब श्रमणसंघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आनन्दऋषिजी म. ने उनकी संघ के प्रति निष्ठा और जिनशासन की अद्‌भुत प्रभावना से प्रभावित होकर उनको 'प्रवर्तक' पद जैसे गरिमामय अलंकरण से अलकृत किया था। उसके बावजूद भी उनके अन्तःकरण में दर्प के भाव जन्म न ले सके, अपितु उन्होंने पद को साधना का बाधक मात्र माना। पद को आचार्य श्री का कृपाप्रसाद समझ कर स्वीकार कर लिया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उन जैसे महान् साधक से प्रेरणा लेकर पद-लिप्सा से अलिप्त रहे तो उनको प्रति एक सच्ची और अपूर्व श्रद्धांजलि होगी।

अद्‌भुत व्यक्ति के धनी : बालकों को देखकर उनका मन भी बाल हो उठता था। आशीर्वाद की मुद्रा में जब भी उनका हाथ किसी बच्चे के सिर पर होता तो, उस बच्चे को हिमालय की सबसे ऊँची चोटी भी अपने कदमों तले महसूस होती। आज कितने ही श्रावक अपने आपको धन्य मानते हैं कि हम जो भी हैं, मेवाड़ केसरी गुरुदेव श्री मोहनलालजी म. के आशीर्वाद एवं उनके दिए हुए संस्कारों की बदौलत हैं। सेवा उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी। उनके अग्रज पूज्य श्री गोकुलचन्दजी म. के प्रति पूर्णतः समर्पित होकर सेवा का गौरव हासिल किया।

स्थानकवासी परंपरा के प्राण जैनागमों की व्याख्याएँ जो उनके अंतर्हृदय के साथ-साथ होठों पर तैरा करती थी। वे आगमों के गहरे मर्मज्ञ एवं लोकप्रिय प्रवचनकार थे। 17 शास्त्र एवं कई चरित्र आपको पूर्णतः कण्ठस्थ थे। इतने ज्ञान और गुण को गुरुदेव पूज्य श्री मोहनलालजी म. ही पचा सकते हैं।

करूणा के सागर : आपके हृदय में करूणा का सागर सदा हिलौरें लिया करता था। उसी का परिणाम है कि जोगणिया माता की रक्त रंजित भूमि पर पशुबली बंद करवाने में आप नींव की ईंट के रूप में रहे। बेंगू के सार्वजनिक प्रवचन में आप द्वारा आजन्म आहार-त्याग की घोषणा के साथ ही परम विदुषी महासती श्री जसकुंवरजी म. आदि सैकड़ों लोग सक्रियता से जुड़ गए एवं हजारों पशुओं का बलिदान हमेशा के लिए रूक गया। मेवाड़ का गाँव-गाँव उनके अनूठे कार्यों के प्रति श्रद्धावन्त साक्षी है।

वचनसिद्धि प्राप्त : अध्यापिका श्रीमती शकुंतला श्रीश्रीमाल के शब्दों में 'उस दिन मुझे आवश्यक कार्य हेतु भीलवाड़ा जाना था। तैयारी में लगी हुई थी कि आकाशवाणी द्वारा रेडियों पर गुरुदेव पूज्य श्री मोहनलालजी म. के देवलोकगमन का समाचार सुनाई दिया। समाचार झूठे तो नहीं थे पर विश्वास होना भी तो कठिन था।' उससे कुछ समय पूर्व ही हम सपरिवार गुरुदेव के दर्शन हेतु शाहपुरा गए थे। सभी से कुशलक्षेम के बाद अचानक मुझसे पूछ बैठे- "पढ़ाई करके क्या बनोगी?" उच्चारण मैं समझ भी नही पाई, पिताजी ने मुझे समझाया, पहले तो मैं घबरा ही गई थी पर गुरुदेव के उत्साह बढ़ाने पर मेरे मुँह से अचानक ही निकल गया- 'टीचर'। मुझे आज 25 साल बाद भी गुरुदेव के शब्द याद है- "जा बण जा ई!" वो शब्द कुछ वर्ष बाद ही आशीर्वाद के रूप में यथार्थ में बदल गए। सरल संत तो सरलता के साथ कह देते हैं। वे ही वचन हमारे लिए सिद्ध हो जाते हैं।

सरल मन के सत्पुरुष : आज समाज सुधारक, श्रमण संघीय संगठन के प्रति समर्पित, प्रत्येक मुनि-सम्मेलन में सम्मिलित, सरलता, विनम्रता एवं सेवामूर्ति यशस्वी प्रवचनकार एवं कवि थे। मेवाड़ केसरी पूज्य श्री मोहनलालजी म. श्रमण-संस्कृति के सहज प्रहरी थे। शीतल सम्प्रदाय के ज्योतिर्धर नक्षत्र थे। आपने 52 वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया। आपको अजमेर-मुनि-सम्मेलन में 'उप-प्रवर्तक', अजमेर चातुर्मास में संघ द्वारा 'मेवाड़ केसरी', आचार्य प्रवर श्री आनंदऋषिजी म. द्वारा 'प्रवर्तक' तथा रतलाम संघ द्वारा 'धर्म प्रभावक', इंदौर में 'जिनशासन रत्न' पद से विभूषि किया गया। वि.सं. 2044 का वर्षावास शाहपुरा की पुण्य तपोभूमि पर था। उसी तपोभूमि पर भादवा वदी 10 के दिन पूर्ण सजगता के साथ त्याग-प्रत्याख्यान पूर्वक "ओम् नमो सिद्धाणं" का उच्चारण करते हुए प्रातःकाल 8 बजे आपका महाप्रयाण हो गया। जन-जन के श्रद्धाधार मेवाड़ केसरी पूज्य श्री मोहनलालजी म. स्वर्गारोही हो गये। पार्थिव दृष्ट्या वे आज हमारे मध्य नहीं हैं, किन्तु उनका यश-शरीर आज भी अजर-अमर है। उनके अनुपम आदर्श आज भी प्रेरणा स्त्रोत है। संयोग की बात है कि शाहपुरा ही निर्वाण भूमि बन गयी। मेवाड़ केसरी पूज्य श्री मोहनलालजी म. के नाम से तथा उनके जीवन से आज भी मेवाड़ का आबाल-वृद्ध, युवा आदि सभी जन परिचित है। आपको भावयुक्त शत्-शत् नमन, सश्रद्ध वंदन ! ❖❖

साभार :- तत्त्वार्थ सूत्र ...

प्रथम अध्याय : ज्ञान

- विद्या वाचस्पति आगम रत्नाकर प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

निसर्गज सम्यग्दर्शन के विषय में यह आशंका हो सकती है कि जिस जीव ने अनादिकाल से आत्मा के स्वभाव को, स्वरूप को न जाना है, न समझा है उसे उस पर श्रद्धा बिना बाह्य निमित्त (गुरु के उपदेश आदि) के कैसे हो सकती है? यह ठीक है कि निसर्गज सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के समय उस जीव को परकीय निमित्त (गुरुपदेश-धर्मदेशना) नहीं प्राप्त होता किन्तु ऐसे जीव को पहले कभी किसी पूर्वजन्म (भव) में निश्चित रूप से धर्मोपदेश आदि बाह्य निमित्त मिल चुका होता है। यह बात अलग है कि उस समय उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं हुआ और अब पूर्व में सुने हुए उपदेश के संस्कारों के प्रभाववश, स्वयं ही अपने परिणाम से, निसर्गरूप से सम्यग्दर्शन प्राप्त हो गया। ठीक उसी प्रकार जैसे कि सोमिल के हृदय में श्मशान में ध्यानस्थ मुनि गजसुकुमाल के प्रति निन्यानवें लाख भव पहले के वैर बंध के कारण क्रोध की ज्वाला धधक उठी थी।

इस प्रकार सम्यग्दर्शन चाहे निसर्गज हो या अधिगमज, वह शुद्धात्म-प्रतीति है। अन्य आचार्यों ने सम्यग्दर्शन के क्षायिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, वीतराग, सराग, निश्चय -व्यवहार, पौद्गलिक, अपौद्गलिक आदि अनेक भेद-प्रभेद किए हैं किन्तु आचार्य उमास्वाति ने इस सूत्र में दो का ही नाम लिया है क्योंकि इन दो में ही समस्त भेद गर्भित हैं।

सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति के हेतु

निसर्गज-स्वभाव से उदाहरण-काँटे की नोंक (काँटे की नोंक स्वाभाविक होती है)	अधिगमज-पर के उपदेश से बाण की धार (बाण की धार को बनाने के लिए किसी की आवश्यकता होती है)

सात तत्त्व

जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।4।।

अर्थ-जीव, अजीव, आस्त्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष-ये तत्त्व हैं।

विवेचन - तत्त्व सात प्रकार के हैं। इनमें जीव तत्त्व मुख्य है। जीव का लक्षण है चेतना। जिसमें चेतना हो, वह जीव है और जिसमें चेतना का आभाव हो, वह अजीव है। अजीव तत्त्वों की संख्या पाँच बतायी गई है- **1.** पुद्गल, **2.** धर्म, **3.** अधर्म, **4.** आकाश, **5.** काल।

ये पाँचों रूपी-अरूपी में विभक्त हैं। रूपी का अर्थ है : i okuA i qxy : i oku gSt l e**स्पर्श** है, **रस** है, **गंध** है और **वर्ण** है। धर्म, अधर्म, आकाश और काल - ये सब अरूपी कहे गए हैं। इनमें न स्पर्श है, न रस, न गंध, न वर्ण है।

तीसरा तत्त्व है **आस्रव**। कर्मों के आने का द्वार आस्रव कहलाता है। इस द्वार के माध्यम से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कर्म आत्मा में प्रवेश पाते हैं। ये आस्रव द्वार पाँच हैं- मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। चौथा तत्त्व है **बंध**। आत्मा के प्रदेशों (हिस्सों) में कर्मों का प्रविष्ट होकर उससे सम्बद्ध हो जाना बंध है। बन्ध का तात्पर्य आत्मा और कर्म के प्रदेशों का परस्पर मिलन है। पाँचवा तत्त्व है **संवर**। कर्मों के आगमन यानी आस्रवों का रूकना संवर है। छठवाँ तत्त्व है **निर्जरा**। आत्मा के साथ जो कर्म सम्बद्ध हैं, उनका फल देकर अलग हो जाना या क्षय हो जाना या झर जाना निर्जरा तत्त्व है। सातवाँ तत्त्व है **मोक्ष**। समस्त कर्मों का आत्मा से सर्वथा पृथक् (अलग) हो जाना मोक्ष है। मोक्ष में कर्मों से मुक्ति है।

इस सूत्र में सात तत्त्व कहे गए हैं लेकिन उत्तराध्ययन सूत्र आदि आगम में तत्त्वों की संख्या नौ गिनाई गई है। कहीं-कहीं इन्हें नौ पदार्थ भी कहा गया है, यथा -

जीवाजीवा या बंधो य पुण्णं पावासवो तहा।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, **28/14**

नव सब्भावपयत्था पण्णत्ता, तंजहा-

जीवा अजीवा पुण्णं पावं आसवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्खा। -ठाणं, ठा. **9**, सू. **665**

अर्थात् जीव, अजीव, बंध, पुण्य, पाप, आस्रव, सवंर, निर्जरा और मोक्ष- ये नो सद्भूत पदार्थ कहे गये हैं।

नौं तत्त्व या पदार्थ या सात तत्त्व कहे जाएँ, इनमें मौलिक भेद कुछ भी नहीं है। इस सूत्र में आचार्य उमास्वाति ने पुण्य और पाप-इन दो पदार्थों को आस्रव-बंध में गर्मित कर लिया है। इन पदार्थों को आस्रव-बंध में गर्मित करने में आचार्य का भाव यही है कि कर्म पुण्य-पाप दोनों ही चाहे वह भावरूप में हो, चाहे द्रव्यरूप में हों, बंध तत्त्व में अन्तर्भूत है, क्योंकि बंध का कारणभूत कषाय, अध्यवसाय यानी परिणाम ही भावबंध है। इसीलिए पुण्य और पाप को आस्रव-बंध में समाहित किया गया है। इनको द्रव्य और भाव की अपेक्षा से निम्नानुसार भी समझा जा सकता है -

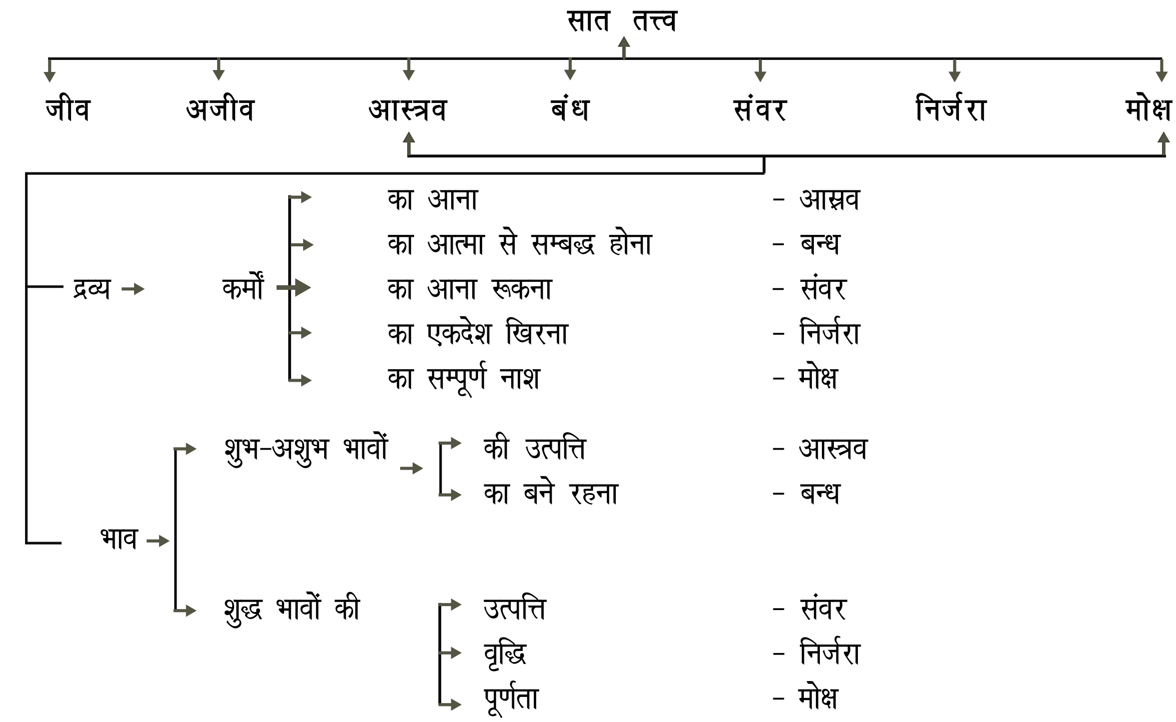

मोक्षमार्ग में तत्त्व-ज्ञान की उपयोगिता असंदिग्ध है। जब तक हम यह जानेंगे ही नहीं कि त्यागने (हेय), जानने (ज्ञेय) और ग्रहण करने (उपादेय) योग्य कया हैं? तो मोक्षमार्ग में प्रवृत्त कैसे हो सकेंगे? इसलिए इन तत्त्वों की जानकारी यानी यथार्थ ज्ञान का होना परमावश्यक है। इसमें जीव तत्त्व अपनाने योग्य होने के कारण उपादेय है जबकि अजीव तत्त्व छोड़ने या त्यागने योग्य होने के कारण हेय है। सातों तत्त्व ज्ञेय हैं यानी जानने योग्य हैं। इन तत्त्वों को भलि-भाँति जान-समझकर मोक्ष अभिलाषी छोड़ने और ग्रहण करने योग्य तत्त्वों का परिज्ञान कर तदनुरूप आचरण करने लगता है।

निक्षेप :

नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्यासः ।।5।।

अर्थ-नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव-इन चार निक्षेपों द्वारा जीवादि तत्त्वों का न्यास अर्थात् लोक व्यवहार होता है।

विवेचन- इस सूत्र में निक्षेपों के माध्यम से सम्यग्दर्शन और जीवादि का व्यवहार जानने की चर्चा है। जैनागम में तत्त्वों (पदार्थों) का विवेचन चार प्रकार से बताया गया है। ये चारों ही न्यास अथवा निक्षेप हैं। इस सूत्र में चार अर्थ-निक्षेप बताए गए हैं जिससे यह स्पष्ट हो सके कि मोक्षमार्ग रूप से सम्यग्दर्शनादि, अर्थ और तत्त्व रूप से जीवाजीवादि का अर्थ वही लेना चाहिए जो यथार्थ में है, दूसरे प्रकार का नहीं।

शब्द के अर्थ अनेक प्रकार से हो सकते हैं परन्तु प्रयोजन की सिद्धि जिससे हो सके वह अर्थ प्रयोग में लेना चाहिए, तभी पदार्थ का यथार्थ स्वरूप समझा जा सकता है। चार प्रकार के निक्षेप इस प्रकार हैं - *(... क्रमशः)*

मेरे आराध्य गुरुदेव : पूज्य प्रवर्तक कुंदनऋषिजी म.सा.

- संस्कार दिवाकर, गुरु चरण चंचरीक आलोकऋषिजी म.सा.

अहमदनगर जिले के मीरी गांव की पवित्र भूमि जो राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य देव श्रीमद् आनंदऋषिजी म.सा. की दीक्षा भूमि भी है, वहाँ मेरे गुरुदेव पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. का सुश्रावक श्रीमान् चंदनमलजी मेहरे के घर में मातुश्री केसरबाई की पवित्र कुक्षी से 11.11.1935 में जन्म हुआ। बाल्यावस्था में ही आपकी मातुश्री का देहावसान होने से आपके पिता को भी गहरा आघात लगा, जिससे वे भी कुछ दिनों पश्चात् ही संसार से महाप्रयाण कर गये।

इस कालचक्र की मार का गहरा असर आपके बाल मन पर भी हुआ, लेकिन धैर्य धारण करते हुए आपने गांव में ही सातवीं तक की पढ़ाई की। बाद में छोटा-मोटा व्यवसाय करने लगे। छोटी उम्र में ही आपको अनेकों कष्ट उठाने पड़े। अतः आप दैहिक रूप से कमजोर और अस्वस्थ रहने लगे।

इसी मध्य पूज्य आचार्य देव श्री आनंदऋषिजी म.सा. का मीरी में एक नवीन स्थानक भवन के शुभारंभ के अवसर पर पधारना हुआ। पूज्य गुरुदेव के प्रभावी प्रवचन और प्रेरणादायी व्यक्तित्व को देखकर आप पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठ गये। वहीं पूज्य आचार्यश्रीजी ने आपको अपने निकट बुलाया तो आपने मंगल पाठ प्रदान करने की विनती की। मंगल पाठ सुनते-सुनते ही आप अनायाश यह कह बैठे कि मैं तो आपकी सेवा में रहना चाहता हूँ, दीक्षा लेना चाहता हूँ। आचार्य भगवन् सहज में ही किसी को दीक्षा देने के लिए तैयार नहीं होते थे तो भगवन् ने फरमाया कि अपने परिवार से पूछकर बताना फिर आपके बारें में विचार करेंगे।

आपकी प्रामाणिकता को जानकर गुरुदेव ने आपको अपने साथ रखने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार वैरागी के रूयप में रहते हुए मार्च 1958 से गुरु सेवा में ही रहने लगे। आचार्य भगवन् ने आपको शिक्षा देकर सभी प्रकार से योग्य बनाया और 9 मई 1962 को आपको दीक्षा प्रदान कर दी, तब से आचार्य भगवन् के अंतिम समय तक आपने पूर्ण समर्पण के साथ गुरु सेवा की और कदम से कदम मिलाते हुए सुदीर्घ यात्राएं की।

आपने आचार्य भगवन् के साथ उत्तर भारत में दूर-दूर तक विहार किया और आप आचार्यश्रीजी की परछाई बनकर साथ रहने लगे। जब आचार्यश्रीजी उत्तर भारत में प्रवास कर रहे थे, तब आपने दिल्ली, लुधियाना और जम्मू तक जाकर चातुर्मास संपन्न किये। एक समय तो ऐसा आया कि आप ही प्रमुख शिष्य के नाते श्रमण संघ के पत्र व्यवहार, भक्तगणों से वार्ता, गुरु भ्राताओं की गोचरी आदि का प्रबंध तक देखने लगे। इस प्रकार आनंद समवशरण में आनंदपूर्वक आप लगे रहे। आपकी शालीनता, परिश्रम और सेवाभाव को देखते हुए आपको श्रमण संघ का मंत्री पद तथा बाद में प्रवर्तक पद प्रदान किया गया।

इन्दौर में आपको आनंद कुल कमल दिवाकर की उपाधि से श्रीसंघ ने अलंकृत किया। 111 दिन की मौन साधना भी आपने की। वर्तमान में आपकी प्रेरणा से मीरी में ही श्री गुरु आनंद गौशाला का निर्माण हुआ जहां पर गो पालन हेतु उत्कृष्ट व्यवस्थाएं चल रही हैं।

वर्तमान में आप श्रमण संघ के वरिष्ठ प्रवर्तक के रूप में श्रमण संघ की व्यवस्थाओं को, प्रेरणाओं को, धर्म प्रभावनाओं को गति देने में 90 वर्ष की अवस्था में भी संलग्न है। वर्तमान में तो आपकी छवि पूज्य श्री आनंदऋषिजी म.सा. जैसी हो चली है। जो भी भक्त आपके दर्शन करने के लिए आता है, आपसे आशीर्वाद पाता है, मंगल पाठ सुनता है, वह आपके इस कृपाभाव से गद-गद हो जाता है।

मैं आपके शिष्य के नाते आपकी सेवा में सदैव लगे रहकर अपने आपको आनंदित अनुभव करता हूँ। आपके अनुभव, आपके ज्ञान, आपकी उदारमना कृपा दृष्टि को पाकर निहाल होता हूँ। मेरी जिन शासन देव से यही प्रार्थना है कि मेरे आराध्य गुरुदेव को सर्व प्रकार से सुखसाता प्रदान करें और आपश्री की छत्र-छाया हम पर बनी रहें। इन्हीं शब्दों के साथ आपके श्रीचरणों में बारंबार कोटि-कोटि वंदन, नमन !

❖❖

तर्ज : तुम तरण तारण ...

श्री वर्धमान भक्तामर स्तोत्र

- आचार्य श्री घासीलाल जी म., हिन्दी पद्यानुवाद (बहुश्रुत श्री जयमुनिजी म.सा.)

भक्तियुत देवों के मुकुटों के प्रकाशक श्री चरण ।
मन भ्रमर के कमल जो, उन वीर की ले लूँ शरण ।।

आनन्द-सुख दाता तथा शुद्ध भावनामय हो स्वयम् ।
आप की पावन शरण में आया हूँ प्रभुवर अहम् ।।

भाव रोगों की परम औषध तथा गुणधाम हैं ।
पापहंता ध्येह शिवप्रद को सदैव प्रणाम है ।।

ज्यों गगन को नापने की धृष्टता बालक करे ।
आपके गुणगान करने में न मन मेरा डरे ।।

पारसमणि छूकर ही लौह को स्वर्णमय कर सकती है ।
निज सरीखा करने में न मन मेरा डरे ।।

वीर की गुण-वर्णना में नहीं कोई समर्थ है ।
सृष्टि के जीवों की गणना का उपक्रम व्यर्थ है ।।

गुणगान की शक्ति नहीं तव भक्ति ही बुलवाती है ।
गरूड सा गौरव नहीं पर चटका उड़ती जाती है ।।

वचन अमृत पी के तेरी स्तुति को मन है मचल रहा ।
चन्द्र की किरणों को पाकर नभ में सिन्धु उछल रहा ।।

हृदय के अज्ञान मोह को दूर करते तव वचन ।
मणियों की किरणें ही करती गुफा-स्थित तम का हरण ।।

सीधे सादे शब्द मेरे मूल्यवत्ता पाएँगे ।
जल के बिन्दु सीपी में पड़ मुक्ताफल बन जाएँगे ।।

स्तुति कथा क्यों नाम भी तव मन में श्रद्धा को भरे ।
नींबू कहते ही कहीं से जिव्हा में है रस झरे ।।

पिता अपने पुत्र को देता सकल भण्डार है ।
ध्यान भगवान् ! आपका तो मोक्ष का दातार है ।।

गुण के आकर आप को पाकर मिली दौलत बड़ी ।
तीन भुवनों के पति को नौकरी की क्या पड़ी ।।

आप के तन में ढ़ले परमाणु भी उत्तम हुए ।
जीव जो चरणों में बैठें क्यों न मुक्ति को छुएँ ।।

चण्डकौशिक पार पहुँचा हुआ सुदर्शन मुक्त है ।
चरण कमलों की कृपा किस उपमा से कहो युक्त है ।।

झर रहा अमृत का निर्झर बह रहा आमोद नद ।
भव्य चकवों के लिए मुखनन्द्र है आनन्दप्रद ।।

भूल से प्रभु नाल ले फिर भी हो सिद्धि हस्तगत ।
मिश्री मुँह में भूल से आए मधुरता है नियत ।।

चरणोपासक नर को ऋद्धि-सिद्धियाँ सारी मिलें ।
मुक्ति मिले तीर्थंकरों की पदवी भी भारी मिले ।।

पूछता हूँ नाव से किससे ये तारकता लही ।
वह तो चुप है तुम गए उत्तर मिले किससे सही ।।

पी के अमृत होता केवल तन का ही तो त्राण है ।
स्याद्वाद वाणी दिलाती अजरामर शिवस्थान है ।।

चक्रवर्ती चक्र से बनता धरेश्वर शान से ।
तुम दिलाते जैन शासन रत्नत्रय के दान से ।।

चन्द्र सूर्य काल-मापक, पंछी दो पर से उड़े ।
ज्ञान और चारित्र के सोपान मुक्ति में चढ़ें ।।

है अनादि काल से मिथ्यात्व मल भीतर बसा ।
आपके सान्निध्य में आने पे कब है टिक सका ।।

विषय भोगी और प्रमादी कुपथगामी अज्ञ जन ।
आपके अनुभाव से सन्मार्ग-गामी जाते बन ।।

कल्पद्रुम चिंतामणि के तुल्य गुण-गुण आपका ।
याद करके कौन भव्य निज खुशी को छिपा सका ।।

चिंतामणि और कल्पतरू नश्वर सुखों के दाता है ।
आप उनसे अधिक शाश्वत शांति-सुख-निर्माता हैं ।।

सूर्य हो तो हम नहीं चिंतामणि हो दुख नहीं ।
राग द्वेष विकार तेरे आते हैं सम्मुख नहीं ।।

चन्द्र, अमृत और विस्तृत पुष्प वन के तुल्य है ।
त्वत्प्ररूपित धर्म भव्यों के लिए बहुमूल्य है ।।

चन्द्रमा अति दूर से कुमुदों को विकसित कर रहा ।
आपका गुण-गण प्रभो! भव्यों को जागृत कर रहा ।।

चन्द्रकान्त मणि द्रवित होती है इन्दु-किरण से ।
भव्य जीव दयालु बनते तेरी महिमा-श्रवण से ।।

काल ये दुषमार है दुखों कषायों से भरा ।
उसने पाई शान्ति है प्रवचन सुना जिसने जरा ।।

षट्काय-रक्षक नाथ मुनियों के गुणों के धाम तुम ।
चन्द्र बन मुझ कुमुद का कर दो प्रभु कल्याण तुम ।।

आपके आश्रय से बनता वृक्ष भी गतशोक है ।
चरणों की सेवा से प्रमुदित होता प्राणि-लोक है ।।

देख सिंहासन पे तुमको हो रही इक भ्रान्ति है ।
चन्द्रमा सकलंक है और सूर्य भीषण कान्ति है ।।

पहले कांति-पुंज देखा, व्यक्त आकृति देह-धर ।
फिर पुरूष है शांत कोई, अंत में श्री वीर-वर ।।

प्रथम देवों ने अचित्त पुरूषों से नभ सुरभित किया ।
फिर प्रभु की वचन-वृष्टि ने हृदय प्रशमित किया ।।

वाणी कल्याणी तुम्हारी सकल-भाषा-रूप-धर ।
सर्व ऋद्धि-सिद्धि-दायक शांति-कर और भ्रान्ति-हर ।।

श्वेत चामर ढुलते जैसे चन्द्र हो या क्षीर हो ।
शुक्ल-ध्यानी आप हो सर्वज्ञ हो महावीर हो ।।

इन्द्र और मुनियों के द्वारा स्तुत है भामण्डल छवि ।
मोह तम का हरण करते कैसे तुल्य हो रवि ।।

गगन में दुन्दुभि बजी है आओ और ले लो शरण ।
कर्मभट-जेता प्रभु के धन्य है पावन चरण ।।

चन्द्र-उज्ज्वल छत्रत्रय संदेश देते श्रेष्ठ हैं ।
रत्नत्रय महावीर प्रभु के श्रेष्ठ हैं और ज्येष्ठ हैं ।।

आपके पावन चरण जिस भी धरा पर पड़ गए ।
भूमि वह समतल बनी और कल्पतरू से उग गए ।।

ध्वनि वे गुणगण यश व प्रभुता भाव-समता दिव्य है।
आपका प्रत्येक पहलू श्रव्य है द्रष्टव्य है ।।

देखकर सुनकर तुम्हें है देव-गण और मनुजगण ।
डूबकर आनन्द में गद्गद् हुए करते नमन ।।

सर्व-मंगलकर व मुक्ति-दाता को मेरा नमन ।
तत्त्वों के व्याख्याता करते सर्व कर्मों का शमन ।।

सकल जीवों के दयाकर संघ-भास्कर को नमन ।
जग-शुभंकर को नमन पावन जिनेश्वर को नमन ।।

यक्ष राक्षस भूत दुष्टों से जो मिलते कष्ट हैं ।
रोग निर्धनता तेरी करूणा से होते नष्ट हैं ।।

चोर शत्रु सिंह हस्ती सर्प अग्नि आदि भय ।
आपके शुभ ध्यान से सबका ही होता पूर्ण क्षय ।।

शेर श्वापद हिंस्र जंतु डाकुओं से व्याप्त वन ।
आपके पावन स्मरण से सुखद नन्दन जाता बन ।।

युद्ध में स्थिति हो विकट बहती रूधिर की धार हो ।
आपके शुभ नाम से ही शान्ति का संचार हो ।।

ऋद्धि-सिद्धि दाता है श्री वीर का पावन स्तवन ।
कल्प तरूवर सेवा करता मिलता चिंता-मणि रतन ।।

श्री वर्धमान के नाम से गूंथी गई माला विमल,
शुद्ध गुण-पुष्पों से शोभित कीर्ति से सुरभित सकल,

'घासीलाल मुनि' ने इसको है बनाया भाव से,
जो इसे पढ़ता उसे लक्ष्मी है वरती चाव से ।।

❖❖

वीर-स्तुति

- उपाध्याय अमर मुनि

तर्ज : तुम तरण-तारण.....

साधुजन, ब्राह्मण, गृहस्थित लोग मिलते जब कभी,
पूछते हैं अन्य मत के मानने वाले सभी।
कौन है वह सत्पुरूष? जिसने कि निश्चय ज्ञान कर,
पूर्ण अनुपम धर्म बतलाया जगत-कल्याण-कर ।।1।।

ज्ञातनन्दन वीर का कैसा विलक्षण ज्ञान था?
और दर्शन-शील कैसा शुद्ध था, असमान था?
आप भगवन्! जानते हैं ठीक-ठीक बताइए,
जो सुना, निश्चय किया, वह मर्म सब समझाइए ।।2।।

आत्म-दर्शी खेद के ज्ञाता, महामुनि वीर थे,
कर्मदल के नाश करने में कुशल, अतिधीर थे।
ज्ञान-दर्शन था अनन्त, अनन्त कीर्ति-वितान था,
नयन-पथ-गत लोक-पति का धर्म, धैर्य महान था ।।3।।

विश्व के त्रस और स्थावर जीव सब निज ज्ञान में,
देखकर, सिद्धान्त नित्या - नित्य का रख ध्यान में।
वीर स्वामी ने अहिंसा धर्म का वर्णन किया,
द्वीप-सम तिहुँ-जग-हितंकर साम्य तत्त्व बता दिया ।।4।।

सर्वदर्शी सर्वज्ञानी जिन बने कील जीत कर,
पूर्ण-शुद्ध-चारित्र, आत्म-स्वभाव में रत धीर-वर।
लोक में सब से अनुत्तर थे सुधी, अपरिग्रही,
सर्वविध-भय-शून्य, आयुष्कर्म का बन्धन नहीं ।।5।।

श्रेष्ठमति मंगलमयी, प्रतिबन्ध-शून्य विहार था,
पार भवसागर किया, अविचल अदम्य विचार था।
ज्ञान-ज्योति अनन्त सूर्य-समान तेजस्वी प्रवर,
वर विरोचन-तुल्य चमके अन्धकार विनाश कर ।।6।।

श्री ऋषभ जिन आदि-चालित श्रेष्ठ धर्म विधान के,
नेता, मनन-कर्त्ता, महासागर अलौकिक ज्ञान के।
गोत्र से काश्यप, अतीव प्रभावशाली इन्द्र-सम,
देव-गण के पूज्य नेता वीर थे उत्कृष्ट-तम ।।7।।

जिस प्रकार अपार सागर वह स्वयंभूरमण है,
त्यों अखिल विज्ञान में वह वीर सन्मति श्रमण है।
कर्म-युक्त, कषाय से निर्लिप्त, धन्य पवित्रता,
देव-पति श्री शक्र-सम द्युति की अनन्त विचित्रता ।।8।।

शक्ति से प्रतिपूर्ण भूधर-श्रेष्ठ मेरू-समान थे,
देव-गण को मोदकारी, दिव्य-ज्योति निधान थे।
सत्य, शील, दया, क्षमा, धृति आदि गुण-भंडार थे,
शुद्ध पद की भव्य शोभा के प्रवर अवतार थे ।।9।।

लाख योजन का महीधर मेरू जग-विख्यात है,
तीन काण्डों से रूचिर, पण्डक ध्वजा-सम ज्ञात है।
भूमि से नव-नवति योजन सहस्र ऊँचे लोक में,
और एक हजार योजन पूर्ण नीचे लोक में ।।10।।

भूमि-तल से गगन-तल को स्पर्श करता है खड़ा,
सूर्य-चन्द्र प्रदक्षिणा करते, लगे सुन्दर बड़ा।
नन्दनादिक वन मनोहर, स्वर्ण जैसी कान्ति है,
स्वर्ग-पति देवेन्द्र भी पाता यहाँ विश्रान्ति है ।।11।।

तप्त स्वर्ण - समान पीला वर्ण शोभावान है,
शब्द-गुंजन का जहाँ विस्तार दिव्य महान है।
विश्व के सब पर्वतों में श्रेष्ठतम गिरिराज है,
दीप्त भौम-समान उज्जवल तेज का शुभ राज है ।।12।।

भूमि-तल के मध्य में स्थित है नगेन्द्र सुमेरूवर,
सूर्य-जैसा शुद्ध तेजोराशि से युत अति प्रखर।
क्या मनोहर रंग मणियों का विचित्रित सोहता?
दशा दिशा-द्योतक किरण का पुंज जग का मोहता ।।13।।

क्या अधिक कहना सुदर्शन मेरू की जो दीप्ति है,
वीर स्वामी की वही उज्ज्वल मनोहर कीर्ति है।
ज्ञातपुत्र महातपोधन वीर सर्व-महान थे,
ज्ञान, दर्शन, शील, यश, शुभ जाति में असमान थे ।।14।।

।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः ।।

दिव्य आशीर्वाद

राष्ट्रसंत, उत्तर भारतीय प्रवर्तक, अनंत उपकारी

प.पू. दादा गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.सा.

अखिल भारतीय श्रुताचार्य गुरु अमर संयम अमृत वर्ष 2024-25 के धार्मिक-सामाजिक एवं जनकल्याणकारी संभावित कार्यक्रमो की वार्षिक रूप रेखा

प्रेरक

दक्षिण सूर्य, प्रखर वक्ता प.पू. गुरुदेव

डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा. 'अमर शिष्य'

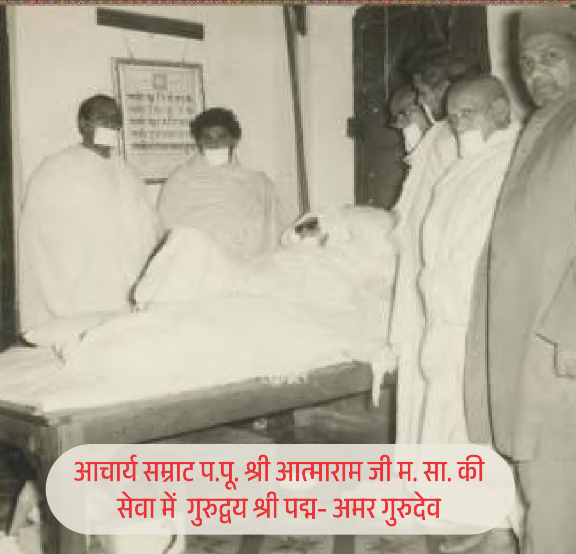

आचार्य सम्राट प.पू. श्री आत्माराम जी म. सा. की सेवा में गुरुद्वय श्री पद्म- अमर गुरुदेव

आचार्य आनंद भगवन् के संग गुरुदेव

आगम वाचना प्रदान करते श्री पद्म गुरुदेव

आचार्य श्री देवेंद्र मुनि जी म. सा. के साथ

युवाचार्य श्री शिव मुनि जी को आशीर्वाद स्वरूप शास्त्र भेंट कराते हुए गुरुदेव

नागरिक अभिनंदन में उमड़ा जन सैलाब

जीवन परिचय

युग प्रवर्तक, श्रुताचार्य, साहित्य सम्राट, वाणी भूषण
प.पू. आराध्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा.

उत्तर भारतीय प्रवर्तक प.पू. गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा. श्रमण संघ के एक देदीप्यमान शुभ नक्षत्र थे। आपका जन्म अविभाजित भारत के क्वेटा (ब्लूचिस्तान) में भादवा सुदी पंचमी विक्रम सम्वत् 1993 (तदानुसार ईस्वी सन् 1936) को एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय परिवार में हुआ। बालक अमर ने बचपन में भारत-पाकिस्तान को विभाजित होते देखा। वे श्रद्धानिष्ठ पिता श्री दिवानचन्द जी मल्होत्रा और श्रद्धाशील माता श्रीमती बसन्ती देवी जी के साथ क्वेटा से विस्थापित हो भारत आए। संयोगवश अम्बाला रेलवे स्टेशन पर अपने जन्मदाता माता-पिता से बिछुड़ गए। जब प्लेटफॉर्म पर उदास और निराश बैठे हुए थे, तब लुधियाना निवासी एक जैन श्रावक ने बालक अमरनाथ को अकेले बैठे देखा। उन्होंने बालक की व्यथा-कथा सुनी तो दयालु श्रावक ने पुत्रवत् अनुराग बरसाते हुए बालक को अपने साथ ले लिया।

श्रावक जी, आचार्य सम्राट प.पू. श्री आत्माराम जी म.सा. के प्रति गहन श्रद्धा रखते थे। वे बालक अमर को आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में लुधियाना के रूपा मिस्त्री गली स्थित जैन स्थानक में ले गए। संयोगवश उस दिन महाश्रमणी श्री सीता जी म.सा. की सुशिष्या साध्वीरत्ना श्री महेन्द्रा जी म.सा. का दीक्षोत्सव था। दीक्षा महोत्सव देख बालक अमर की मनोभूमि पर विरक्ति के भाव अंकुरित हुए। वे आचार्यश्री का प्रवचन श्रवण कर संबोधि को उपलब्ध हुए। बालक ने दीक्षा लेने का संकल्प लिया।

आत्मीय निवेदन

परमादरणीय चतुर्विध सकल श्रीसंघ,
(पूज्य साधु-साध्वी जी महाराज एवं श्रावक-श्राविका जी)

यथायोग्य वंदन, सादर स्नेह स्मरण!

श्रुताचार्य पूज्य प्रवर्तक श्री अमर गुरुदेव के ऋण से कुछ अंशों में उऋण होने का अवसर है...

गुरु अमर संयम अमृत
वर्ष 2024-2025

आईए इस अवसर पर गुरुदेव श्री जी के जिनशासन प्रभावना के मिशन में तन-मन-धन से जुड़ कर अपनी गुरुभक्ति का परिचय दें। ताकि गुरुदेव श्री जी का यह 'संयम अमृत वर्ष' और अधिक उद्देश्यपूर्ण एवं स्मरणीय बनाया जा सके।

स्नेहाकांक्षी
- डॉ. वरुण मुनि
'अमर शिष्य'

हाथों में थामे हाथ कदम दर कदम साथ श्री पद्म अमर गुरुदेव

श्री अमर गुरुदेव की विहार सेवा करते दक्षिण सूर्य डॉ. श्री वरुण गुरुदेव

सचित्र जैन आगम-विमोचन समारोह की झलकियाँ

उत्तर भारत केसरी के पद से गुरुदेव श्री को अलंकृत करते हुए

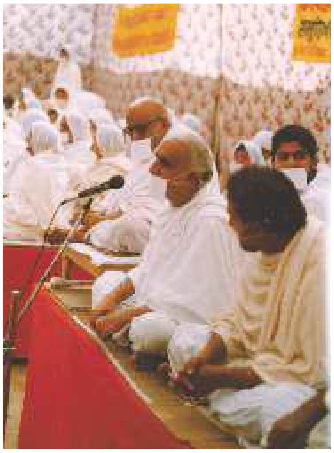

ध्वजारोहण के अवसर पर मंगलपाठ प्रदान करते हुए श्रीपद्म गुरुदेव, साथ हैं श्री अमर गुरुदेव

सचित्र जैन आगम-विमोचन समारोह की झलकियाँ

दीक्षा

दिव्यद्रष्टा आचार्यश्री ने इस विलक्षण बालक को अपने अन्तेवासी पौत्र सुशिष्य भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.सा. के वरदहस्त में सौंपते हुए कहा-भण्डारी जी ! यह बालक श्रमण धर्म अंगीकार करके एक दिन जैन संस्कृति का महान नायक बनेगा। इस कोहिनूर हीरे को बड़े ध्यान से तराशना, समय आने पर यह जिन शासन के मुकुट में शोभायमान होगा। आपने विक्रम सम्वत् 2008 (तदानुसार ईस्वी सन् 1951) भादवा सुदी पंचमी के शुभ दिन सोनीपत मण्डी (हरियाणा) में जैन मुनि दीक्षा ग्रहण की। आप राष्ट्र सन्त उत्तर भारतीय प्रवर्तक प.पू. भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य बने। संयम ग्रहण के साथ ही गंभीर तलस्पर्शी ज्ञानाभ्यास और ध्यानाभ्यास के क्षेत्र में अहर्निश ऊर्ध्वारोहण करते हुए आपने एक अनुशासनप्रिय सुविनीत शिष्य के रूप में ख्याति प्राप्त की और हम देख सकते हैं कि आचार्य श्री जी की यह भविष्यवाणी वास्तव में पूर्ण रूपेण चरितार्थ हुई।

गुरु के कुशल निर्देशन में श्री अमर मुनि जी महाराज ने भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का अगाध अध्ययन किया। वे कुशल प्रवक्ता थे। जनमानस उन्हें 'वाणी के जादूगर' के रूप में सम्मानित करता था। वे साधक, सर्जक और महान संघटक थे। अपनी स्पष्टवादिता एवं अनुशासन प्रियता के लिए वे हमेशा याद किये जाएंगे। संघरथ के कुशल सार्थवाही श्री अमर मुनि जी म.सा. का कद इतना ऊँचा था कि उन्होंने कभी पद की आकांक्षा नहीं रखी, अपने गुरुदेव को ही सभी पद और अलंकरण समर्पित किए।

प.पू. युगप्रधान आचार्य श्री शिव मुनि जी म.सा.ने सस्नेह आग्रह करके सन् 2003 में उन्हें उत्तर भारतीय श्रमण संघ का नेतृत्व करने को कहा। चतुर्विध संघ के विशिष्ट आग्रह को वे टाल नहीं पाये। श्रमण संघ की उत्तर भारतीय श्रमण परम्परा में आप प्रवर्तक जैसे गरिमा-महिमा मण्डित पद से शोभायमान हुए। अपने गुरु के नाम से आपने कई संस्थाओं की स्थापना की। इनमें प्रमुख हैं - पद्म धाम, पद्म प्रकाशन (नरेला मण्डी, दिल्ली), गुरु पद्म ज्ञान मन्दिर (अनेक क्षेत्रों में), गुरु पद्म जैन आई हॉस्पिटल (पश्चिम विहार, दिल्ली), गुरु पद्म जैन सहायता कोष (विभिन्न क्षेत्रों में), गुरु पद्म जैन साधना केन्द्र (मानसा मण्डी, पंजाब), गुरु पद्म जैन चैरिटेबल फिजियोथेरेपी हॉस्पिटल (मण्डी निहाल सिंह वाला, पंजाब तथा श्री गंगानगर, राजस्थान) आदि।

युग प्रवर्तक श्रुताचार्य साहित्य सम्राट गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा. ने संयम साधना के साथ-साथ सर्जना के कई कीर्तिमान स्थापित किये। उनके सारस्वत पाणिपद्मों से जैनागमों का सचित्र संपादन हुआ। यह अवदान युग-युगान्तरों तक एक कीर्ति शेष स्मारक-सा बना रहेगा। उन्होंने जैनागमों के सम्पादन के अतिरिक्त अन्य कई कृतियां रचीं। इनमें प्रमुख हैं - श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती) सूत्र (चार भाग-ब्यावर से), श्री सूत्रकृतांग सूत्र (दो भाग), प्रश्न व्याकरण सूत्र, जैन तत्व कलिका, जैन योग सिद्धान्त और साधना आदि।

वे जैनागमों के अंग्रेजी अनुवादन करने से विश्व विख्यात हुए। अपने सुदीर्घ साधना काल में कई योग्य शिष्यों को जैनेन्द्रिय (दीक्षा) महा सम्पदा प्रदान की। आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. की श्रुत सम्पदा को विस्तार देने वाले इस भगीरथ व्यक्तित्व का 13 फरवरी, सन् 2013 वसन्त पंचमी के दिन लुधियाना, पंजाब में संथारा-समाधि सहित सिविल लाईन, जैन स्थानक में महाप्रयाण हुआ। आज वे सदेह भले ही इस असार संसार में नहीं हैं पर अपने नाम के अनुरुप लाखों अनुयायियों के हृदयों में सदैव अमर रहेंगे।

प्रस्तौता : डॉ. वरूण मुनि 'अमर शिष्य'

विभिन्न मुद्राओं में
महामहिम परम पूज्य श्री पद्म-अमर गुरुदेव

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः ।।

अखिल भारतीय श्रुताचार्य गुरु अमर संयम अमृत वर्ष (2024-25)

महामहोत्सव समिति

दिव्य आशीर्वाद

एक भवावतारी आचार्य प्रवर प. पू. श्री जयमल जी म.सा.
चमत्कारी महापुरुष स्वामी श्री रुपचन्द्र जी म.सा.
आगम रत्नाकर आचार्य सम्राट प. पू. श्री आत्माराम जी म.सा.
राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट प. पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.
साहित्य मनीषी आचार्य सम्राट प. पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा.
कर्नाटक गजकेसरी घोर तपस्वी श्री गणेश लाल जी म.सा.
मरुधर केसरी श्रमण सूर्य प. पू. प्रवर्तक श्री मिश्रीमल जी म.सा.
संस्कृत-प्राकृत विशारद पंडितरत्न प. पू. श्री हेमचन्द्र जी म.सा.
राष्ट्रसंत उत्तर भारतीय प्रवर्तक अनंत उपकारी प.पू. गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.सा.
सेवारत्न गुरुभ्राता प.पू. श्री सुयोग्य मुनि जी म.सा.

मंगल आशीर्वाद

युगप्रधान आचार्य सम्राट
ध्यानगुरु, तप सूर्य
प.पू. डॉ. श्री शिव मुनि जी म.सा.

मार्गदर्शक

श्रमण संघीय युवाचार्य, प्रज्ञा महर्षि
प.पू.श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

दिशा निर्देशक

विद्यावाचस्पति प्रवर्तक प्रवर
प.पू. श्री सुभद्र मुनि जी म.सा.

मुख्य संयोजक

संघ सेतु उपाध्याय प्रवर
प.पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा.

कृपा दृष्टि

उपाध्याय प.पू. श्री विशाल मुनि जी म.सा.
उपाध्याय प.पू. श्री रमेश मुनि जी म.सा.
उपाध्याय प.पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा.
उपाध्याय प.पू. श्री प्रवीणऋषि जी म.सा.
उपाध्याय प.पू. श्री गौतम मुनि जी म.सा.
प्रमुख मंत्री प.पू. श्री शिरीष मुनि जी म.सा.
मंत्री प. पू. श्री कमल मुनि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री दिनेश मुनि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री विनय मुनि जी म.सा. 'भीम'
उप प्रवर्तक प.पू. श्री सुव्रत मुनि जी म.सा.
उप प्रवर्तक प.पू. श्री पंकज मुनि जी म.सा.

अमी वृष्टि

प्रवर्तक प.पू. श्री कुंदनऋषि जी म.सा.
प्रवर्तक प.पू. श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.
प्रवर्तक प.पू. श्री राजेन्द्र मुनि जी म.सा.
प्रवर्तक प.पू. श्री सुकन मुनि जी म.सा.
प्रवर्तक प.पू. श्री विजय मुनि जी म.सा.
प्रवर्तक प.पू. श्री आशीष मुनि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री सुरेश मुनि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री तारकऋषि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री रमणीक मुनि जी म.सा.
सलाहकार प.पू. श्री राम मुनि जी म.सा. 'निर्भय'
उ.भा. गौरव प.पू. श्री पीयूष मुनि जी म.सा.

स्नेह सृष्टि

प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदना जी म. सा.
प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सरिता जी म. सा.
प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभा जी म. सा.
प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया महासती श्री सुधा जी म. सा.
प्रवर्तिनी परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवर जी म. सा.

प्रेरक

दक्षिण सूर्य ओजस्वी प्रवचनकार प.पू.गुरूदेव
डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा. 'अमर शिष्य'

विशेष सहयोगी

गुरु पद्म-अमर शिष्य परिवार
परम पूज्या गुरु पद्म-अमर श्रमणी परिवार

।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथाय नमः ।।

गुरु अमर संयम अमृत वर्ष - 2024-25 के धार्मिक-सामाजिक एवं जन कल्याणकारी संभावित कार्यक्रमों की वार्षिक रूपरेखा

शुभारम्भ : 8 सितंबर, 2024

पहले आओ, पहले पाओ...

जो संघ हमें नाम, फोटो, विडियो भेजेंगे, उन संघों को पुरस्कार की राशि भेज दी जाएगी। ऐसे कार्यक्रम प्रतियोगिता के माध्यम से चलाए जाएं, जिससे अधिक से अधिक मंडल जुड़ें व धर्म धर्म प्रभावना हो ।

सितंबर माह के कार्यक्रम

(1) **गौसेवा : युवा वर्ग के द्वारा**
9 सितंबर 2024, सोमवार को 75 जगह पर एक साथ गौसेवा हो। दान का एक-सा कार्यक्रम हो। उसकी रिपोर्ट संघ/संस्था द्वारा 15 सितंबर 2024 तक प्रसारित की जाए । उसके पश्चात 25 सितंबर को उसका परिणाम आएगा। तीन मुख्य पुरस्कर और 10 प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।

(2) **तपस्वी बहुमान :**
मासखमण या उससे ऊपर वाले तपस्वी का सम्मान। शॉल, माला व रजत मुद्रा द्वारा 'गुरु अमर तपोमूर्ति अलंकरण' से सम्मानित किया जाए।

अक्टूबर-2024

मानव सेवा :

(1) अन्न महाप्रसादम् : गुरु पदम जन्म जयंति के पावन अवसर पर प्रत्येक संघ द्वारा एक हजार लोगों के लिए अन्न प्रसादम् (विशाल भण्डारा) । संपूर्ण भारतवर्ष में 75000 लोगों के लिए अन्न प्रसादम् (विशाल भण्डारे) का आयोजन करें। प्रत्येक संघ/संस्था/गुरुभक्त 1000 लोगों के लिए अन्न प्रसादम् (भण्डारा) आयोजित करें ।

(2) मानव सेवा के कार्य - श्राविका वर्ग से संबंधित हर संघ कम से कम 75 जरूरतमंद परिवारों या व्यक्तियों को खाने योग्य चीजोंअथवा राशन का वितरण करें।

(3) छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति दें या उच्च शिक्षित विद्यार्थियों का सम्मान करें (प्रमाण-पत्र एवं सम्मान राशि के द्वारा) ।

(4) दिव्यांग भाई-बहनों के लिए शिविर का आयोजन करें।

नवंबर-2024

त्यौहार सेवा :

(1) जरूरतमंद या अनाथ, दिव्यांग, दृष्टिहीन बच्चों को मिठाई का वितरण करें ।

(2) गुरुदेव के नाम का छोटा-सा फोटो या 'जियो और जीने दो' नारे से युक्त टी शर्ट का वितरण करें।

(3) पाठशाला के बच्चों को **एक दिन की पिकनिक, गुरु अमर के नाम** (पूज्य अमर गुरुदेव के भजन, प्रवचन, जीवनी सुनाकर प्रेरणा दें)। पिकनिक की रिपोर्ट मंगवाकर उस पाठशाला को पुरस्कार दिया जाए।

दिसंबर-2024

वस्त्र दान :

(1) 7500 गर्म कंबल आदि का वृद्धाश्रम आदि में वितरण किया जाए । (प्रत्येक संस्था 100 कंबल बांटे)

(2) 1008 बार 'ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय नमः' लेखन स्पर्धा राष्ट्रीय स्तर पर करें। उसकी पुस्तक बनाएं। नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध कराएं (300 चातुर्मास 100 किताबें = 30,000 किताबें)
पहला पुरस्कार 11,000/-
दूसरा पुरस्कार 7,100/-
तीसरा पुरस्कार 5,100/-
एवं अनेक प्रोत्साहन पुरस्कार।

जनवरी-2025

घर सजाओ - गुरु अमर के नाम

सभी प्रतियोगियों को अपने घर को गुरु अमर के नाम से सजाना है। जो आगम और धार्मिक चीजें गुरुवर को पसंद थीं, उन्हें सजाकर हमें उसका वीडियो बनाकर भेजें। उसकी प्रतियोगिता का आयोजन होगा। प्रविष्टि शुल्क रखा जाएगा। पुरस्कार काफी बड़े होंगे।

फरवरी-2025

नो वाइन, नो वैलेंटाइन - ओनली गुरु इज माइन

नशामुक्ति और व्यसनमुक्ति पर कार्यशाला का आयोजन करें।

गुरु अमर नमन यात्रा का आयोजन

दीक्षा भूमि (सोनीपत मंडी, हरियाणा) से पुण्य भूमि (नरेला मंडी, दिल्ली) तक। 108 युवक-युवतियां जैन ध्वज लेकर दुपहिया वाहन (टू व्हीलर) पर।

मार्च-2025

गुरू अमर आरोग्य चिकित्सा शिविर

इसमें आरोग्य विषयक 75 शिविरों का आयोजन किया जाए (रक्तदान शिविर, नेत्र शिविर, स्वास्थ्य जांच शिविर आदि)

अप्रैल-2025

गुरू अमर समर कैंप :

ग्रीष्मकालीन शिविर (समर कैंप) का आयोजन। बच्चों और महिलाओं के लिए पाठशाला में ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन करें।

मई-2025

सेवक सम्मान दिवस :

1 मई, 2025 (गुरु पदम पुण्य स्मृति दिवस पर)

प्रत्येक स्थानक, मंदिर, उपाश्रय के सेवक-सेविका भाई-बहनों का बहुमान (शॉल, माला, परिधान व सम्मान राशि से)

जून-2025

- हर शहर में 75 छातों (अंब्रेला) का वितरण, जिस पर श्री अमर गुरूदेव का नाम, लोगो और 'मानवीय आहार-शाकाहार' नारा लिखा हो।
- विश्व पर्यावरण दिवस पर 7500 वृक्षारोपण (प्रत्येक संस्था 100 पेड़ लगाए)

जुलाई-2025

चातुर्मास प्रारंभ : गुरु अमर के नाम पर 75 पच्चक्खाण की सूची बने। ऑनलाइन फॉर्म के जरिए सभी अपना नाम दर्ज करें और ऑनलाइन/ ऑफलाइन एक साथ पच्चक्खाण स्वीकार करें।

अगस्त 2025

गुरू अमर सेवा किट : गुरु अमर भक्ति के लिए 75 गावों/शहरों के अनाथ आश्रमों, कुष्ठ आश्रमों व वृद्धाश्रमों में गुरु अमर के नाम से आवश्यक वस्तुओं की किट बनाकर वितरण करें ।

सितम्बर 2025

(1) गुरु अमर संयम अमृत वर्ष का समापन समारोह एवं गत वर्ष के कार्यक्रमों की वार्षिक रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण ।

(2) गुरु अमर सेवा पुरस्कार से समर्पित परिवारों को सम्मानित करें, (कम से कम 75 परिवारों को)

(3) जैन समाज के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का सम्मान करें ।

आसानी से करने योग्य 75 पच्चक्खाण की सूची

1) नवकारसी या पोरसी
2) ऊनोदरी तप यानि भूख से कम खाना
3) रात्रिभोजन त्याग
4) सचित्त (कच्चा पानी, साबुत फल व हरी सब्जी) का त्याग या मर्यादा
5) रोज द्रव्य-मर्यादा करना, यथाशक्ति 20/30/40/50
6) पिक्चर (फिल्म/मूवी) नहीं देखना
7) टी. वी. 24 घंटे में सिर्फ एक घंटा ही देखना
8) शराब व मांसाहार के त्याग की दूसरों को प्रेरणा देना
9) प्लास्टिक (पॉलीथीन) बैग अस्वीकार करना
10) निजी वाहन का प्रयोग नहीं करना (सार्वजनिक वाहन का प्रयोग किया जा सकता है)
11) रोज लीलोती (हरी सब्जी) की मर्यादा 5/10/15
12) विमान (हवाई जहाज) में नहीं बैठना
13) जलयान/नाव में नहीं बैठना
14) हरी पत्ती या फूल नहीं तोड़ना
15) रोज एक सामायिक करना
16) दैनिक, पाक्षिक या पांच तिथियों पर प्रतिक्रमण करना
17) बेकरी उत्पाद का त्याग
18) ऊपर से नमक नहीं लेना
19) झूठा (जूठन) नहीं छोड़ना
20) शीलव्रत का पालन
21) स्नान में पानी की मर्यादा
22) अष्टमी/चतुर्दशी को एकासना/आयंबिल/उपवास का लक्ष्य
23) पांचों तिथि लिलोती (हरी सब्जी) का त्याग
24) शादी के अवसर पर सामूहिक भोज (रिसेप्शन) दिन में ही रखना
25) लेन-देन में प्रामाणिक रहना
26) रोज दस मिनट स्वाध्याय अथवा धार्मिक पुस्तक के पांच पृष्ठ पढ़ना
27) रोज गाय/कुत्ते को घास या रोटी देना
28) साधर्मी बंधुओं का सहकार-सहयोग
29) चाय/कॉफी का त्याग
30) सोना/चांदी खरीदने की मर्यादा
31) मिठाई/नमकीन का त्याग
32) अचार का त्याग
33) मधु (शहद) का त्याग
34) लूणी (मक्खन) का त्याग
35) फास्ट फूड व पैकेज्ड फूड का त्याग
36) स्थानक/मंदिर/उपाश्रय में नंगे पांव जाना
37) दुर्घटनाग्रस्त को चिकित्सालय पहुंचाना
38) रुग्ण/घायल पशु-पक्षी को पशु-चिकित्सालय पहुंचाना
39) प्रतिदिन प्रात:काल सबको जय जिनेंद्र बोलना
40) रोज अपने हाथों से एक सत्कार्य की भावना भाना
41) क्रोध व कटु शब्द का त्याग
42) लिपिस्टिक, नेलपेंट (नेल पोलिश) का त्याग
43) भोजनोपरांत थाली धोकर पीना।
44) रात्रि 10 बजे से सुबह 5 बजे तक मोबाइल देखने का त्याग
45) भोजन के समय मोबाइल पर बात करने और टी. वी. देखने का त्याग
46) स्वच्छता के नियमों का पालन करना (कचरा निर्धारित स्थान पर डालना)
47) बड़ों की सेवा करना
48) जुआ, सट्टा और पैसे पर ताश खेलने का त्याग
49) होटल का त्याग
50) सामूहिक रात्रिभोज का त्याग

51) तपस्या व सत्कार्य की अनुमोदना करना
52) पापकार्य की अनुमोदना नहीं करना
53) किसी की लाचारी का शोषण नहीं करना
54) तंबाखू, गुटका व धूम्रपान का त्याग
55) स्वीमिंग पुल (वाटर पार्क)में स्नान का त्याग
56) बड़ों को रोज प्रणाम करना
57) प्रात: उठने पर कम से कम पांच नवकार का सुमिरन करना
58) रोज तीन वंदना करना
59) रोज नवकार मंत्र की एक माला फेरना
60) रोज भाव प्रतिक्रमण करना
61) भ्रूणहत्या (गर्भपात) न करना, न करवाना और न अनुमोदन करना।
62) जन्मदिन पर केक नही काटना, मोमबत्ती नहीं बुझाना
63) कांटेदार चम्मच से भोजन नहीं करना
64) ट्रेन या बस में रुग्ण, वृद्ध या गर्भवती को जगह (सीट) देना
65) दूध/दही/घी खुला नहीं छोड़ना
66) पटाखे नहीं बजाना (आतिशबाजी नहीं करना)
67) कैसी भी परिस्थिति में आत्महत्या नहीं करना
68) धर्मस्थान में प्रपंच (निंदा, चुगली) नहीं करना
69) किसी के साथ विश्वासघात नहीं करना
70) पोर्न कन्टेंट देखने एवं अश्लील साहित्य पढ़ने का त्याग
71) दीक्षार्थी को दीक्षा में अंतराय नहीं देना
72) घुड़ सवारी, ऊँट सवारी, पशु सवारी का त्याग
73) परफ्यूम/सेंट का त्याग
74) सचित्त फूलों के उपयोग का त्याग
75) शुद्ध रेशम के वस्त्र तथा चमड़े व हाथीदांत की वस्तु का त्याग

नोट

इन नियमों में से एक या एक से अधिक प्रत्याख्यान आप गुरु अमर संयम अमृत वर्ष 2024-25 के अंतर्गत यथाशक्ति (एक दिन, एक माह, एक वर्ष या निर्धारित अवधि के लिए) ग्रहण कर सकते हैं।

कार्यक्रम के फोटो व विडियो इस नम्बर पर भेजें... 74170 00878

प्रेरक एवम दिशा निर्देशक

दक्षिण सूर्य, प्रखर वक्ता, परम पूज्य
गुरुदेव डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा.
'अमर शिष्य'

आयोजक

अखिल भारतीय श्रुताचार्य
श्री गुरु अमर संयम अमृत वर्ष आयोजन समिति

* महेन्द्र जैन
  चेयरमैन (नरेला, दिल्ली)
* आनंदमल छल्लाणी
  राष्ट्रीय अध्यक्ष (चैन्नई, तमिलनाड)
* रामनिवास जैन
  राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष (रोहिणी, दिल्ली)
  मो. 98112 95715
* बाबु शेठ बोरा
  राष्ट्रीय महामंत्री (अहमदनगर, महाराष्ट्र)
  मो. 92264 72284
* रवि जैन
  राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष (अरिहंत नगर, दिल्ली)
  मो. 98100 04663
* लहरसिंह सिरोया
  वरिष्ठ मार्गदर्शक (राज्यसभा सदस्य, बैंगलोर)
* सुधीर जैन
  राष्ट्रीय मार्गदर्शक (दीपाली एन्कलेव, दिल्ली)
  मो. 73117 76446

एवम समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण...

विशेष सहयोगी

श्री वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ (रजि.)
श्री राजाजीनगर, बैंगलोर

सभी कार्यक्रमो की विस्तृत जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें

रुचिरा ताई सुराना	डॉ. दिलीप धींग
मुख्य संयोजिका (मुंबई, महाराष्ट्र)	संयोजक (चैन्नई, तमिलनाड)
98200 04079	99520 48107

तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी गुरुदेव श्री जी से आशीर्वाद लेते हुए

तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी भजनलाल जी
गुरुद्वय से मार्गदर्शन ग्रहण करते हुए

**पूज्य श्री पद्म-अमर गुरुदेव की
सद् प्रेरणाओं से सैंकड़ों जन कल्याणकारी
संस्थाओं का निर्माण हुआ।**

तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. साहिब सिंह जी वर्मा
दिल्ली प्रदेश की ओर से वंदन-अभिनंदन करते हुए

दीक्षा मंत्र प्रदान करते हुए पूज्य गुरुदेव

दीर्ध पर्वत-जाति में ज्यों निषध की है श्रेष्ठता,
और वलयाकार गिरि में रूचक की है ज्येष्ठता।
वीर स्वामी त्यों जगत में श्रेष्ठ प्रज्ञावान थे,
विश्व के मुनिवृन्द में सब भांति पूज्य महान थे ।।15।।

कर प्रकाशित सर्व-श्रेष्ठ सुधर्म, ध्यान-स्थित हुए,
शुक्ल-ध्यान प्रधान निर्मल ध्यान में अतिरत हुए।
शुक्तल ध्यान अतीव उज्ज्वल श्वेत-स्वर्ण-समान था,
शंख-चन्द्र-समान था, मल का न एक निशान था ।।16।।

कर्म-मल को पूर्ण विधि से नष्ट कर निर्मल हुए,
लोक में सब से प्रवर लोकाग्र में अविचल हुए।
ज्ञान, दर्शन, शील का अध्यात्म-पथ अपना लिया,
सादि और अनन्त उत्तम सिद्ध का पद पा लिया ।।17।।

शाल्मली तरू-जाति में सब भाँति शोभाधाम है,
सुर-सुपर्ण कुमार की रति का सुखद विश्राम है।
काननों में श्रेष्ठ नन्दन वन जागत-विख्यात है,
ज्ञान से, वर शील से त्यों वीर जग-विख्यात है ।।18।।

मेघ-गर्जन है अनुत्तर शब्द के संसार में,
कौमुदी-पति चन्द्रमा है श्रेष्ठ तारक-हार में।
सब सुगन्धित वस्तुओं में बावना चन्दन प्रवर,
विश्व के मुनि-वृन्द में निष्काम सन्मति श्रेष्ठतर ।।19।।

सागरों में ज्यों स्वयंभू श्रेष्ठ सागर भूमि पर,
देवपति धरणेन्द्र नागकुमार - गण में उच्चतर।
सब रसों में प्रमुख रस है ईख का संसार में,
वीर मुनि त्यों प्रमुख हैं, तप के कठिन आचार में ।।20।।

हाथियों में इन्द्र का गज श्रेष्ठ ऐरावत कहा,
केशरी मृग-वृन्द में, गंगा नदी उत्तम महा।
पक्षियों में गरूड़ पक्षी वेणुदेव महान है,
मोक्ष-पथ के नायकों में ज्ञातपुत्र प्रधान है ।।21।।

शूर वीरों में यशस्वी वासुदेव अपार है,
अखिल पुष्पों में कमल अरविन्द गन्धागार है।
क्षत्रियों में चक्रवर्ती सार्व-भौम प्रधान है,
विश्व के ऋषि-वृन्द में श्री वर्द्धमान महान है ।।22।।

भोजनादिक दान में उत्तम अभय का दान है,
सत्य में निष्पाप करूणा-सत्य की ही शान है।
ब्रहाचर्य महान है तप के अखिल व्यवहार में,
ज्ञातनन्दन है श्रमण उत्तम सकल संसार में ।।23।।

देव-स्थिति में श्रेष्ठ स्थिति लवसत्तमों की है बड़ी,
स्वर्ग की परिषद् सुधर्मा सब सभाओं में बड़ी।
सर्व धर्मों में अमर निर्वाण का पद श्रेष्ठ है,
ज्ञानियों में वीर से बढ़कर न कोई ज्येष्ठ है ।।24।।

वासनाओं से रहित, भू-तुल्य सर्वाधार थे,
कर्म-राज-नाशक, अमल सन्तोष के भंडार थे।
सर्वदा उपयोग-युत, भवसिन्धु भीषण तैर कर,
वीर अभयंकर अमित ज्ञानी हुए जग-क्षेमकर ।।25।।

क्रोध, मान, तर्थव माया, लोभ का संहार कर,
आत्म-दोषों का वमन कर बन गए अरिहन्तवर।
वीर दिव्य महर्षि थे, जग में उजाला कर दिया,
पाप कृत न किया, न करवाया, न अनुमोदन किया ।।26।।

वीर स्वामी ने क्रिया अरू अक्रिया के वाद को,
पुनि विनय के वाद को, अज्ञानता के वाद को।
जान कर निष्पक्ष मति से सब स्वयं समझा दिया,
नष्ट कर अज्ञान तम, पालन सुचिर संयम किया। ।।27।।

रात्रिभोजन, कामिनी के संग का वारण किया,
दुःख के क्षय-हेतु अति ही उग्र तप का पथ लिया।
लोक अरू परलोक की सब वासनाएँ छोड़ दी,
सब प्रकार ममत्व की दृढ़ श्रृंखलाएँ तोड़ दी ।।28।।

वीर-जिनभाषित, समाहित, अर्थ पद से शुद्धतर,
धर्म पर श्रद्धान रक्खेंगे, सृजन जो श्रवण कर।
कर्मलल से मुक्त हो वे सिद्ध प्रभु बन जायेंगे,
स्वर्ग में अथवा सुरेश्वर इन्द्र का पद पायेंगे ।।29।।

❖❖

श्री आत्म गुरवे नमः	श्री हेम गुरवे नमः	श्री पद्म गुरवे नमः	श्री अमर गुरवे नमः

जैन धर्म दिवाकर उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रुताचार्य साहित्य सम्राट् वाणी के जादूगार महाश्रमण पूज्य गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा. की संक्षिप्त जीवन रेखाएं

सांसारिक नाम	- अमरनाथ
माता	- नारीरत्ना श्रद्धाशील श्रीमती बसंतीदेवी जी मल्होत्रा
पिता	- धर्मनिष्ठ सेठ श्री दिवानचंदजी मल्होत्रा
वंश एवं गोत्र	- क्षत्रिय - मल्होत्रा
जन्म भूमि	- क्वेटा बिलोचिस्तान (वर्तमान पाकिस्तान)
जन्म तिथि	- भादवा सुदी पंचमी वि: सं. 1993 (ईस्वी सन् 1936)
दीक्षा भूमि	- सोनीपत मण्डी (हरियाणा)
दीक्षा तिथि	- भादवा सुदी पंचमी वि. सं. 2008 (ईस्वी सन् 1951)
दीक्षा नाम	- जैन संत श्री अमर मुनि जी म. सा.
दीक्षा गुरु	- राष्ट्र संत, उत्तर भारतीय प्रवर्तक अनंत उपकारी गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.सा.
दादा गुरु	- संस्कृत-प्राकृत विशारद, पंडित रत्न सरलमना उप प्रवर्तक प. पू. श्री हेमचन्द्र जी म.सा.
परंपरा (संघ एवं संप्रदाय)	- श्वेताम्बर स्थानकवासी (श्रमणसंघ - पंजाब संप्रदाय)
विशेषण	- उप प्रवर्तक, हरियाणा केसरी, श्रमण संघीय मंत्री, उत्तर भारत केसरी, श्रुत वारिधि, वाणी के जादूगर, आगम दिवाकर, प्रवचन भूषण, सरस्वती पुत्र, जैनागमोद्धारक, जैन धर्म दिवाकर, उत्तर भारतीय प्रवर्तक, महाश्रमण, अध्यात्म युग पुरुष, साहित्य सम्राट, श्रुताचार्य, शासन शिरोमणि, जिनशासन कल्पतरु, आगम आप्त पुरुष, अमर आगम अनुवादक आदि।
विशेषताएँ	- अनुशासनप्रिय, महान प्रवचनकार, कुशल साहित्यकार, समय के पाबंद, जप-तप, ज्ञान-ध्यान, स्वाध्याय-साधना प्रिय, स्पष्ट वक्ता, शताधिक जनकल्याणकारी संस्थाओं के प्रणेता, सचित्र आगमों के निर्माता, अद्वितीय गुरु भक्ति, नवकार जाप, सामायिक साधना एवं व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जनजीवन में जीवन-मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों तथा सद्संस्कारों के संस्थापक।
शिष्य	- युवाप्रज्ञ, उप प्रवर्तक प. पू. डॉ. श्री सुव्रत मुनि जी म.सा. - सेवारत्न प. पू. श्री सुयोग्य मुनि जी म.सा. - उत्तर भारत गौरव सेवा सुमेरु उप प्रवर्तक प. पू. श्री पंकज मुनि जी म.सा. - तपसूर्य प. पू. श्री पुनीत मुनि जी म.सा. 'प्रिय' - सेवाप्रज्ञ, प. पू. श्री हर्ष मुनि जी म.सा. - ललित लेखक, दक्षिण सूर्य अमर शिष्य डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा.

पौत्र शिष्य	- प्रखर वक्ता ध्यान रसिक प. पू. श्री विकसित मुनि जी म.सा. - मधुर वक्ता मुनिरत्न श्री रूपेश मुनि जी म.सा. 'रजत' - सेवाभावी श्री मुदित मुनि जी म.सा. - मधुर गायक, विद्याभिलाषी श्री लोकेश मुनि जी म.सा.
उत्तर भारतीय प्रवर्तक पद	- 7 मई, 2004 से (आपका 10 लगभग वर्षों का यशस्वी प्रवर्तक पद कार्यकाल रहा)
संथारा	- प्रातः 10:55 से 1:10 तक (लगभग सवा दो घंटे का) संथारा रहा (जो कि आपने स्वतः ही ग्रहण किया।)
देवलोकगमन दिनांक	- 13 फरवरी, 2013
देवलोकगमन स्थान	- सिविल लाईन, लुधियाना (पंजाब)
पावन धाम	- पद्म धाम, नरेला मण्डी (दिल्ली)

दीक्षा हीरक जयंती पर
अभिनंदन अमर मुनीश्वर का

उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के 'संयम अमृत वर्ष' के पावन प्रसंग पर पूज्य महाश्रमण जी के संयम का अभिनन्दन! वे आत्मार्थी एवं पुरुषार्थी मुनिराज थे। श्रमण संघ की शान थे। संघ और संघाचार्य के प्रति निष्ठावान थे। उनकी श्रुत-भक्ति, प्रवचन प्रभावना, शासन-सेवा आदि अनुष्ठान सभी के लिए अनुकरणीय हैं। **- आचार्य शिव मुनि**

पंजाब परम्परा के जाने-माने मुनिराज श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. की दीक्षा हीरक जयंती का यह प्रसंग संयम के अभिनन्दन का पावन पर्व है। इस सुप्रसंग पर चतुर्विध संघ में संयम-निष्ठा प्रबल बनेगी, यही मंगल कामना करता हूँ। **- युवाचार्य महेन्द्रऋषि**

'संयमः खलु जीवनम्'। संयममय जीवन जीना ही श्रेष्ठ जीवन का लक्षण है। श्रुतसागर, श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक प.पू. श्री अमर मुनि जी म.सा. के दीक्षा हीरक पर्व पर श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी के महान संयमी जीवन का अभिनन्दन!
- वाचनाचार्य उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि

महापुरुष, जीवन-काल में भी और जीवन से विदा होने के बाद भी लोक-आस्थाओं में सदा जीवित रहते हैं। मेरे अग्रज श्रुताचार्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. भले ही एक दशक पूर्व देह से विदा ले गए, पर हमारे हृदय में वे आज भी स्नेह, श्रद्धा एवं अपनत्व का संचार कर रहे हैं। अग्रज श्री के संयम अमृत वर्ष पर - उनके संयम का, व्यक्तित्व का, उनकी श्रुत-भक्ति का भावपूर्ण अभिनन्दन! **- प्रवर्तक सुभद्र मुनि**

पंजाब में विचरण करते हुए कई बार श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के दर्शनों का अवसर मिला। वे जितने श्रुत-मर्मज्ञ थे उतने ही श्रेष्ठ और सरस प्रवक्ता भी थे। हीरक दीक्षा जयंती पर श्रुत-वारिधि महामुनिराज का अभिनन्दन! **- उपाध्याय रमेश मुनि**

आगमों के संपादन, प्रकाशन और प्रचार-प्रसार में उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. ने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया। उन्हें आगम-पुरुष कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। महामुनीश्वर की दीक्षा हीरक जयंती के प्रसंग पर हार्दिक नमन! अभिनन्दन! **- उपाध्याय जितेन्द्र मुनि**

श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. एवं मेरे गुरुदेव श्रद्धेय श्री प्रेमसुख जी म.सा. के मध्य मैत्री का घनिष्ठ संबंध था। परिणामतः मुझे एवं मेरे गुरु भ्राताओं तथा शिष्यों को भी पूज्य प्रवर्तक श्री जी से सदैव आत्मीयता मिलती रही। आज भी हृदय उनके स्नेहाशीषों से सराबोर है। संयम हीरक वर्ष पर कोटि-कोटि नमन! **- उपाध्याय रवीन्द्र मुनि**

दक्षिण सूर्य प्रिय डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा. 'अमर शिष्य' के संयोजकत्व में श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. की दीक्षा हीरक जयंती आयोजित हो रही है। पूज्य प्रवर्तक श्री जी के महान संयम और श्रुत-साधना के स्मरण का यह प्रसंग है। हम स्मरणांजलि सहित उनके महान संयम का अभिनंदन करते हैं। **- उपाध्याय गौतम मुनि**

आचार्य सम्राट पूज्य गुरुदेव श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के साथ उत्तर भारत की यात्रा करते हुए आदरणीय आत्मीय श्री अमर मुनि जी को मैंने निकट से देखा। उनके प्रवचन सुने! वे जितने सुरूप थे, उतने ही सुस्वर थे। उनकी आचार्य-भक्ति को स्मरण कर आज भी हृदय उत्फुल्ल हो उठता है। हीरक दीक्षा जयंती पर हार्दिक-आत्मिक स्मरणांजलि!

- प्रवर्तक कुन्दनऋषि

मैं अनुभव करता हूँ कि - श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. अपने गुरुमह आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म.सा. की श्रुत-सेवा परम्परा के समर्थ संवाहक थे। उन द्वारा संपादित-प्रकाशित सचित्र अंग्रेजी भाषा में अनुदित आगमों को मैंने देखा और पढ़ा है। इस दिशा में उन्होंने अद्‌भुत श्रम किया। हीरक संयम वर्ष पर महामुनीश्वर के महान संयम का अभिनन्दन! **- प्रवर्तक प्रकाश मुनि 'निर्भय'**

पहले, गुरुदेव उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म.सा. और बाद में, आचार्य सम्राट गुरुदेव श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा. के साथ पंजाब में विचरण करते हुए मुझे श्रद्धेय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के दर्शनों का अवसर प्राप्त हुआ। कालान्तर में भी अनेक बार मिलना हुआ। कहना चाहता हूँ कि वे जिनशासन के महान प्रभावक महामुनिराज थे। उनकी जुबां पर और कलम में सरस्वती का वास था। सरस्वती-पुत्र महामुनिवर की दीक्षा हीरक-जयंती पर नमन! नमन!! **- प्रवर्तक राजेन्द्र मुनि**

सन् 2000 में दिल्ली में शिवाचार्य चादर महोत्सव पर पूज्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. से मेरा विशेष परिचय हुआ। उनके व्यक्तित्व, वक्तृत्व और कर्तृत्व को निकट से देखकर हृदय प्रमोद भाव से भर गया। हर पक्ष से महनीय मुनिवर के संयम हीरक वर्ष पर सादर सश्रद्ध भावपूर्ण नमन! **- प्रवर्तक सुकन मुनि**

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है उत्तर भारत के ख्यातनामा महामुनिराज पूज्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. का हीरक संयम वर्ष (2024-25) विविध संयमीय प्रभावनाओं के साथ अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में दिवाकर-सम्प्रदाय की अनुमोदना-अभिवंदना सम्मिलित कर मैं आत्म-उल्लास की अनुभूति कर रहा हूँ। नमन!

- प्रवर्तक विजय मुनि

श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. न केवल पंजाब के बल्कि अखिल भारतवर्षीय श्रमण-परम्परा के गौरव-भाल थे। संयम-साधना, श्रुत-आराधना और शासन-प्रभावना को उन्होंने उच्च्य आयाम प्रदान किए। दीक्षा हीरक-जयंती के प्रसंग पर देवलोकों में विराजित महान आत्मा का अभिनन्दन करता हूँ। **- प्रवर्तक आशीष मुनि**

पल-पल, अहर्निश आत्म-भावों में, धर्म और शुक्ल भावों में पर्यटन करना ही श्रमण का लक्षण है और अध्यात्म-साधना का सारतत्व भी है। श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. ने इस सारतत्व को सरसता से आत्मसात् कर अपने जीवन को धन्य किया। शीघ्र वे सिद्धालय को प्राप्त हों। संयम हीरक वर्ष पर सादर नमन!

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री शिरीष मुनि

लगभग तीन दशक पूर्व जब मैंने प्रथम बार श्रुताचार्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के दर्शन किए, तो अनुभव किया कि उनका संयम और उनका श्रमणत्व शारदीय कमल की भांति निर्लेप और सुरभित है। संयमीय-सुषुमाओं से विकसित-हसित उनका व्यक्तित्व मंत्र मुग्ध बनाने वाला था! दीक्षा-हीरक जयंती पर कोटि-कोटि नमन! **- मंत्री कमल मुनि 'कमलेश'**

श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. महान शास्त्रज्ञ, तत्वज्ञ और आत्मज्ञ महामुनिराज थे। उनकी कीर्ति-कौमुदी पंजाब की सीमाओं को पार कर पूरे भारतवर्ष में तथा विश्व के कई देशों तक प्रसृत और विस्तृत हुई। ऐसे स्वनाम धन्य महामुनिराज के संयम हीरक वर्ष के प्रसंग पर पावन पाद-पद्‌मों में नमनांजलि प्रस्तुत करता हूँ।

- सलाहकार सुरेश मुनि 'शास्त्री'

शासन शिरोमणि श्रद्धेय शिवाचार्य श्री की कृपा से पंजाब में विहार करते हुए कई अवसरों पर श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के दर्शनों और उनके प्रवचनों को सुनने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ। वे श्रुत-वारिधि तो थे ही, वात्सल्य-वारिधि भी थे। उनकी वत्सलता को मैंने एवं मेरे शिष्यों ने खूब-खूब अनुभव किया। वात्सल्य-वारिधि के संयम हीरक वर्ष पुण्य पर्व पर कोटि-कोटि नमन! **- सलाहकार तारकऋषि**

सरस और प्रभावक प्रवक्ताओं में पूज्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. का कोई सानी नहीं है। अपने अमृत तुल्य प्रवचनों से उन्होंने जिनशासन की महती-महती प्रभावना की। उनकी अनुशासन-प्रियता और अपने गुरु के प्रति अगाध आस्था कमाल की थी। ऐसे युग-प्रभावक, युग-प्रधन मनीषी प्रवक्ता मुनिराज के हीरक दीक्षा पुण्य प्रसंग पर श्रद्धेय चरणों में अवनत हूँ। **- सलाहकार रमणीक मुनि**

उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रुत स्वयंभूरमण श्री अमर मुनि जी म.सा. के मैंने कई बार दर्शन किये। उत्तर भारत के सैकड़ों गांवों-शहरों में प्रवासों की अवधि में नर-नारियों से श्री अमर मुनीश्वर की कीर्ति-कथाएं निरंतर सुनता रहा हूँ। आंखिन देखी तथा कानों सुनी के आधार पर यह सुस्पष्ट तथ्य है कि प्रवर्तक श्री उच्चतम कोटि के महाश्रमण थे। वे जैन जगत के ही नहीं, जन-जन के मन में रचे-बसे मुनि थे। संयम हीरक पावन वर्ष पर शत्-शत् नमन! **- सलाहकार दिनेश मुनि**

भारतीय संस्कृति संत-प्रधान रही है। साम्य-योग का साधक ही संत होता है। इस तुला पर तोलने पर निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. संतों के सिरमोर थे, संत शिरोमणि थे, संयम के सुरीले संगीत थे, साधना के शिखरस्थ पुरुष थे। उनकी समयज्ञता, समय की परख और समयबद्धता के सभी दीवाने थे। ऐसे धर्मधुरीण श्रमणराज की दीक्षा हीरक जयंती पर पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन! अभिनंदन!

- सलाहकार विनय मुनि 'भीम'

'अमर मुनि' यह नाम किसी परिचय-दाता की अपेक्षा नहीं रखता। पूज्य प्रवर्तक श्री स्वनाम-धन्य मुनिराज थे। उनका नाम कोटि-कोटि हृदयों में श्रद्धा का स्पंदन बनकर स्पंदित होता है। सर्वप्रथम पंजाब प्रवर्तक उपाध्याय 'श्रमण' श्री फूलचन्द जी म.सा. ने उनको 'श्रुतवारिधि' विरुद से उच्चारा था। बाद में वाणी भूषण, श्रुताचार्य, प्रवर्तक आदि कितने ही विरुदों ने उनके नाम से संयुक्त हो सार्थक होना चाहा और उन्हें सार्थकता प्राप्त भी हुई। पर सच यह है कि 'अमर' को कोई उपमान संपूर्णता में बयां कर पाए, यह संभव प्रतीत नहीं होता। दीक्षा हीरक जयंती पर अकथ्य-अगेय अमर के अमर-चरणों में शत-कोटि नमन! **- सलाहकार राम मुनि 'निर्भय'**

सन् 2024-25 की अवधि में श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. की दीक्षा हीरक जयंती का आयोजन उनके शिष्यों और उपासकों द्वारा किया जा रहा है। संयम का सम्मान करने वाले सभी मुमुक्षुओं को अपने जीवन में संयमीय अनुष्ठान अपनाकर पूज्य श्री की संयम-यात्रा को नमन करना चाहिए। सकल साध्वी संघ की ओर से पूज्य प्रवर्तक श्री की उज्ज्वल संयम-यात्रा को नमन! **- प्रवर्तिनी साध्वी चंदना**

श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. श्रमण-परम्परा के देदीप्यमान महाश्रमण थे। जप, तप, ज्ञान, ध्यान, साहित्य सृजन, प्रवचन प्रभावना आदि प्रत्येक क्षेत्र में शिरोमणि थे। लोक-कल्याण के लिए समाज को प्रेरित कर उन्होंने उत्तर भारत में अस्पताल, डिस्पेंसरी, विद्यालय, पुस्तकालय, धर्म-स्थान, धर्मशाला आदि सैकड़ों संस्थाओं की स्थापना कराई। उनके ये उपकार सदैव स्मरणीय रहेंगे। उनकी सुदीर्घ निष्कलंक संयम-यात्रा का पंजाब प्रांतीय साध्वी संघ की ओर से अभिनन्दन करती हूँ। **- प्रवर्तिनी साध्वी डॉ. सरिता**

वाणीभूषण, श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. के स्वर्गारोहण को एक दशक से अधिक संयम व्यतीत होने पर भी उनकी कीर्ति-गाथाएं समाज में और जन-जन के मन में व्याप्त हैं। शासन प्रभावना और आगम-आराधना में उन द्वारा किया गया श्रम सदैव स्मरणीय और वंदनीय रहेगा। पाद-पद्मों में प्रणतांजलि! **- प्रवर्तिनी साध्वी सुप्रभा**

प्रभावशाली श्रमण-परम्परा में श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. महाप्रभावी श्रमणराज थे। सितारों में जो स्थान सूर्य का है, मुनियों के मध्य वही स्थान पूज्य श्री का है। उनके संयमीय तेज से आज भी संघ तेजोद्दीप्त है। वे संयम के सजग प्रहरी थे। सामूहिक दीक्षाओं की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए शताधिक मुमुक्षुओं को उन्होंने संयम का महादान दिया। पूज्य श्री की हीरक दीक्षा जयंती पर उनके कालजयी उज्ज्वल संयम को नमन! **- प्रवर्तिनी साध्वी सुधा**

पारस में अरु संत में, बड़ा अंतरो जान।
वो लोहा सोना करे, वो करे आप समान।।

श्रुताचार्य, उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.सा. ने अपने आचार, विचार और सदुपदेशों से सहस्रों लोगों को उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग में स्थापित किया। वे धर्मदाता थे, मार्ग-दाता थे, मोक्षकामी थे। कितने ही मुमुक्षुओं को उन्होंने प्रव्रज्या मंत्र प्रदान कर मोक्ष-मार्ग में स्थापित किया। वे आज नहीं हैं, परंतु उनकी संयम-स्नात शिक्षाएं आज भी समाज को नई राहें दिखा रही हैं। संयम-पुरुष को अमृत संयम वर्ष पर कोटि-कोटि नमन! **- प्रवर्तिनी साध्वी प्रतिभाकंवर**

मेरे अनुज गुरुभ्राता दक्षिण सूर्य प्रिय डॉ. श्री वरुण मुनि जी म.सा. के संयोजकत्व में श्रुताचार्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक प.पू. गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म.सा. का दीक्षा हीरक जयंती वर्ष (2024-25) विविध कल्याणकारी एवं लोकोपकारी अनुष्ठानों के साथ मनाया जा रहा है। हमारे आराध्य प्रवर्तक श्री अमर गुरुदेव का पूरा जीवन लोक मंगल हेतु समर्पित रहा। लाखों लोगों का उन्होंने मार्गदर्शन किया। मानव-कल्याण हेतु उन्होंने शताधिक संस्थाएं समाज को समर्पित की। उनकी साहित्यिक सेवाएं भी विलक्षण रही हैं। तनसा-मनसा-वाचा लोकमंगल में समर्पित आराध्य गुरुदेव को शत्-शत् नमन !
- उप प्रवर्तक पंकज मुनि

कोटि-कोटि आस्थाओं के समर्थ संबल श्रुताचार्य भगवन्, उत्तर भारतीय प्रवर्तक प.पू. गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म. सा. के पावन दीक्षा हीरक जयंती महापर्व पर आराध्य गुरुराज के चरण-सरोजों में शत्-शत् नमन !

आराध्य गुरुदेव का जीवन अगणित और अपरिमित महिमाओं का संगम-स्थल था। वे श्रुत-वारिधि थे। संयम-वारिधि थे। वात्सल्य वारिधि थे। तिन्नाणं-तारयाणं, बुद्धाणं बोयगाणं, मुताणं-मोयगाणं के पावन प्रतिमान थे। मेरे नयनों में, श्वास-श्वास में, हृदय की धड़कन धड़कन में, आत्मा के प्रदेश-प्रदेश में वे परम गुरुदेव अहर्निश रचे-बसे हैं। उनके स्वर्गारोहण के दशकाधिक वर्ष व्यतीत होने पर भी मैंने उन्हें एक पल के लिए भी अपने से अलग नहीं पाया! सच भी यही है कि सद्गुरु का आशीष कभी शिष्य को एकाकी नहीं रहने देता। सदैव एक ही कामना करता हूँ, और उस कामना से पुनः अपने तन, मन, आत्मा को भावित करता हूँ कि गुरुदेव के दर्शाए मार्ग पर यथाशक्ति द्रुत गति से आगे बढ़ता रहूँ। पावन पादाऽऽम्बुजों में नमन ! नमन !! नमन!!! **- डॉ. वरुण मुनि 'अमर शिष्य'**

सं. 9/वैयक्तिक कक्ष/2024 10.09.2024/N.P. राष्ट्रपति भवन को आपका दिनांक 21.08.2024 का पत्र मिला है जिसमें आपने माननीय राष्ट्रपति जी को गुरु अमर संयम अमृत महामहोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में 22 सितम्बर 2024 को श्री जैन स्थानक, राजाजीनगर, बैंगलोर, कर्नाटक में आमंत्रित किया है। आपके अनुरोध पर विचार किया गया, लेकिन इसे स्वीकार करना संभव नहीं हो सका है। माननीय राष्ट्रपति जी इस कार्यक्रम के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हैं। **- सादर, भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्याधिकारी, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली - 110 004**

एक बार सुकरात अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। उनकी स्त्री क्रोध वाली थी, उसे गुस्सा आया और कूड़े वाली बाल्टी उठाकर उन पर फेंकी। इस पर सुकरात बड़े प्रेम से बोले मैंने सुना था जो गरजते हैं वो बरसते नहीं, पर आज तो उल्टा ही देखने को मिला, जो गरजा बो बरसा भी। शिष्यों को बड़ा क्रोध आया कहा - 'ये स्त्री आपके लायक नहीं है। इसे निकाल दें।' सुकरात ने कहा - 'नहीं, यही मेरे लायक है, यह ठोक-ठोक कर देखती है कि मैं कहीं से कच्चा तो नहीं हूँ।'

सिद्धांत - ब्रह्मज्ञानी अपना भाव डालकर अच्छा देखता है। ❖❖

समय को जानो स्वयं को पहचानो

- साध्वी युगल निधि-कृपा जी म.सा.

'नो टाइम' की कॉल को डिस्कनेक्ट करो

एक चिन्तक ने किसी व्यक्ति से पूछा, यदि दोबारा मनुष्य जन्म मिले तो आप क्या करोगे? वह फौरन बोला, जो मैंने इस जन्म में किया है, उसमें कुछ परिवर्तन लाऊँगा इस जीवन में जो काम विलंब से शुरू किया है उसे शीघ्र करूँगा। मकान भव्य बनाऊँगा, व्यापार पहले से ही ऐसा करूँगा जिससे हानि न हो, मौज-शौक के लिए अधिक समय निकालूंगा, पत्नी अधिक सुन्दर पसंद करूँगा, इत्यादि।

स्पष्ट है, अवसर दोबारा मिलते ही मनुष्य पुनरावृति करता है। मौके का सदुपयोग कर जीवन को रूपांतरित करने वाले बहुत कम होते हैं। इसलिए श्री आचारांग सूत्र की घोषणा है, 'समय को जानो और स्वयं को पहचानो'।

जैन गणित में काल का सबसे सूक्ष्म नाम 'समय' है। आँख की पलक स्वाभाविक रूप से खुले और बंद हो उसमें असंख्यात समय बीत जाते हैं। असंख्यात समय की एक आवलिका बनती है एवं 5825 आवलिका का एक सेकण्ड होता है।

तात्पर्य यह है, समय की गति बड़ी तीव्र है। प्रकाश, शब्द एवं विद्युत से भी अधिक तेज गति से समय भागता है। शब्द और विद्युत को चाहे पकड़ लो किन्तु समय सबकी पकड़ से बाहर है। न बीता समय लौटता है और न आने वाला समय रूकता है। अतः वर्तमान को जानो क्योंकि जो वर्तमान समय का सम्मान करता है, समय उसे मूल्यावन बना देता है।

कल्पना करे, एक ऐसी बैंक है जो आपके अकाउण्ट में हर सबुह 86,400 रुपये क्रेडिट करती है। लेकिन अगले दिन वह आपके खाते में बैलेंस ट्रांसफर नहीं करती। क्योंकि वह बैंक हर शाम आपके द्वारा इस्तेमाल न किये गये पैसे अकाउण्ट से निकाल लेती है। ऐसी स्थिति में क्या आप खुद ही प्रतिदिन अपने अकाउंट से सारा पैसा नहीं निकाल लेंगे?

ठीक इसी भाँति हर इन्सान के पास टाइम की एक बैंक है जो हर सुबह हमें 86,400 सेकण्ड का समय क्रेडिट करती है। जिन सेकण्डों का सुप्रयोग हम नहीं कर पाते तो 'टाइम' उनको डिलिट कर देता है। फलतः हमारे अकाउण्ट में कोई बैलेंस नहीं बचता जिसका नुकसान हमें खुद भोगना पड़ता है। इस हानि से बचने हेतु सूत्रकार सिखावनी देते हैं, पंडित वही है जो क्षण के मूल्य को जाने और क्षण द्वारा शाश्वत की खोज कर उसे सार्थक करे। (देखे आचा. सूत्र 2/1/68)

आचारांग सूत्र में क्षण को द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से समझाया गया है। मनुष्य जन्म, स्वस्थ शरीर एवं सशक्त इन्द्रियाँ आदि की प्राप्ति द्रव्य क्षण है तो आर्य क्षेत्र एवं आर्य देश जहाँ तीर्थंकर परमात्मा एवं साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप तीर्थ विचरण करते हैं वह क्षेत्र क्षण है। वह समय जिसमें धर्म की साधना की जा सके काल क्षण है तो कर्मों के क्षयोपशम से शुभ भाव की प्राप्ति भाव क्षण है।

एक क्षण को भी जो व्यर्थ नहीं खोता वह समय को जीत लेता है। जो समय को नष्ट करता है वह स्वयं नष्ट हो जाता है। पश्चिमी दार्शनिक, इमर्सन का कथन है, '360 वर्ष में होने वाला कार्य साठ वर्ष में कर सका इसका राज मात्र इतना है, मैं एक समय भी व्यर्थ नहीं करता।

याद रखना, समय देवता का रथ मुक्त हाथों से सोना लुटाता हुआ, शीघ्रता से दौड़ रहा है। जो सजग है वे आलस्य और कठिनाइयों की दीवारें लांघकर भी समय के रथ पर सवार होते हैं तो अति शीघ्र अपने लक्ष्य को पा लेते हैं।

इसी कारण भगवान महावीर फरमाते हैं, क्षण भर का भी प्रमाद मत करो। प्रमाद अर्थात् समय का दुरूपयोग। जब तक शरीर बलवान है, पांच इन्द्रियाँ सशक्त हैं तब तक धर्म साधना में लगे रहो। यूँ भी सभी सुयोग एक साथ मिलना कठिन है। कभी स्वस्थ शरीर मिलता है तो आर्य क्षेत्र नहीं मिलता। कभी परिपूर्ण इन्द्रियाँ मिलती हैं तो दीर्घायु नहीं मिलती, कभी उत्तम कुल मिलता है तो समझ शक्ति नहीं मिलती। इसीलिए जीवन का एक-एक पल मूल्यवान है।

शास्त्रकार कहते हैं, सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव जो एकावतारी अर्थात् एक जन्म लेकर मोक्ष में जाने वाले हैं। वे पूर्व जन्म में जब साधु अवस्था में थे तब उन्हें सात लव (काल का नाप) जितना आयुष्य यदि और मिल जाता तो वे मोक्ष में

पहुँच जाते किन्तु अब उन्हें तेतीस सागरोपम तक देवगति में समय बिताना पड़ रहा है। इसीलिए उन्हें 'लवसत्तमा' भी कहा जाता है। एक बार बेला तप करने से जितने कर्मों की निर्जरा होती है मात्र उतनी निर्जरा करना उनका शेष रह गया था वर्ना वे मोक्ष में जाते।

सात लव का अर्थ समझाते हुए कहा है, एक बलिष्ठ पुरुष तेज शस्त्र (खुरपी) द्वारा चावल के नरम पौधों को जितने समय में उखाड़े उतना सात लव जितना है। मात्र इतना सा समय उन्हें साधना हेतु और मिल जाता तो वे सदा के लिए जन्म-मरण से मुक्त हो जाते।

सावधान! आप देखते हैं तीन घंटे पूरे होते ही परीक्षक उत्तर-पुस्तिका ले लेता है। यदि असफल परीक्षार्थी दुःखी होकर कहता है, एक पंक्ति लिखूँ इतना भी समय मुझे मिल जाता तो मैं फेल नहीं होता, परन्तु सोचो! तीन घंटे तक वह क्या कर रहा था? काल पूरा होते ही आयु की डोर कट जाएगी। अन्त समय में पछताना न पड़े अतः समय रहते अवसर को साध लो।

समय तो सबके पास चौबीस घंटे का ही है। न किसी अल्पज्ञ के पास तेईस घंटे का दिन है और न किसी महाप्रज्ञ के पास पच्चीस घंटे का दिन है। आज तक जिसने भी अपने पर शासन किया उसने बिना समय को जाने नहीं किया। जो समय को जानता है, वही स्वयं को पहचानता है।

एक बार भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल में संघर्ष छिड़ गया। सभी अपनी महत्ता का दावा भर रहे थे। आखिर निपटारे हेतु तीनों महाकाल के पास पहुँचे। भूतकाल ने अपनी महिमा का बखान करते हुए कहा, मैंने क्रान्तियों की आँधियाँ चलाई, न जाने कितनों के दिल बदल दिये और कितनों की बैसाखी का सहारा बना।

भविष्यकाल बोला, अगर मैं न होता लोग सुनहरे सपने कैसे संजोते? कल्पनाओं के भव्य महल कैसे बनाते? चिन्तन की लम्बी उड़ान कैसे भरते? वर्तमान काल बोला, चाहे मैं छोटा हूँ, पलजीवी हूँ किन्तु काम बड़े-बड़े करता हूँ। महाकाल ने तीनों की बातें सुनकर निर्देश दिया, आप तीनों अपनी प्रस्तुति करो।

यह सुन अतीत और अनागत मौन हो गए। क्योंकि अतीत का सिर नहीं और भविष्य के पैर नहीं तो वे न सोच सकते हैं और न कर सकते हैं। इसीलिए वर्तमान ने कहा मैं पूर्ण रूप से आपके सामने प्रस्तुत हूँ। मैं सब कुछ एक साथ करने में समर्थ हूँ। तब महाकाल ने निर्णय सुनाया, कुछ कर गुजरने का साहस केवल वर्तमान में होने से वह महत्वपूर्ण है। जो वर्तमान को पकड़ लेता है वह जन्म-मरण के महाफेरे को टाल सकता है।

आश्चर्य है, आज 'नो टाईम' की लाइलाज बीमारी के कीटाणु बड़ी तेजी से फैल रहे हैं। कुछ लोग बिना काम के व्यस्त हैं तो कुछ समय की परिधि में बंधे समय को तलाश रहे हैं। याद रहे, समय को व्यर्थ भी किया जा सकता है और सदुपयोग में भी लगाया जा सकता है, किन्तु जो पल बीत गया उसे लौटाने का कोई उपाय नहीं है।

खोई हुई धन संपदा को परिश्रम से दोबारा पाया जा सकता है। विस्तृत ज्ञान भी पुनरावर्तन से पुनः हासिल किया जा सकता है। अस्वस्थता को औषधि से पुनः लौटाया जा सकता है, परंतु समय को लौटाने का कोई उपाय नहीं है।

इसीलिए समय की सूई का संदेशा है, उठो, जागो! प्रमाद मत करो। जो समय को बोता है वह धर्म में टिका रहता है। जो समय को बोता है वह धर्म में टिका रहता है। जो समय को महत्व देता है समय भी उसका अंकन करता है। इसलिए जो समयज्ञ है वह सर्वज्ञ बनने की संभावना लिये हुए हैं।

पॉलिश

अमरीकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपनी सादगी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। वे थे भी बड़े सीधे-सच्चे। राष्ट्रपति होते हुए भी वे अपने छोटे-छोटे काम अपने हाथों से करने में प्रसन्नता महसूस करते थे। एक बार वह अपने जूतों पर पॉलिश कर रहे थे। संयोग से तभी एक अंग्रेज उनसे मिलने आया। उसने राष्ट्रपति को जूतों पर पॉलिश करते हुए देखा, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह अपने को रोक नहीं सका और पूछ बैठा - 'ओह आप अपने जूतों पर खुद पॉलिश करते हैं?' 'जी हाँ! लेकिन आप किसके जूतों पर करते हैं?' लिंकन ने तुरन्त कहा। ❖❖

धर्मवीर लोकाशाह का तथ्यात्मक जीवन

- डॉ. दिलीप धींग (साहित्य वारिधि)
(शोध प्रमुख : अभुषा फाउंडेशंस, चेन्नई)

1. परिवार :- माता : सुश्राविका गंगा बाई,
पिता : सुश्रावक हेमाशाह चौधरी (ओसवाल),
पत्नी : सुदर्शना (सुनंदा), पुत्र : पूर्णचंद्र (पूनमचंद)

2. जन्म :- स्थान : अरहट्टवाड़ा (गुजरात),
तिथि : कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम संवत् 1472
(सन् 1415)

3. लोकाशाह अथवा लोंकाशाह का पूर्व नाम लोकचन्द्र था। वे व्यसनमुक्त, अनासक्त, धर्मनिष्ठ, नीतिवान, व्रती, माता-पिता के आज्ञाकारी और अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे।

4. एकान्तप्रिय और वैराग्यवृत्ति वाले होने के बावजूद वे धर्म के संघीय स्वरूप को महत्त्व देते थे और धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते व सहयोग करते थे।

5. लोकाशाह व्यापार में अहिंसक मूल्यों के प्रति सजग रहते थे। उनका किसानों के साथ लेन-देन भी था। यदि दुष्काल या किसी कारण से किसानों की फसलें नष्ट हो जाती तो लोकाशाह स्थिति व परिस्थिति के अनुसार उनके कभी ब्याज तो कभी ऋण माफ कर देते थे। वे कभी भी मद्य, मांस जैसे निन्दित व्यापारों के लिए धन उपलब्ध नहीं करवाते थे।

6. लोकाशाह जब मात्र 23-24 वर्ष के थे, तब वर्षभर के अन्तराल में ही उनके माता और पिता का देहावसान हो गया। इससे उन्हें संसार की क्षणभंगुरता का तीव्र अहसास हुआ। इसके पश्चात् वे अपनी पत्नी और पुत्र के साथ अहमदाबाद में रहने लगे। अहमदाबाद में लोकाशाह ने जवाहरात का कार्य किया। वे रत्नों व मोतियों के कुशल पारखी थे।

7. अहमदाबाद नरेश मोहम्मदशाह ने लोकाशाह की तीक्ष्ण-बुद्धि, ईमानदारी, त्वरित निर्णय क्षमता तथा उनके मानवीय सद्गुणों से आकर्षित होकर उन्हें राज्य का कोषाधिकारी मनोनीत किया।

8. अहमदाबाद नरेश के सत्ता लोलुपी पुत्र कुतुबशाह ने उसके पिता को विष देकर मार डाला। इससे धर्मप्राण लोकाशाह का अध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ गया तथा उन्होंने राजकीय पद का त्याग कर दिया।

9. लोकाशाह की लिखावट बहुत सुन्दर, सुपाठय तथा आकर्षक थी। इससे प्रभावित होकर यति ज्ञानसुन्दर ने उनको आगम ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने का कार्य सौंपा।

10. प्रज्ञाशील लोकाशाह आगम-प्रतिलिपि का कार्य लगन से करने लगे। वे महज लिपिकार ही नहीं थे, इसलिए एक सजग स्वाध्यायी और गम्भीर अध्येता के रूप में आप्त-वचनों को हृदयांगम करने लगे।

11. मूल आगम दशवैकालिक-सूत्र का लिपि-कार्य करते समय उनकी तर्क-मनीषा आन्दोलित हो उठी। उन्हें एक उपाय सूझा - आगमों का पुनः पुनः स्वाध्याय करने के लिए दो प्रतियाँ तैयार करना - एक दिन में, दूसरी रात्रि में। एक प्रति वे अपने पास रख लेते।

12. एक बार ज्ञानसुन्दरजी ने लोकाशाह के घर से आगम की प्रतियाँ मँगवाई। उस समय लोकाशाह घर पर नहीं थे। उनकी भद्र भार्या ने पूछा - "दिन वाली दूँ या रात वाली?" इससे लोकाशाह से आगम-लेखन का कार्य ले लिया गया।

13. इस घटना से लोकाशाह की आगम-स्वाध्याय की रुचि तीव्रतर हो उठी। श्रावक-श्राविकाओं तथा साध्वियों को भी आगम रखने और पढ़ने का पूरा अधिकार होता है, इस बात को उन्होंने आगे बढ़ाया।

14. श्रुत और आचार की एकनिष्ठ आराधना से उनकी तेजस्विता प्रखर होती चली गई। धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर और सुविधाभोग की वृत्तियाँ देख उनका मन व्यथित हो गया। श्रमणाचार और श्रावकाचार में तेजी से पनप रहे स्वच्छन्दाचार को उन्होंने खुली चुनौती दी। उनका विरोध व्यक्ति या परम्परा से नहीं, विकृतियों से था।

15. चहुँओर लोकाशाह की चर्चा होने लगी। वे मैत्रीभाव से ओतप्रोत, सत्य के प्रति दृढ़, साधना और विचारों की ऊर्जा से भरे थे; इसलिए निर्भीक तथा निःशंक थे।

16. उनकी धर्म-क्रान्ति के शंखनाद से वातावरण बदलने लगा। वे निन्दा और प्रशंसा से परे रहकर धर्म-ध्वजा लिये

आगे बढ़ते रहे।

17. उस समय के जाने-माने श्रेष्ठी लखमसी भाई संघपति की हैसियत से लोकाशाह से शास्त्रार्थ करने के लिए प्रस्थित हुए। सत्य की सतत् साधना से आलोकित लोकाशाह के आभामण्डल में लखमसी भाई शास्त्र-चर्चा के उपरान्त लोकाशाह के समर्थक बन गये। इससे लोकाशाह के अभियान को और बल मिला।

18. उस समय अरहट्टवाड़ा, सिरोही, पाटण और सूरत के जैन संघ अहमदाबाद में थे। चारों संघों के सदस्यों ने लोकाशाह से धर्म और तत्त्व पर मुक्त चर्चा करने का विचार किया।

19. लोकाशाह शुष्क तार्किक नहीं थे; इसलिए उनकी बातों का गहरा असर होता था। चारों संघ लोकाशाह से न सिर्फ सहमत हुए, अपितु चारों संघ-प्रमुखों ने अनगार-धर्म अंगीकार करने की प्रबल इच्छा व्यक्त की; जिससे धर्म के रूढ़ि-मुक्त स्वरूप का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके। जबकि उस समय लोकाशाह स्वयं श्रावक ही थे।

20. चारों संघ-प्रमुखों के इस अद्भुत परिवर्तन से इकतालीस और व्यक्ति दीक्षा के लिए तैयार हो गये। चूंकि लोकाशाह स्वयं श्रावक थे, इसलिए दीक्षा के लिए ज्ञानजी मुनि को आमंत्रित किया गया। पैंतालीस व्यक्तियों ने एक साथ दीक्षा ले ली। यह घटना ऐतिहासिक, अपूर्व और प्रेरक है। चार संघ-प्रमुखों सहित 45 व्यक्तियों द्वारा एकाएक घरबार छोड़ देना तथा दीक्षा के लिए मुनिराज को आमंत्रित करना, सत्य के लिए सर्वस्व समर्पण और उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

21. आगमों पर आधारित लोकाशाह द्वारा लिखित दो कृतियों का उल्लेख मिलता है - (1) लुँकाना सद्दियाँ अट्ठावन बोल, तथा (2) लुँकानी हुण्डी तेंतीस बोल। लोकाशाह के तेरह प्रश्न भी बहुत चर्चित हुए।

22. विक्रम संवत् 1536 में वीर लोकाशाह ने भी जैन आर्हती दीक्षा अंगीकार कर ली। तब तक लाखों व्यक्ति उनके धर्मक्रान्ति अभियान से जुड़ चुके थे।

23. पंथवादियों और सुविधाभोगियों को धर्म का आडम्बर -विहीन वैज्ञानिक स्वरूप नहीं जँचा। वे लोकाशाह के विरुद्ध दुष्प्रचार करने लगे, पर सफल नहीं हुए। उन्होंने कायरता का रास्ता अपनाया। श्रमणवर लोकाशाह इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) से विहार कर अलवर पहुँचे। यहाँ किसी विधर्मी ने धर्मप्राण लोकाशाह को विषयुक्त आहार दे दिया। विषाक्त भोजन ग्रहण करने के बाद उन्हें अनहोनी का आभास हो गया। समता व क्षमाभाव को कायम रखते हुए तुरन्त संलेखना संथारा ग्रहण कर वे महाप्रयाण कर गये। यह घटना चैत्र शुक्ल 11, विक्रम संवत् 1546 की है।

24- जैन धर्म की स्थानकवासी परम्परा के पुनरुद्धारक /प्रवर्तक लोकाशाह ने विष पीकर भी विश्व को पीयूष बाँटा। उनका उत्सर्ग व्यर्थ नहीं गया। भारतीय संस्कृति व श्रमण संस्कृति के इतिहास व उत्कर्ष में अनेक नये प्रेरक अध्याय जुड़ते चले गये तथा जुड़ते जा रहे हैं।

25. लोकाशाह ने अपने अनुयायियों को सदैव मैत्री-पथ पर चलने की शिक्षा दी। एक प्रसंग अत्यन्त प्रेरक है। वि.सं. 1636 में लोकाशाह के अनुयायी देवजी ने तपागच्छ के प्रभावक आचार्य हीरविजयजी को अपने यहाँ आश्रय देकर मुगलों से उनकी रक्षा की।

26. अनेक मतभिन्नताओं के बावजूद लोकाशाह का जीवन बंधुत्व और समत्व से अनुप्राणित था। अशोभनीय शब्दों में निन्दा करने वालों तथा ईर्ष्यालुओं के प्रति भी उनके मन में लेशमात्र द्वेष और कटुता नहीं थी।

27. कुछ लोगों ने लोकाशाह के जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्यों और साक्ष्यों को धूमिल, विकृत या नष्ट करने का प्रयास किया। संभवतः इसीलिए लोकाशाह की जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, जन्म-कुल, गौत्र, श्रावक-जीवन, श्रमण-जीवन, स्वर्गवास-तिथि आदि के बारे में विविध/परिवर्तित जानकारियाँ मिलती हैं। कुछ मनीषियों और शोधार्थियों के द्वारा अनुसंधानों और प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर उनके जीवन के अधिकांश तथ्य सुस्थिर किये गये हैं। फिर भी नवीन शोध के द्वार हमेशा खुले रहते हैं।

28. श्रमण संस्कृति (जैन धर्म) में किसी नई सम्प्रदाय का प्रवर्तन प्रायः किसी श्रमण के नेतृत्व में होता आया है। लेकिन स्थानकवासी परम्परा का प्रवर्तन या पुनरुद्धार क्रांतधर्मी श्रावक लोकाशाह ने किया। इससे श्रावक और श्राविका का तीर्थ-स्वरूप मुखर और प्रखर हो उठा।

29. लोकाशाह ने ग्रंथालयों और पुस्तकालयों में उपेक्षित, जीर्ण-शीर्ण तथा दीमक से क्षतिग्रस्त आगमों की प्रतियों को

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
रजिस्टर्ड कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001
फोन नं. 011–23363729, 23365420, 23344380, ई–मेलः aissjc1906@gmail.com

चुनाव कार्यकाल वर्ष 2025–27
राष्ट्रीय चुनाव समिति

SHRI RAMESHCHAND JAIN "KAHNI" - **राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी**
H-32/94, SECTOR – 3,
ROHINI, NEW DELHI – 110 085
Mob.: 84700 18575

SHRI JAGDISH SINGH - **राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी**
FLAT NO. 003, TOWER-A2,
ANTRIKSH NATURE APARTMENT
PLOT NO. A-110, MAIN ROAD,
SECTOR - 52, NOIDA - 201 301
GAUTAM BUDDH NAGAR (U. P.)
MOB. : 98689 40586
E-MAIL : jagdishs63@gmail.com

SHRI ARUN KUMAR JAIN - **राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी**
82-A, VIDHYA NAGAR
BEHIND INOX THEATOR
INDORE - 452 001 (M. P.)
MOB. : 98260 11099
E-MAIL : arunkumarjain28@gmail.com

सहेजा। इस क्रम में उन्होंने बत्तीस आगमों की सुन्दर लिखावट में प्रतिलिपियाँ बनाईं, बनवाईं और सुरक्षित करवाईं। शास्त्र-सुरक्षा और शास्त्र-स्वाध्याय पर उन्होने बहुत जोर दिया। वे अपने समय के महान शास्त्रोद्धारक मनीषी थे।

30. आचार्य हस्तीमलजी प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास (चतुर्थ भाग) के अन्त में लोकाशाह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दो सौ से अधिक पृष्ठ समर्पित किये गये हैं। उन्होंने लोकाशाह को आचार्य देवर्द्धि क्षमाश्रमण (पाँचवीं सदी) के बाद का सर्वोच्च क्रियोद्धारक और धर्मोद्धारक बताया।

31. मरुधर-केसरी मुनि मिश्रीमलजी ने इतिहास-पुरुष लोकाशाह के जीवन पर 'धर्मवीर लोंकाशाह' पुस्तक लिखी। उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा को लोकाशाह जयन्ती आयोजन को व्यापक बनाने के सफल प्रयास किये। आचार्य घासीलालजी की प्रेरणा से भी लोकाशाह पर लम्बी काव्य-रचना हुई।

32. लोकाशाह को अत्यंत तेजस्वी बताते हुए उपाध्याय अमरमुनि ने लिखा कि उन्होंने जन-जन के अंदर नई चेतना जगाई। नई दृष्टि दी। गृहस्थ होते हुए भी वे संत की ऊँचाई पर पहुँचे। उन्होंने ग्वालियर के राजा को इतना प्रभावित किया कि राजा उनकी चरणरज लेकर गद्‌गद्‌ हो जाता था। इतने बड़े मनीषी, विद्वान थे लोकाशाह।

33. लोकाशाह की धर्मक्रांति को जीवराजजी, लवजीऋषि, धर्मदासजी, हरजीऋषि, धर्मसिंहजी प्रभृति मुनिवरों ने विशेष रूप से आगे बढ़ाया। इन्हीं श्रमणवरों की शिष्य-प्रशिष्य परम्पराओं को मिलाकर स्थानकवासी सम्प्रदाय बनी। सन् 1760 (वि.सं. 1817) में स्थानकवासी परम्परा में-से तेरापंथ सम्प्रदाय का उदय हुआ। ❖❖

माँ! मुझको महावीर बना दे

- अंकुर जैन, पीतमपुरा-दिल्ली

माँ! मुझको महावीर बना दे,
धीर वीर गंभीर बना दे ।। माँ! मुझको.......

सारे जग को गले लगाऊँ,
सबको अमृत पान कराऊँ,
भारत की तकदीर बना दे ।। माँ ...

सफल करूँगा ये जिन्दगानी,
लिखूँगा खुद अपनी कहानी,
ममता की जंजीर हटा दे ।। माँ ...

कभी नहीं आऊँ बंधन में,
जैसे हवाएँ नील गगन में,
कल-कल बहता नीर बना दे ।। माँ ...

कर्मों की सेना है भारी,
मैंने भी कर ली तैयारी,
तप की बस शमशीर[1] थमा दी ।। माँ ...

मति सन्मति माँ तू कर दे,
वर्धमान भव! ऐसा वर दे,
देवदूष्य एक चीर[2] दिला दे ।। माँ ...

राग-द्वेष के झौंके आए,
मन का कांटा हिल न पाए,
उडद मिले या खीर पिला दे ।। माँ ...

चण्डकौशिया कोई आए,
मुख से जहर उगलता जाए,
विष के बदले क्षीर[3] बना दे ।। माँ ...

जुबां हो शीरी[4] दिल में अमीरी,
आला फक्कड़ मस्त फकीरी,
खुद का ही जहाँगीर बना दे ।। माँ ...

तीन रत्न की करूँ कमाई,
मोक्षपुरी है मन को भायी,
वहीं कहीं जागीर दिल दे ।। माँ ...

मेरा भी कल्याण हो सके,
भगवत्ता का भान हो सके,
मुझको इतनी धीर बंधा दे ।। माँ ...

बचने को परीषह बाणों से,
संकल्पों के पाषाणों[5] से,
एक अटल प्राचीर[6] बना दे ।। माँ ...

दुनिया की सब टली व्यथाएँ,
तीर्थकरों की चली प्रथाएँ,
उसी फर्म में सीर[7] करा दे ।। माँ ...

प्रेम का बहता अविरल[8] झरना,
दया अहिंसा का लूँ शरणा,
करूणा की तस्वीर बना दे ।। माँ ...

ये संसार भयानक नदिया,
बहते-बहते बीती सदियाँ,
इस नदिया का तीर[9] दिला दे ।। माँ ...

15. शम[10] दम[11] यम[12] के पंछी चहके,
शुक्ल ध्यान की केसर महके,
प्यारा सा कश्मीर बना दे ।। माँ ...

1. तलवार	2. वस्त्र	3. दूध
4. मीठी	5. पत्थरों	6. किले की दीवार
7. हिस्सेदारी	8. लगातार	9. किनारा
10. शांति	11. संयम	12. नियम

प्रभु महावीर का गौरवशाली परिवार...

सांसारिक परिवार			आध्यात्मिक परिवार		
1.	माता	- देवानांदा, त्रिशला	1.	गणधर -	11
2.	पिता	- ऋषभदत्त, सिद्धार्थ	2.	गण -	9
3.	दादा	- राजा सर्वार्थ	3.	साधु -	14,000
4.	दादी	- श्रीमती	4.	साध्वी -	36,000
5.	नाना	- केकराजा	5.	श्रावक -	1,59,000
6.	मामा	- चेटक राजा	6.	श्राविका -	3,18,000
7.	चाचा	- सुपार्श्व	7.	केवल ज्ञानी (साधु) -	700
8.	चाची	- सुमित्रा	8.	केवल ज्ञानी (साध्वी)-	1,400
9.	भाई	- नन्दीवर्धन	9.	मनःपर्यव ज्ञानी -	500
10.	भाभी	- ज्येष्ठा	10.	अवधिज्ञानी -	1,300
11.	बहन	- सुदर्शना	11.	चौदहपूर्वी -	300
12.	बहनोई	- सुप्रभ	12.	वैक्रिय-लब्धि-धारी -	700
13.	पत्नी	- यशोदा	13.	वाद-लब्धि-धारी -	400
14.	ससुर	- समरवीर	14.	अनुत्तरौपपातिक मुनि -	800
15.	सास	- यशोदया	15.	अधिष्ठायक देव -	ब्रह्मशांति (मातंग)
16.	बेटी	- प्रियदर्शना	16.	अधिष्ठायिका देवी -	सिद्धायिका
17.	जमाई	- जमालि	17.	युगान्तकृत भूमि[1] -	तीसरी पीढ़ी
18.	दौहित्री	- शेषवती	18.	पर्ययान्तकृत भूमि[2] -	चार वर्ष

1. प्रभु की कितनी पीढ़ियाँ मोक्ष में गई, उसे युगान्तकृत भूमि कहते हैं।

2. प्रभु के केवलज्ञान के कितने समय बाद जीवों को मोक्ष में जाना प्रारंभ हुआ, उसे पर्यायान्तकृत भूमि कहते हैं।

❖❖

ज्ञानदेव

ज्ञानेश्वर के सन्यासी पिता ने गुरु की आज्ञा से गृहस्थ धर्म स्वीकार कर लिया। वे सन्यासी के पुत्र थे। वे अपने दो भाइयों निवृत्तिनाथ और सोपानदेव तथा छोटी बहन मुक्ता बाई के साथ आलंदी से चल कर पैठण आए। उन्हें शास्त्रज्ञ ब्राह्मणों से शुद्धिपत्र लेना था। एक दुष्ट ने उन्हें चिढ़ाने के लिए एक भैंसे को दिखा कर कहा - 'इस भैंसे का नाम भी ज्ञानदेव है।'

'अवश्य हो सकता है। उस भैंसे और हममें अंतर क्या है? नाम और रूप तो कल्पित हैं, दोनों में आत्मतत्व एक ही है। भेद की कल्पना ही अज्ञान है।' ज्ञानदेव बोले।

यह सुनकर उस दुष्ट ने भैंसे की पीठ पर चाबुक मारने शुरू कर दिए कि जब आत्मतत्व एक ही है, तो दोनों को समान पीड़ा होनी चाहिए। लेकिन आश्चर्य चाबुक तो पड़ रहे थे भैंसे पर, मार के निशान सचमुच उभर कर आ रहे थे ज्ञानेश्वर की पीठ पर। यह देखकर मूर्ख ज्ञानेश्वर के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगा। तब ज्ञानेश्वर ने कहा - 'तुम भी ज्ञानदेव ही हो, क्षमा कौन किसे करेगा? किसी ने किसी का अपराध किया हो तो क्षमा की बात आए लेकिन सब में तो एक ही प्रभु व्याप्त है।'

❖❖

निर्ग्रन्थ साधु - एक विश्लेषण

- डॉ. बी. रमेश गादिया जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)

जैन धर्म में पंच परमेष्ठि नवकार में पाँचवे पद में साधु-साध्वियों को नमस्कार किया गया है। साधु को श्रमण, निर्ग्रन्थ, संत, मुनि नामों से अभिहित किया है। निर्ग्रन्थ साधु के पाँच प्रकार बताए गए हैं और उनमें 27 गुण कहे गए हैं।

इस आलेख में पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ साधु का विश्लेषण किया जा रहा है।

प्रथम : पुलाक समान निर्ग्रन्थ साधु। इसमें धान और घास फूस का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले वर्ग के निर्ग्रन्थ साधु, घास फूस युक्त धान्य के समान होते है। ऐसे साधु में गुण थोड़े और दुर्गुण अधिक होते हैं। इसके दो भेद बताए गए हैं। पहले लब्धि पुलाक और दूसरे आसेवन पुलाक। लब्धि पुलाक साधु, तेजो लेश्या के धारक होतें और क्रोध अवस्था में संघ को अथवा व्यक्ति/परिवार को जला देते हैं। आसेवन पुलाक साधु, पाँच मूल गुण और दस उत्तर गुणों में दोष लगाते हैं।

द्वितीय : बकुश समान निर्ग्रन्थ साधु, धान में घास दूर किए हुए ऐसे साधु, जिनमें कचरा बहुत कम हो गया हो फिर भी धान्य की अपेक्षा कचरा अधिक है। इसके भी दो भेद हैं। प्रथम उपकरण बकुश दूसरे शरीर बकुश। आगम शास्त्रों में निर्धारित वस्त्र पात्र की बताई मर्यादा से अधिक उपकरण, समान, सामग्री आदि रखने वाले उपकरण बकुश कहलाते हैं। अपने शरीर की विभूषा करने वाले, बार-बार हाथ पैर धोने वाले शरीर बकुश कहलाते हैं। इनका चारित्र, सातिचार और निरतिचार दोनों प्रकार का होता है। इस श्रेणी के निर्ग्रन्थ साधु, कर्मों का क्षय करने में उद्यत बने रहते हैं।

तृतीय : कुशील निर्ग्रन्थ साधु, जैसे धान्य को अधिक साफ कर दिया गया। फिर भी धान और कचरा एक समान होते हैं। ऐसे निर्ग्रन्थ साधु दो प्रकार के बताए गए हैं। प्रथम - प्रतिसेवन कुशील और द्वितीय - कषाय कुशील। ऐसे निर्ग्रन्थ साधु निर्दोष संयम का पालन और यथा शक्ति, तप जप भी करते हैं। किंतु कभी इन्द्रियों के अधीन होकर सर्वज्ञ की आज्ञा में न्यूनाधिक प्रवृत्ति करते हैं। उनके ज्ञान दर्शन और चारित्र में अतिचार दोष लग जाएं तो प्रायश्चित कर शुद्धि कर लेते हैं। कषाय कुशील निर्ग्रन्थ साधु, में सज्जंवलन कषाय का उदय रहता है। इनमें सूक्ष्म लोभ विद्यमान रहता है। ये सहज में ज्ञान दर्शन और चारित्र में दोष नहीं लगाते हैं। सज्जंवलन कषाय के उदय होने पर पश्चाताप कर कषाय को उपशांत कर देते हैं।

चर्तुथ : निर्ग्रन्थ जैसे धान्य को साफ करने के पश्चात् अत्यल्प कंकर रह जाते हैं वैसे जिनकी आत्मशुद्धि में किंचित्मात्र त्रुटि रह जाती है वे साधु निर्ग्रन्थ कहलाते हैं। ये निर्ग्रन्थ दो प्रकार के होते हैं। पहले - उपशांत कषाय और द्वितीय क्षीण कषाय। जो मुनि अपने मूल गुण और उत्तर मूल गुण और उत्तर गुणों में थोड़ा भी दोष नहीं लगाते। जिन्होंने अपने लोभ कषाय का उपशांत कर दिया और जिन्होंने कषाय को क्षीण कर दिया ऐसे साधु निर्ग्रन्थ कहलाते है। वे साधु सर्वथा ग्रंथि रहित होकर अपने वीतराग स्वभाव में रमण करते हैं।

पाँचवें : स्नातक निर्ग्रन्थ। ऐसे मुनि सयोग केवली और अयोग केवली ऐसे दो प्रकार के होते हैं। ऐसे वीतरागी साधु निश्चय रूप से सिद्ध बुद्ध और मुक्त अवस्था को प्राप्त कर मोक्षगामी होते हैं।

जैन आगम शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि पाँचवे आरे में दूसरे प्रकार के यानी बकुश और तीसरे प्रकार के यानी कुशील, निर्ग्रन्थ साधु ही होते हैं। अब इन पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ साधु का विश्लेषण जाकर एक दो बातों पर विचार विमर्श करेंगे।

जैन शास्त्र में आगे कहा है कि किसी साधु की क्रिया में कदाचित हीनता दिखाई दे तो उत्तेजित होकर राग द्वेष की वृद्धि नहीं करनी चाहिए। आजकल ऐसी स्थिति में कुछेक साधु और श्रावक वर्ग में बहुत ऊहापोह मच जाती है। अपने से संघ/संप्रदाय के साधुओं को 100% सच्चा हीरा और बाकी सभी को झूठा साबित करने की होड़ सी लगी है। विद्वानों द्वारा कहा गया है कि

"कोई साधु उच्च श्रेणी का होता है और कोई उतरती श्रेणी का। कोई ज्ञान गुण में बड़ा होता है, कोई क्रिया गुण में, कोई तप में और कोई वैयावृत्य में। फिर भी साधु सभी कहलाते हैं।"

आज कोई भी संघ/संप्रदाय के साधु अथवा श्रवण यह नहीं कह सकता कि उनके मुनि, जैन आगम शास्त्रों में बताएं अनुसार सच्चे निर्ग्रन्थ (चौथे प्रकार के) साधु है। आज आवश्यकता है कि जैन आगम शास्त्रों का गहराई से निष्पक्ष होकर स्वाध्याय और अनुपेक्षा करें।

अपने संघ/संप्रदाय/गच्छ के व्यामोह में अंध भक्त बनने से क्रोध आदि कषायों की अभिवृद्धि होती है और राग-द्वेष बढ़ता है। जबकि साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं का सर्वप्रथम उद्देश्य राग-द्वेष को क्षय करना होता है। हम अपने संघ सम्प्रदाय गच्छ के प्रति निष्ठावान रहे, लेकिन दूसरे को मिथ्या या गलत ठहराना कहां उचित है? **बुज्जं बुज्जं किं ण बुज्जही?**

आलेख में जिनशासन विपरीत परूपना हुई तो मिच्छामि दुक्कडम्। किसी का दिल दुखा तो हार्दिक क्षमायाचना!

❖❖

सब के लिए हो, दीपावली खुशियों वाली

- अरूण कुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

कितना अजीब लगता है जब एक तरफ इंडिया यानी अभिजात्य वर्ग हो और दूसरी ओर हो भारत अर्थात गरीब आम आदमी। जब एक ओर लोगों के घरों में रोशनी और दीप मालिका जगमग हो और दूसरी ओर लोगों के पास तन ढ़कने के लिए कपड़े भी नहीं हो। यह आज के समाज का कटु सत्य है। यह सर्वव्यापी पीड़ा है, यह मानव समाज का, मानव सभ्यता का एक कलंक भी है और हमारी सामाजिक व्यवस्था पर एक करारा तमाचा भी है। हम लगातार उन्नति कर रहे हैं, विकास कर रहे हैं मगर आँकड़ों के बीच सत्य छुपाया नही जा सकता।

हम भारतीय संस्कृति में त्यौहार के लिए मशहूर हैं, बड़े पैमाने पर खर्चा और फिजूलखर्ची के लिए भी मशहूर हैं। धन लक्ष्मी का त्यौहार दीपावली नजदीक है, मगर ऐसे वक्त में जब हर भारतीय परिवार अपनी पूरी क्षमता के साथ उत्साह से जगमग दीपावली मनाएगा तब ऐसे भी कई लोग हैं जो मजबूर हैं जिनके पास तन ढ़कने को पूरे कपड़े भी नहीं हैं।

इस दीपावली पर हमारी कोशिश है कि हम उन लोगों के साथ दीपावली मनाएं जिनके पास तन ढ़कने के लिए कपड़े भी नहीं हैं। हम अपनी खुशियाँ उन लोगों के साथ बांटकर सार्थक दीपावली मनाएंगे। जियो और जीने दो के महावीर के संदेश को सर्वोपरि रखते हुए, वसुधैव कुटुंबकम् की भारतीय सांस्कृतिक विरासत को चरितार्थ करते हुए। इसके लिए श्वेतांबर जैन समाज भारत भर में एक व्यापक अभियान चलाए हुए है। हम अपनी अलमारी में बंद पड़े कपड़े उन लोगों को देकर उनको भी खुशी देंगे, जो कपड़े हम अलमारियों में ढ़ेर लगाते हैं, उन कपड़ों को गरीब लोगो के लिए निकालेंगे ताकि वे लोग भी हमारे साथ खुशी-खुशी दिपावली मना सकें। इसमें जैन समाज सक्रिय रूप से भाग ले रहा है और अन्य सामान्य जन से भी आग्रह करता है कि यदि वे भी इसमें सहयोग करना चाहें तो स्वागत है।

आपको अपने स्थानीय निकटस्थ जैन स्थानक में सम्पर्क करना है, जहां इस योजना के लिए सहयोगी टीम आपको मदद करेगी, मार्गदर्शन देगी और सम्पूर्ण सहयोग करेगी।

यदि आप यह सौभाग्य उठाना चाहते हैं तो कृपया हमसे संपर्क करें। इस संदेश को ज्यादा से ज्यादा शेयर करके आप भी इसका पुण्य लाभ लें।

इन्दौर के लिए :-

गौतम जैन : 94253 18005
हेमंत जैन : 62650 16629
प्रदीप जैन : 99777 66633
नरेन्द्र बाफनाः 94254 00161

सबका व्यवहार, सबका त्यौहार

❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 अक्टूबर से 20 नवम्बर 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

युवा प्रणेता श्री महेशमुनिजी म.सा.	26 अक्टूबर
आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	30 अक्टूबर
आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.	05 नवम्बर
आचार्य श्री मानजी स्वामी म.सा.	06 नवम्बर
खद्दरधारी श्री गणेशीलालजी म.सा.	07 नवम्बर
जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.	14 नवम्बर
धर्म परायण वीर लोकाशाह जी म.सा.	15 नवम्बर
उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	14 नवम्बर
घोर तपस्वी श्री मिश्रीमलजी म.सा.	15 नवम्बर
आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.	16 नवम्बर
आचार्य श्री जयमलजी म.सा.	17 नवम्बर
आचार्य श्री सोहनलालजी म.सा.	18 नवम्बर

मंगलमय दीक्षा दिवस

मेवाड़ प्रवर्तक श्री मदनमुनिजी म.सा.	25 अक्टूबर
आचार्य श्री धर्मदासजी म.सा.	06 नवम्बर
आचार्य श्री धन्नाजी म.सा.	06 नवम्बर
आचार्य श्री मानजी स्वामी म.सा.	06 नवम्बर

पुण्य स्मृति दिवस

श्री फतेहचंदजी म.सा.	23 अक्टूबर
युवा प्रज्ञ श्री अमरेशमुनिजी म.सा.	25 अक्टूबर
आचार्य श्री मानजी स्वामी म.सा.	06 नवम्बर
वचनसिद्ध तपस्वी श्री वक्तावरमलजी म.सा.	08 नवम्बर
श्री प्रतापमलजी म.सा.	14 नवम्बर
उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	13 अक्टूबर

अक्टूबर 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति अक्टूबर माह में सेवा प्रदान की है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अक्टूबर माह में विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 1,55,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 54,000 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च की है। इस प्रकार कुल 2,09,000 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में अक्टूबर माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

समाचार प्रकाश

शिववाणी से लाभान्वित हो रहे हैं श्रद्धालु

चातुर्मास काल में श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तपस्या का क्रम जारी

सूरत (गुजरात) : श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का आध्यात्मिक वर्षावास आत्म-भवन अवध संग्रीला बलेश्वर, सूरत (गुजरात) में गतिमान है। ध्यान स्वाध्याय प्रवचन प्रतिदिन होते हैं। श्रावक-श्राविका भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों से आकर दर्शन जिनवाणी का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। दिनांक 24 अगस्त 2024 को आचार्यश्रीजी के दर्शन हेतु हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ के हाईकोर्ट न्यायाधीश (जज) श्री आलोक जैन उपस्थित हुए आचार्यश्रीजी की आत्म-ध्यान-साधना से वे प्रभावित है। वर्ष 2004 के चण्डीगढ़ चातुर्मास से ही उन्होंने साधना को अपने जीवन का अंग बनाया। आचार्यश्री से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कहा कि इस साधना के द्वारा न्याय करते हुए कभी भी मन विचलित नहीं होता तथा न्याय करने में विशेष सम्बल मिलता है। इस अवसर पर पाली (राजस्थान), इन्दौर, मेरठ, दिल्ली, बैंगलोर, मुंबई के गुरु भक्त भी दर्शन हेतु उपस्थित हुए।

दिनांक 27 अगस्त को मुंबई से पधारे 125 श्रद्धालुओं ने शिवाचार्यश्रीजी के दर्शन का लाभ लिया। दिनांक 29 अगस्त को सूरत से वनिता हितेश कोठारी ने सिद्धितप के अंतर्गत छठे उपवास का प्रत्याख्यान लिया। शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों ने शॉल, माला व स्मृति चिन्ह द्वारा उनका सम्मान किया।

तप-त्याग श्रद्धा भावना उत्साह-उल्लास के साथ आचार्य भगवन के सान्निध्य में मनाये गये पर्वाधिराज पर्व पर्युशण। श्रावक-श्राविकाओं का उमड़ता सैलाब को देखकर शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों ने पहले से ही अवध संगरीला के कम्युनिटी हॉल में प्रवचन और ध्यान की सुंदर व्यवस्था की। प्रतिदिन सुबह प्रार्थना और ध्यान मधुर गायक श्री निशांतमुनिजी म.सा. ने अपनी सुमधुर आवाज में करवाकर दिन की शुरूआत की। श्रीमद् अन्तकृतदशांग सूत्र का मूल वाचन श्री शमितमुनिजी म.सा. ने किया तो हिन्दी विवेचन प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. ने आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ किया।

महापर्व पर्युषण की आराधना हेतु रायपुर, सूरत, दिल्ली, मुंबई, नाशिक, जलगांव, लुधियाना, छत्तीसगढ़, जम्मू आदि अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित हुए साथ ही सूरत के उपनगरों से अनेक भाई-बहनों ने महापर्व की आराधना का लाभ लिया। दिनांक 9 सितम्बर को आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में अवध संगरीला से श्रीमती श्वेता गौतम मेहता ने 9 उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान किये। इस अवसर पर शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों ने शॉल, माला व स्मृति चिन्ह द्वारा उनका सम्मान किया। दिनांक 11 सितम्बर को आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में सूरत की चाहत माण्डोत, लुधियाना की रेणू जैन ने आठ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया, तपस्वियों का शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों ने शॉल, माला व स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान किया। दिनांक 12 सितम्बर को आचार्यश्रीजी के पैतृक स्थल मलोट मण्डी से किरण जैन, श्री अभिषेक जैन आदि दर्शनार्थ उपस्थित हुए। लुधियाना, चेन्नई, कोयम्बटूर आदि क्षेत्रों से भी अनेक श्रावक-श्राविका दर्शन हेतु उपस्थित हुए।

दिनांक 13 सितम्बर को लुधियाना से कंगारू इण्डस्ट्रीज के उद्योगपति विश्वजी नीलम जी विशेष रूप से दर्शनार्थ उपस्थित हुए। पाण्डेसरा (सूरत), गुड़गांव, संगरिया, भीलवाड़ा, कोटा आदि अनेक जगहों से श्रावक-श्राविका दर्शन हेतु उपस्थित हुए। दिनांक 15 सितम्बर को श्री देवीलाल भटेवरा ने 15 दिन के उपवास का प्रत्याख्यान किया। जिनका शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से शॉल, माल, स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर पाण्डेसरा (सूरत) से 40 महिला मण्डल का संघ गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुआ।

आत्म शुक्ल शिवाचार्य प्रकाशोत्सव श्री लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम के प्रांगण में श्रद्धा भक्ति उत्साह उमंग के साथ सम्पन्न हुआ। आत्म-शुक्ल शिवाचार्य प्रकाशोत्सव 18 सितम्बर को लब्धि धाम में भारत भर से आए हजारों श्रद्धालु के मध्य श्रद्धा भक्ति के साथ मनाया गया। श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. के मंगलाचरण के साथ प्रकाशोत्सव का शुभारंभ हुआ। परम् सेवा भावी श्री शौर्यमुनिजी विद्याभिलाषी श्री शाश्वतमुनिजी, प्रवचन प्रभाकर श्री शमितमुनिजी, युवा मनीषी मधुर गायक श्री शुभममुनिजी म.सा. आदि ने आज के पावन अवसर पर अपने आराध्य गुरुदेव के पावन प्रकाशोत्सव पर हृदय के उद्गार भजन एवं प्रवचनों के माध्यम से व्यक्त किये।

आचार्य भगवन ने उपस्थित विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए फरमाया कि आज का यह पावन दिवस जिसमें मैं तो निमित्त मात्र हूँ। पूरे भारत वर्ष के लोगों का प्रेम, सद्भावना को मैं देख रहा हूँ। इस व्यक्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। अनंत बार व्यक्ति ने जन्म लिया है, परंतु उसने कोई लक्ष्य तय नहीं किया कि मुझे कहां जाना है। बचपन से एक प्यास थी कि मुझे महावीर की साधना मिल जाए, इसलिए घर-परिवार छोड़ा दीक्षा ली, डी.लिट की उपाधि ली, किताबें लिखी, चातुर्मास किये जो केवल व्यक्तित्व विकास का पोषण लगा अब व्यक्तित्व से अस्तित्व में आना यह सार्थकता है। जन्मदिन मनाना कोई विषेश बात नहीं होती विषेश बात है अपनी आत्मा को जानना।

दिनांक 19 सितम्बर को चेन्नई से वैरागन सुश्री दीपिका जैन आचार्यश्रीजी के दर्शन हेतु उपस्थित हुई। आचार्यश्रीजी ने वैरागन बहन को साहित्य एवं मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। ज्ञातव्य है कि वैरागन बहन की चेन्नई में 11 अक्टूबर को युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. एवं साध्वी श्री राजमतिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में दीक्षा सम्पन्न हुई। दिनांक 21 सितम्बर को अवध संगरीला निवासी श्री अनिल मेहता ने 31 दिन के उपवास का प्रत्याख्यान किया। मासखमण तप पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों द्वारा प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं माला द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। उनकी धर्मसहायिका श्रीमती चन्दा मेहता ने 36 एकासन का प्रत्याख्यान किया। श्री अनिलजी मेहता ने अपने जीवन का यह दूसरा मासखमण सम्पन्न किया है दोनों ही मासखमण आचार्यश्रीजी के सान्निध्य में सम्पन्न किये हैं।

दिनांक 22 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध हड्डी रोग विषेषज्ञ डॉ. राजीवराय चौधरी आचार्य डॉ. शिवमुनिजी म.सा. के दर्शन हेतु उपस्थित हुए। उनका शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से शॉल, माला, प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान किया। इस अवसर पर डबवाली (पंजाब) में महासाध्वी श्री वीरकान्ताजी म.सा. की निश्राय में 17 नवम्बर को होने वाली दीक्षा की आज्ञा हेतु वैरागन खुशी मेहता उपस्थित हुई एवं अपनी भावनाएं व्यक्त की। खुशी मेहता का तिलक एवं साहित्य भेंट कर सम्मान किया। निरंतर अनेक श्रीसंघ आचार्य भगवन का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आत्म-भवन अवध संगरीला पहुंच रहे हैं।

गुरु अमर संयम अमृत वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित विश्व शांति जप एवं गुरु गुणगान महोत्सव का भव्य आयोजन

योग्य विद्वान, कवि और लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए गुरु अमर - डॉ. वरुण मुनि

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ राजाजीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में स्वर्ण संयम आराधक श्री वीरेंद्र मुनि जी, उप प्रवर्तक श्री पंकज मुनि जी, मुनि सौम्यप्रभविजय जी, दक्षिण सूर्य डॉ. श्री वरुण मुनि जी, मधुर गायक श्री रुपेश मुनि जी, महासती श्री सुधाकँवर जी, महासती डॉ. दर्शनप्रभा जी, महासती श्री विपुलदर्शना जी, महासती श्री चौतन्यश्री जी, महासती श्री तृप्तिलीनाश्री जी आदि ठाणा एवं कृष्णगिरि तीर्थ शक्ति पीठाधीश्वर डॉ. वसंतविजय जी महाराज के पावन सान्निध्य में गुरु अमर संयम अमृत वर्ष का त्रि दिवसीय आयोजन गुरु गुणगान द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर के अति विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह अध्यक्ष महेंद्रजी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंदमलजी छल्लाणी,

राज्यसभा सांसद लहरसिंह जी सिरोया, विजयनगर क्षेत्र के विधायक एवं कर्नाटक सरकार के पूर्व मंत्री एम. कृष्णप्पा जी व अन्य उपस्थित रहे।

गुरु गुणगान समारोह की शुरुआत श्री रूपेश मुनि जी द्वारा नवकार महामंत्र जाप एवं गुरु आरती से हुई। स्वर्ण संयम आराधक श्री वीरेंद्र मुनि जी ने नवकार महामंत्र द्वारा मंगलाचरण किया और आचार्य आत्म-शुक्ल-शिव जन्मोत्सव पर गुरु की महिमा को प्रकाशित किया। समस्त चारित्र आत्माओं ने आत्माचार्य की ज्ञान साधना, प्रवर्तक श्री शुक्लचंद जी म.सा. की चारित्र साधना एवं श्रुताचार्य प्रवर्तक गुरु अमर मुनि जी की श्रुत साधना को रेखांकित किया। साध्वी श्री सुयशा जी, साध्वी श्री चौतन्य श्री, साध्वी श्री विपुल दर्शना जी, साध्वी डॉ. श्री दर्शन प्रभा जी, साध्वी श्री सुधाकँवर जी, मुनि सौम्यप्रभविजय जी, डॉ. वरुण मुनि जी, श्री वीरेंद्र मुनि जी एवं कृष्णगिरि तीर्थ शक्ति पीठाधीश्वर डॉ. वसंतविजय जी महाराज ने गुरु अमर के जीवन चारित्र एवं उनके सद्गुणों का गुणगान किया। गुरु अमर ने मात्र ग्यारह वर्ष की उम्र में हिन्दी, संस्कृत और जैन धर्म का अध्ययन प्रारंभ कर दिया और पंद्रह वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण कर ली। आचार्य आत्माराम जी महाराज के आशीर्वाद से गुरु पद्म के सान्निध्य में गुरु अमर ने भारतीय दर्शनों व धर्मों का गहरा अध्ययन किया। आप योग्य विद्वान कवि और लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए। आपकी वाणी तो मधुर थी ही आपकी प्रवचन शैली भी बड़ी ज्ञानप्रद और रोचक थी। आपने साहित्य के क्षेत्र में भी महान कार्य किए।

गुरु पद्म के सान्निध्य में गुरु अमर ने ज्ञान साधना आराधना को व्यवस्थित एवं विकसित किया। ऐसे महान संतरत्न जिनके हृदय में विशालता और जीवन में निर्मलता थी। ऐसे संत गुरु अमर का आशीर्वाद सदैव हम सभी पर बरसता रहे। इस अवसर पर नवकारसी एवं गौतमप्रसादी के लाभार्थी संतोषबाई चेतन कुमार रश्मि रेदासनी, दरबार उद्घाटन के लाभार्थी किशनलाल अभय खाबिया, सांझी के लाभार्थी धीरज कुमार नीरज कुमार नाहर परिवार, भक्तिगीत प्रतियोगिता के लाभार्थी सरोजादेवी उमेशचंद बोहरा परिवार, टी शर्ट लाभार्थी सुरेश जैन हनी कुमार जैन परिवार, भक्ति संध्या के लाभार्थी महेंद्र जैन कमलेश जैन परिवार, राजस्थान पत्रिका विज्ञापन के लाभार्थी उत्तमचंद पदमचंद नीतेश रातड़िया परिवार, ध्वजारोहण के लाभार्थी प्रकाशचंद प्रसन्नचंद भलगट, डाक टिकट विमोचन लाभार्थी प्रकाशचंद अमित कुमार चाणोदिया परिवार, आयंबिल तप के लाभार्थी अमरचंद गौतमचंद गांधी परिवार रहे। सभी लाभार्थियों एवं संघ-संस्थाओं के पदाधिकारियों का, अतिथियों का अभिनंदन श्रीसंघ की ओर से किया गया।

इस अवसर पर बैंगलोर एवं बाहर नगरों के सभी संघ, संस्थाओं तथा जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्री लहरसिंह जी सिरोया, जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन, सुरेखा जी प्रकाश जी कटारिया, रामनिवास जी जैन, भागचंद जी गुगलिया ने अपने भाव रखे। राष्ट्रीय महिला महामंत्री आरती जी बुरड़ ने भक्तिगीत प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम घोषित किए। पहले पाँच विजेताओं को संघ की ओर से पुरस्कृत किया गया।

अध्यक्ष प्रकाशचंद जी चाणोदिया ने सभी का स्वागत किया। उपस्थित संत-सतीवृंद की सान्निध्यता के लिये संघ मंत्री नेमीचंद जी दलाल ने कृतज्ञता ज्ञापित की एवं उपस्थित गणमान्य एवं सभी महानुभावों का उपाध्यक्ष रोशनलाल जी नाहर, सहमंत्री राकेश जी दलाल, कोषाध्यक्ष प्रसन्न जी भलगट ने आभार व्यक्त किया। संघ के समस्त कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित रहे। ज्ञानचंद जी लोढ़ा एवं टीम ने आवास-निवास और प्यारेलाल जी टपरावत एवं टीम सदस्यों का अतिथियों की सेवा में विशेष सहयोग रहा। श्री त्रिशला महिला मंडल, श्री त्रिशला बहु मंडल, राजाजीनगर युवा, ब्राह्मी कन्या मंडल, जिनेश्वर युवा सदस्यों का भी पूर्ण सहयोग इस आयोजन में रहा। संचालन संघ महामंत्री नेमीचंद जी दलाल ने किया।

प्रेषक : अशोक जैन

भारतीय भाषाओं की जननी है प्राकृत भाषा

प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने का स्वागत : श्रमण डॉ पुष्पेंद्र

उदयपुर (राजस्थान) : भारत सरकार ने प्राचीन भाषा प्राकृत को शास्त्रीय (क्लासिकल) भाषा का दर्जा प्रदान करने की स्वीकृति प्रदान की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्री मंडल ने गुरूवार को प्राकृत सहित पाँच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने की स्वीकृति दी है। जैन समाज, प्राकृत प्रेमियों और प्राकृत सेवियों ने सरकार के इस निर्णय का अभिनंदन किया है।

श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र ने बताया कि जैन समाज और प्राकृत प्रेमी लंबे समय से प्राकृत को शास्त्रीय भाषा की मान्यता की मांग कर रहे थे। प्राकृत में शास्त्रीय भाषा की सारी विशेषताएँ पूरी तरह से विद्यमान हैं। जैन समाज में प्राकृत भाषा का शिक्षण और प्राकृत साहित्य का स्वाध्याय आम बात है, इससे जैन धर्म के विपुल साहित्यिक विरासत की सुरक्षा सुनिश्चित होगी क्यूँकि प्राकृत भाषा जैन संस्कृति की आधार स्तंभ है, प्राकृत भाषा जैन धर्म-दर्शन और आगम की मूल भाषा है। यही तो महावीर की वाणी है जो लोक भाषा प्राकृत में गुम्फित है, रचित है और प्रवाहित है। भारतीय भाषाओं की जननी है प्राकृत भाषा, क्यूँकि प्राकृत का इतिहास सर्वाधिक प्राचीन रहा है।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व छह भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिल चुका था-तमिल, संस्कृत, तेलुगु, मलयालम, कन्नड और ओडिया। अब प्राकृत के साथ ही पालि, असमिया, बांग्ला, मराठी मिलाकर कुल ग्यारह शास्त्रीय भाषाएं हो गई हैं। शास्त्रीय भाषाओं का एक लंबा इतिहास और समृद्ध, अद्वितीय और विशिष्ट साहित्यिक विरासत होती है। प्राकृत के प्रारंभिक ग्रंथ 2 हजार से ढ़ाई हजार वर्ष प्राचीन हैं। इनमें भारत की सांस्कृतिक विरासत का खजाना है।

ज्ञातव्य हो कि 2022 में रोहतक (हरियाणा) में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय प्राकृत संगोष्ठी में भी प्राकृत मनीषी डॉ. दिलीप धींग ने प्राकृत को शास्त्रीय भाषा की मान्यता का प्रस्ताव रखा था, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था।

स्कूली शिक्षा में राजस्थान में लागू है प्राकृत भाषा : उल्लेखनीय है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान द्वारा कला संकल्प के अंतर्गत पूर्व में संचालित प्राकृत भाषा वैकल्पिक विषय को शैक्षणिक सत्र 2023-24 से अतिरिक्त विषय के रूप में भी सम्मिलित करने का निर्णय किया है। बोर्ड सचिव मेधना चौधरी के आदेश के अनुसार कक्षा 11 एवं 12 कला संकाय के अंतर्गत लिये जाने वाले तीन वैकल्पिक विषयों के साथ ही विद्यार्थी अब चौथे अतिरिक्त वैकल्पिक विषय के रूप में अध्ययन कर सकेंगे। स्कूली शिक्षा के स्तर पर प्राकृत भाषा को अतिरिक्त विषय के रूप में लागू करने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य है।

प्राकृत भाषा सीखने से क्या लाभ होगा? : अंतराष्ट्रीय प्राकृत शोध केन्द्र के पूर्व निदेशक डॉ. दिलीप धींग के अनुसार शोधकर्ताओं को अब प्राकृत में अध्ययन करने में सुगमता रहेगी क्यूँकि देश के किसी भी विश्वविद्यालय में अब प्राकृत भाषा का अध्ययन करवाया जाएगा जिससे प्राकृत जानने वालों की संख्या में इजाफा होगा, लोकतंत्र में सारी योजनाएं संख्या के आधार पर होती है और सरकार प्राकृत के विकास पर और अधिक ध्यान देगी। तीर्थंकरों की वाणी प्राकृत सीखने से श्रद्धालु को ठीक से समझ पाएंगे, हमारी विरासत, आगम ग्रंथों की ओर लोगों का ध्यान जाएगा, इनके अनुवाद और पठन-पाठन पर शोध-परक काम होगा।

प्रेषक : श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

एक गधे के ऊपर मालिक ने चीनी लादी। रास्ते में नदी पड़ी। गधा उसमें बैठ गया, उठा तो बोझ हल्का लगा। गधा खुश हो गया। अगली बार मालिक ने रुई रखी। फिर गधा नदी में बैठ गया, लेकिन अब की बार बोझा बढ़ गया।

सिद्धांत - सदैव एक ही रास्ता काम नहीं देता। ❖❖

प्रशान्त विहार श्रीसंघ के तत्वावधान में रत्न-त्रय महोत्सव का भव्य आयोजन सम्पन्न
दीक्षा एवं तप अनुमोदना का भव्य स्वरूप चहुँ ओर दृष्टिगोचर हुआ

दिल्ली : 6 अक्टूबर 2024 को उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनि जी म., प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनि जी म., स्वर्ण संयम आराधिका श्री रमेशकुमारी जी म. के सान्निध्य में रत्न-त्रय महोत्सव का भव्य आयोजन प्रशान्त विहार श्रीसंघ के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर संत-सतीवृन्द में हेमकुल दिवाकर गुरुदेव श्री ऋषभमुनि जी म., प्रज्ञा महर्षि श्री उपेन्द्र मुनि जी म. 'शास्त्री', उ. भा. प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनि जी म. के शिष्य श्री विकास मुनि जी म., उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री ओमप्रभा जी म., लोगस्स साधिका, प्रवचन भास्कर महासाध्वी श्री सन्तोष कुमारी जी म, सरलमना महासाध्वी श्री सतेन्द्र प्रभा जी म., शासन दीपिका साध्वी श्री समता जी म आदि ठाणा की मंगलमय उपस्थिति ने इस आयोजन को समग्रता प्रदान की।

इस अवसर पर उपस्थित संत-सतीवृन्द द्वारा स्वर्ण संयम आराधिका, दिव्य साधिका उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी श्री रमेश कुमारी जी म. की दीक्षा जयन्ती, लोगस्स साधिका महासाध्वी श्री सन्तोष कुमारी जी म. द्वारा 82 दिवसीय आयम्बिल तप तथा साध्वीद्वय श्री शानवी जी म. व साध्वी श्री सीयल जी म. द्वारा व्रतों का मासखमण करने पर जहाँ उनका गुणानुवाद किया गया वहीं कार्यक्रम का शुभारम्भ 21 दिन से चल रहे श्री घण्टाकर्ण स्तोत्र के चौमुखा जाप के समापन के साथ किया गया।

इस अवसर पर समारोह अध्यक्ष श्री सुभाष जी जैन 'पानीपत', स्वागताध्यक्ष श्री धनेश जी जैन 'अध्यक्ष-श्री जैन श्रमण संस्कृति केन्द्र', ध्वजारोहणकर्ता श्रीमती सुदर्शन जी जैन 'गुरुग्राम' तथा गौतम प्रसादी लाभार्थी श्री मोहनलाल जी जैन 'पिनाना' परिवार रहा। इस अवसर पर अनेक दरबारों के अनावरण से समारोह को उत्कृष्टता की प्राप्ति हुई। इस आयोजन में मधुरिम भक्ति संगीत की प्रस्तुति इन्दौर से पधारे श्री मयूर जी जैन, श्रीमती चारु-मानसी जी जैन (दिल्ली) द्वारा दी गई।

रत्न त्रय महोत्सव में उपस्थित सामाजिक महानुभावों में जैन महासंघ दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश आनन्द प्रकाश जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व रा. उपाध्यक्ष श्री रमेश जी जैन 'काहनी', श्रावक समिति के रा. महामंत्री श्री मुन्नालाल जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस रा. उपाध्यक्ष श्री सुरेश कुमार जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामनिवास जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल जी जैन, जैन महासंघ मंत्री श्री प्रवीण जी जैन, जैन महासंघ जोन सं. -4 अध्यक्ष श्री दयाराम जी जैन, श्री राजकुमार जी जैन 'चिड़ाना', अशोक विहार श्रीसंघ अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र जी जैन व महामंत्री श्री पद्म पटवा जी, प्रचार-प्रसार मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश श्री सहदेव जी जैन, जैन नगर मेरठ श्रीसंघ महामंत्री श्री मनीष जी जैन, श्री सम्पतराज जी चोरड़िया, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्ष श्री दिनेश जी जैन 'रिण्ढाणा', जैन कॉन्फ्रेंस रा. महिला उपाध्यक्षा श्रीमती सन्तोष जी जैन एवं राष्ट्रीय मंत्री श्रीमती वीणा जी जैन, जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश महिला अध्यक्षा श्रीमती शीला जी जैन की उपस्थिति की उपस्थिति रही।

इस आयोजन को गौरवपूर्ण क्षण प्रदान किए प्रशान्त विहार श्रीसंघ अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद जी जैन, संरक्षक सर्वश्री श्यामलाल जी जैन, मोहनलाल जी जैन 'पिनाना', रामकुमार जी जैन, उपाध्यक्ष सर्वश्री अनन्तराम जी जैन, सुशील जी जैन, नरेन्द्र कुमार जी जैन, विनोद जी जैन, मंत्री श्री विजय जी जैन, खाद्य मंत्री श्री रामभगत जी जैन, श्री शिखरचन्द जी जैन, श्री प्रेमचन्द जी जैन (खरकपुनिया), स्वाध्यायी श्री नरेश जी जैन, श्री राकेश जी जैन 'देहरा', श्री दीपक जी जैन (खरकपुनिया), श्री सचिन जी जैन 'सीख' एवं ब्राह्मी सुन्दरी युवती मंडल की बहनों आदि के समर्पित सहयोग द्वारा आयोजन की गुण-गरिमा में वृद्धि हुई। कार्यक्रम का सुन्दर एवं व्यवस्थित संचालन युवा हृदय सम्राट् श्री जितेन्द्र जी जैन (महामंत्री, प्रशान्त विहार श्रीसंघ) द्वारा किया गया।

प्रेषक जितेन्द्र जैन, महामंत्री, प्रशान्त विहार श्रीसंघ

लोकसभा अध्यक्ष श्रीमान् ओम बिरला जी के द्वारा श्रीमान् रमणलालजी लुंकड जैन को भारत जैन समाज रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया

मुंबई (महाराष्ट्र) : भारत जैन महामंडल द्वारा आयोजित जैन समाज रत्न अलंकरण सम्मान समारोह में जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्रीमान् रमणलालजी लुंकड जैन को लोकसभा अध्यक्ष श्रीमान् ओम बिरला जी द्वारा भारत जैन समाज रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। कार्यक्रम में देश के सम्माननीय महानुभावों की भारी उपस्थिति देखने को मिली।

सूर्यदत्ता एजुकेशन फाउंडेशन द्वारा प्रस्तुत बंसी रत्न वेलफेयर ट्रस्ट की ओर से आदरणीय श्रीमान् रमणलालजी लुंकड जैन एवं आशा देवी लुंकड़ जैन को आदर्श माता-पिता के पद से सम्मानित किया। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठजनों की उपस्थिति रही। डॉक्टर रघुनाथ माशेल के हाथों यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

जीतो पुणे चैप्टर द्वारा सोशल सर्विस सामाजिक पुरस्कार, पुणे के मानव सेवा, गौसेवा, स्थानक निर्माण के दाता, अनेक सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं में उच्च पदों पर अपनी सेवाएं दे रहे पुणे निवासी दानवीर भामाशाह, समाज भूषण श्री रमणलालजी कपूरचंदजी लुंकड जैन को उत्कृत सामाजिक सेवा पुरस्कार महाराष्ट्र के कैबिनेट उद्योग मंत्री श्री उदयजी सांमत के हाथों प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में पुणे, मुंबई के जाने-माने उद्योगपतियों, नेतागण, विधायक, श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

श्रीमान् लुंकडजी को प्रदान किये उपरोक्त पुरस्कारों से संपूर्ण जैन कॉन्फ्रेंस परिवार में हर्ष की लहर व्याप्त है, सारा समाज गद-गद है। जैन कॉन्फ्रेंस श्री लुंकडजी को बधाई प्रेषित करते हुए अपनी अनुमोदना प्रदान करती है।

बंगा जैन समाज ने मनाया लोगस्स दिवस एवं तप अभिनंदन समारोह

बंगा (पंजाब) : श्रुत वरिधि जैन भारती परम पूज्य महासाध्वी श्री मीना जी म.सा. की सुशिष्या हरफनमौला महासाध्वी श्री समर्थश्री जी म., परम विचक्षण महासाध्वी श्री समबुद्धश्री जी म.सा., परम सेवाभावी महासाध्वी श्री साधिका जी म. आदि ठाणे-3 जी के पावन सान्निध्य में लोगस्स दिवस तप अभिनन्दन एवं तप की मेहंदी समारोह बड़े ही हर्षोल्लास एवं श्रद्धा भक्ति के साथ मनाया गया।

सभा का आगाज लोगस्स पाठ के उच्चारण से हुआ। साध्वी जी ने लोगस्स की महिमा का वर्णन किया और कहा कि इस स्तोत्र में 24 तीर्थंकरों का वर्णन एवं उनके गुणों की प्रशंसा की गयी है। महासाध्वी जी ने कहा की तपस्या की जिनशासन में बहुत ही ऊंचा दर्जा दिया हैं। जैन सभा बंगा के सेक्रेटरी युवा श्रेष्ठी रोहित जैन ने बताया की श्रीमती अमिता जैन ने व्रतों का एवं पूनम जैन ने एकाशन का मासखमण कर आत्म कल्याण किया और समाज को गौरवान्वित कर दिया। उन्होंने कहा की अमिता जैन जी का 11वाँ मासखमण है। बंगा में तपस्या की जोरदार वर्षा हो रही है। रौनक तपस्या के खूब ठाठ लगे हुए हैं। छोटे से क्षेत्र में तपस्या के 7 मासखमण हो गए हैं। रसनेन्द्रिय को जीतना बड़ा कठिन है, लेकिन अपने इन्द्रिय और मन को काबू करके जब कोई तपस्या में जुड़ जाता है तो हमारा मन उस तपस्वी की अनुमोदना करने के लिए लालायित हो जाता है। बंगा समाज द्वारा तपस्वी रत्नों का बहुमन किया गया। श्रीमती अंजू जैन राधिका जैन द्वारा एक नाटिका के माध्यम से तप की महिमा बताई। श्रीमती अमिता जैन के तप की मेहंदी का आगाज किया गया। पूरा हॉल भगवान महावीर के जयगोष से गूँज रहा था। श्रीमति किरण जैन, सरिता जैन, राधिका जैन, युक्ति जैन ने भजन के माध्यम से अपने भाव सभा में रखें। गौतम प्रसादी एवं प्रभावना का लाभ पुष्पलता जैन अश्वनी जैन के परिवार ने लिया।

प्रेषक : रोहित जैन

नो की तपस्या का बहुमान किया गया

राजसमंद (राजस्थान) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ 'संस्था', कांकरोली के महावीर भवन में चातुर्मासार्थ प्रवचन प्रभाविका, परम विदुषी, महासती श्री एषणा जी म.सा. एवं अध्ययनशीला श्री आर्या जी महारासा आदि ठाणा के द्वारा भगवान महावीर स्वामी की गाथा प्रवचन में प्रतिदिन सुनाई जा रही है। श्री चंदनबाला बालिका मंडल की मंत्री मनाली बोल्या ने बताया कि आपश्री के सान्निध्य में विगत लगभग दो माह में एकासन, दया, आयंबिल, उपवास, बेला, तेला, अठाई, नो एवम् मास खमण की अनेकों तपस्याएं हुई है। हाल ही में श्रीमती अनिता संजय बोल्या की नो की तपस्या का महासती जी के सान्निध्य में श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। प्रेमलता चंडालिया, सुशीला बोल्या, बंशी बोल्या, सरोज बापना, लक्ष्मी बोल्या एवम् संजय बोल्या ने तेला, बेला, उपवास एवम् एकासन किया। तपस्वी श्रीमती अनिता संजय बोल्या का सम्मान किया। तपस्वी के सम्मान में मनाली बोल्या, सरोज बापना तथा लक्ष्मी बोल्या ने तपस्या पर गीतिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर सैकड़ो की संख्या में धर्मनिष्ठ श्रावक, श्राविकाए उपस्थित थे। संचालन सुधीर पगारिया ने किया। **प्रेषक : मनाली बोल्या**

जैन साधु-साध्वियाँ और स्वास्थ्य

बैंगलोर (कर्नाटक) : जैन निर्ग्रन्थ भगवंत दीक्षा लेकर भिक्षा (गोचरी) से ही अपना जीवन यापन करने है। पहले जमाने में साधु-साध्वियों को निर्दोष और स्वास्थ्यवर्धक आहार, पानी मिल जाता था, लेकिन आजकल उनको मिर्च मसाला और तला भुना आहार मिलता है। और विडंबना यह है कि मुनिराज अपने लिए बनाया आहार पानी न तो ग्रहण करते हैं और न ही बनाने का आदेश देते हैं। जो जैसा आहार पानी मिलता है उन्हें लेना पड़ता है। इस कारण बहुत से साधु-साध्वियाँ, अस्वस्थ हो जाते हैं।

हमारे निर्ग्रन्थ भगवंत स्वस्थ और निरोगी रहें इसलिए जैन योग-ध्यान-साधना केंद्र द्वारा ग्यारह दिवसीय निःशुल्क कार्यशाला (प्रतिदिन एक घंटे) आयोजित करने की योजना है। चातुर्मास पश्चात उनके लिए कार्यशाला - बैंगलोर के शांति नगर स्थित जैन उपाश्रय और शूले स्थित स्थानक भवन में आयोजित होंगी। इसमें सरल विधि से जैन काया क्लेश तप (योगासन), श्वासोच्छवास (प्राणायाम) के माध्यम से उपचार किया जाएगा। संत-सतियो के जैन आगम शास्त्रों के अनुसार निर्दोष संयम मर्यादाओं का अनुपालन करते हुए अभ्यास सिखाया जाएगा।

(Verious disease : Asthma, B.P., Colostrol, diabetes, Knee & Spine & Neck Pain, Respiratory & Digestive & Urinary System etc.)

विभिन्न रोग जैसे अस्थमा, बी.पी., कोलोस्ट्रोल, शुगर, घुटने-कमर-गर्दन-दर्द का दर्द, श्वसन-पाचन-विसर्जन तंत्र, आदि शारीरिक एवं मानसिक तनाव आदि का सम्यक उपचार जापानी-झाण झुआण और चाइनीज-ताई ची की विधि बताई जाएगी। आपके ग्रुप में किसी संत-सतियों को और मुमुक्षु वैरागी भाई बहनों को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा। विशेष जानकारी के लिए जैन योग ध्यान-साधना केंद्र के निर्देशक सह प्रशिक्षक - डॉ. बी. रमेश गादिया जैन से (मोबाइल नं 90360 05151) संपर्क कर सकते है। प्रेषक : बी. रमेश गादिया जैन

शांतिनगर बैंगलोर श्रीसंघ में अब तक की सबसे बड़ी तपस्या सम्पन्न

प्रखर वक्ता श्री राजेश मुनि जी म.सा. ठाणा „ के सान्निध्य में धर्मोद्योत

बैंगलोर (कर्नाटक) : 20 सितम्बर को श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (रजि.) शांतिनगर, बैंगलोर के श्रीमती भीस्वीबाई पूनमचंदजी तुणावत जैन स्थानक भवन में इस वर्ष सन् 2024 में श्रीसंघ के पुण्योदय से पंजाब की स्थानकवासी सम्प्रदाय के उत्तर भारतीय महान् संत संघ शास्ता पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शनलालजी म.सा. के सुशिष्य गुरु मया-मदन-सुदर्शन संघ के मूर्धन्य संत जिनशासन गौरव, धर्म प्रभावक प्रखर वक्ता पूज्य गुरुदेव श्री राजेश मुनि जी म.सा.

'श्रमण' तथा सेवाभावी विद्याभिलाषी श्री ऋषभमुनिजी म.सा. ठाणा 2 का यशस्वी तप-त्याग प्रधान आध्यात्मिक आदर्श चातुर्मास हुआ। दिनांक 17 जुलाई को भव्य चातुर्मास प्रवेश एवं दिनांक 20 जुलाई से चातुर्मास शुभारंभ भी तप-त्याग, नवकार जाप, तेले की लड़ी से हुआ।

सर्वप्रथम शांतिनगर में नौ उपवास की दीर्घ तपस्या श्रद्धेय श्री ऋषभ मुनि जी म.सा. ने की है। आदर्श तपस्वी श्राविका श्रीमती नन्दादेवी मुथा ने शांतिनगर संघ में बैंगलोर के इस चातुर्मास में अब तक की सबसे बड़ी 60 उपवास की सुदीर्घ तपस्या सानन्द सम्पन्न की है। पूज्य मुनिश्री के पुरुषार्थ से अनेक तपस्याओं की श्रृंखला में 16 उपवास की तपस्या दो जनों ने, 15 की तपस्या एक सज्जन ने, 11 की तपस्या 5 जनों ने, नी की तपस्या 6 जनों ने, अठाई की तपस्या 25 जनों ने, पंचोले की तपस्या 3 जनों ने, तेले की तपस्या 85 जनों ने, बेले की तपस्या 70 जनों ने, उपवास, एकासना व आयंबिल तो अनगिनत संख्या में तथा बेआसने भी अनेक जनों ने किए है। दया तप की साधना 70 जनों द्वारा की गई है। अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप दिनांक 15 सितम्बर तक स्थानक भवन में रहा, अब यह जाप घर-घर में समस्त श्रीसंघ द्वारा चातुर्मास समाप्ति तक रहेगा। दिनांक 20 जुलाई से प्रारंभ तेले की लड़ी भी निरन्तर चल रही है जो चातुर्मास समाप्ति तक चलेगी। हजारों की संख्या में सामायिक साधना हुई है। गौतम तप एक, छठ्ठम-अठ्ठ तप 5 तथा सिद्धि तप भी हुए है। अनेक पूज्य महान संतों व गुरुदेवों का जन्म, दीक्षा, स्मृति, गुणगान दिवस भी अपूर्व तप-त्याग से मनाया गया। पर्युषण महापर्व का ठाठ भी अच्छा रहा। प्रतिक्रमण में जनता उमड़ पड़ी। कई जनों ने ज्ञात अज्ञात गुप्त तप भी किए है। पूज्य मुनिश्री का घर-घर जाकर अलख जगाने का पुरुषार्थ काबिले तारीफ रहा। यह बैंगलोर का आड़म्बर रहित एक आदर्श चातुर्मास हुआ है।

प्रेषक : छगनमल लुणावत-संघ मंत्री

तीर्थंकर पार्श्वनाथ पर जारी होगा डाक टिकट

उदयपुर (राजस्थान) : जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ के 2900वें जन्मोत्सव और 2800वें निर्वाणोत्सव उत्सव वर्ष के अवसर पर भारत सरकार द्वारा स्मारक डाक टिकट जारी किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर से भाजपा सांसद बृजमोहन अग्रवाल के अनुरोध पर केंद्रीय संचार एवं उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिनांक 11 सितंबर 2024 को पत्र के माध्यम से यह जानकारी दी। उल्लेखनीय है कि जैन समाज ने कुछ समय पहले केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समक्ष तीर्थंकर पार्श्वनाथ पर स्मारक डाक टिकट जारी करने की मांग रखी थी।

श्रमण डॉ पुष्पेंद्र ने बताया कि तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जीवन अहिंसा और करुणा का आदर्श माना जाता है। 70 वर्ष पर्यंत सम्पूर्ण भारत में अहिंसा का ध्वज लहराकर प्राणी मात्र को जागृत व प्रबुद्ध किया। अंधविश्वासों, कुरीतियों व कुटील जड़ताओं को समाप्त करके सम्यग्दर्शन के दीप घर-घर में प्रज्वलित करते हुए अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह का मार्ग दिखाया है, उन पर डाक टिकट जारी होना समस्त जैन समाज के लिए हर्ष और गौरव की बात है।

ज्ञातव्य हो कि आगामी 25 दिसम्बर 2024 (पौष कृष्णा दसम) को तीर्थंकर भगवान श्री पार्श्वनाथ का 2900वाँ **जन्म कल्याणक महोत्सव** पूरे देश में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि सरकार द्वारा जैन धर्म पर पहला डाक टिकट 6 मई 1935 को जारी किया गया था, जिस पर कलकत्ता के शीतलनाथ जैन मंदिर का चित्र अंकित था। यह मंदिर 1868 ई. में बना था और अपनी दीवारों और छत पर दर्पणों और मीनाकारी के कलात्मक काम के लिए प्रसिद्ध है (डाक टिकट-2)। यह 1-114 आना का टिकट, राजा गॉर्ज वी के शासनकाल की रजत जयंती के उपलक्ष्य में जारी किए गए मंदिरों और तीर्थ स्थलों के चार टिकटों के सेट का हिस्सा था।

प्रेषक : श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

!! श्री महावीराय नमः !!

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल

(पूर्णतया वातानुकूलित)

सहर्ष आपको सूचित किया जा रहा है कि जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन, नई दिल्ली में नव - निर्मित

भामाशाह श्रीमान रसिकलाल माणिकचन्द जी धारीवाल सांस्कृतिक हॉल (पूर्णतया वातानुकूलित)

शुभ विवाह, जन्म दिवस आदि पारिवारिक एवं अन्य आयोजनों के लिए उपलब्ध है।

सामाजिक संस्थाएँ, श्रीसंघ व Corporate Houses आदि भी धार्मिक, सामाजिक व सेमिनार आदि कार्यक्रमों के लिए सम्पर्क कर सकते हैं ।

कार्यक्रम आयोजन हेतु उपलब्ध सुविधायें :-

- नई दिल्ली के शालीन, आदर्श वातावरण के बीच **4500 Sq. Ft.** क्षेत्रफल में निर्मित।
- पूर्णतया सुसज्जित, वातानुकूलित व सुविधापूर्ण परिसर।
- कार पार्किंग की सुव्यवस्थित सुविधा उपलब्ध।
- हॉल की बुकिंग के साथ 2 वातानुकूलित कमरे उपलब्ध कराए जाएंगे।
- पूर्णतया सुरक्षित व पारिवारिक माहौल की अनुभूति ।
- भोजन आदि के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध ।

सहयोग राशि :-

24 घंटे की बुकिंग के लिए 61000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : रात्रि 12:00 बजे से अगले दिन रात्रि 12:00 बजे तक), दूसरे दिन के लिए विशेष छूट।

8 घंटे की बुकिंग के लिए 41000/- रुपये की सहयोग राशि
(समय : प्रातः 6 बजे से दोपहर 2 बजे तक तथा सायं 4 बजे से रात्रि 11 बजे तक)

-: ध्यानार्थ :-

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों व प्रान्तीय अध्यक्षों की अनुशंसा पर धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों हेतु विशेष छूट प्रदान की जाएगी ।

जैन कॉन्फ्रेंस सदस्य 20 प्रतिशत तक की छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

स्थानकवासी जैन समाज के सामान्य परिवार भी छूट का लाभ उठा सकते हैं ।

-: विशेष :-

जैन भवन परिसर में स्थित जैन भोजनशाला में नाश्ता, शुद्ध सात्विक (लहसुन, प्याज़ व जिमीकंद रहित) भोजन के अलावा चाय, कॉफी, पानी व स्नैक्स आदि उपलब्ध।

जैन भवन में लगभग 30 ए. सी. कमरे उपलब्ध ।

!! अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र !!

व्हाट्सएप्प नम्बर : 9019731906   लैण्डलाइन नम्बर : 011 - 23363729 / 23365420

Email.: aissjc1906@gmail.com

* नियम व शर्तें लागू

!! कृष्णा ग्राफिक्स - 9717360488 !!

पुणे : प्रवर्तक पूज्य श्री प्रकाश मुनि जी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन सेवा लाभ लेते वेय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनचंदजी सिंघवी आदि महानुभाव।

दिल्ली : दिव्यसाधिका उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री रमेश कुमारी जी म. की दीक्षा जयन्ती के अवसर पर प्रशान्त विहार में आयोजित रत्नत्रय महोत्सव में उपस्थित गणमान्यजन।

पुणे - लोकसभा अध्यक्ष व स्थानीय प्रतिष्ठित महानुभाव के कर - कमलों से जैन कॉन्फ्रेस के विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमणलालजी सा. लुंकड को " जैन समाजरत्न " अलंकरण से सुशोभित किया गया।

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन के जन्मदिन पर उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का अभिनन्दन करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमलजी छल्लाणी, चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल, श्री दिनेशजी भलगट, श्री जसवंतजी जैन श्री दिलीपजी खिंवसरा, श्री जे.पी.जी ललवाणी जैन, श्रीमती नीरू जी, श्री गौतम जी आदि तथा इस अवसर पर जैन भवन गोलमार्केट मे वृक्षारोपण भी किया गया।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा

जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित